प्रकाशकः—छोगमल कोचर, प्रेसिडन्ट श्री जैन नव-
युवक मित्रमंडल, मु० लोहावट (मारवाड.)

मुद्रक—लक्ष्मण भाऊराव कोकाटे, 'हनुमान' प्रेस,
३००, सदाशिव पेठ, पुणें.

॥ प्रस्तावना ॥



प्यारे पाठकों ।

प्रतिक्रमणमूलसूत्रकी लम्बी चोडी प्रस्तावना लिखनेकी आवश्यकता नहीं हे कारण प्रतिक्रमणसूत्र सदैव श्याम सुबह नित्य करनेयोग्य क्रिया है यानि धर्मजिज्ञासु धर्मपर श्रद्धा रखनेवाले सम्यक्त्व या व्रतधारी महानुभावोंको प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिये । शास्त्रकारोंने फरमाया है कि भगवान् आदीश्वर और वीरप्रभुके शासनमें साधु साध्वी श्रावक और श्राविकाओंको व्रतप्रत्याख्यानमें दोष लगनेका संभव है जहां दोषका संभव हे वहां प्रतिक्रमणकी परमावश्यकता हे दोषलगनेपर प्रतिक्रमण न किया जाय तो आराधिक हो नहीं सक्ता हे जो जीव आराधिक नहीं होता है उसे मोक्षकी प्राप्ति कभी नहीं होती है अतएव मोक्षार्थी भव्यजीवोंको प्रतिक्रमण करनेकी परमावश्यकता है ।

। प्रतिक्रमण के बारेमें एक रोगीका दृष्टान्त ।

एक न्यायचन्द्रसेठ शरिर आरोग्यता के कारण सदैव पथ्यहीका सेवन करता था किसी समय मोहप्रेरित लोलुपतासे अपथ्य सेवन करनेसे शरिरमें रोगोत्पत्ति हो गई तब सेठजीने सोचा कि किसी विद्वान् परमार्थी निर्लोभी डॉक्टरसे इलाज कराना ठीक हे साथमे यहभी सोचा कि डॉक्टरके साथ कंपौंडरकिभी तलास करने कि जरूरी हे क्योंकि वहभी अच्छा परमार्थी निर्लोभी दवाइ देनेमें कुशल होना चाहिये. तलास करनेपर सेठजी को खातरी हो गइ कि अमुक डॉक्टर या कंपोंडर हमारे रोगकी चिकित्सा अवश्य कर सकेगा ।

उपनय-न्यायचन्द्रसेठके स्थान भव्यात्मा हे पथ्यसेवनके स्थान ज्ञानादि आचारका पालन करना हे मोहकि प्रेरणासे या लोलुपताके कारण पाके अपथ्य सेवनके स्थान अतिचार लगा हो बेमारीके स्थानपर कर्मबन्ध है। डॉक्टरके स्थान तीर्थंकर भगवान् हे कोंडरके स्थान आचार्यादि गुरुमहाराज है. वह सदैव परमार्थी निर्लोभी कर्म रोगोंके चिकित्साकरनेमें कुशल है ऐसी खातरी हो गइ तब ।

(१) वैमार सेठजीने सोचा कि डॉक्टरसाहिवके पास जाना तो है किन्तु वैमारीका कारण पुछेगा तो क्या कहेंगे वास्ते पेस्तर शरुमें वैमारीके कारण याद कर लेना ठीक है तव एकाग्रचित्त हो ध्यानकर क्रमशः सब कुपथ्योंको याद कर लिया।

उपनय—समायिकाध्ययनमें ध्यानकर अतिचारोंकि आठ गाथाओद्वारा पांचाचारोंमें जो जो अतिचार लगा था उसको ध्यानमें याद कर लिया।

(२) वैमारसेठजी डॉक्टरकेपास जाके डॉक्टरसाहिवकी स्तुति गुणकीर्तन आदरसत्कार वहुमानकर बोले कि आपने वहुतसे वैमारियोंके रोग मिटाया है इत्यादि।

उपनय—दूसरें अध्ययनमें लोगस्सद्वारा चौवीस तीर्थकरोंके गुण स्तवनादि वहुमान किया।

(३) वैमारसेठने सोचा कि डॉक्टरसाहिव तो दवाइयोंका नकशा दे देंगे किन्तु दवाइ देना कंपौंडरके आधिन है वास्ते कंपौंडरसाहेवकाभी आदर सत्कार विनय करना जरूरी है कि वह अच्छी दवाइ देकर हमारे वैमारी को मिटावेगा इस गरजसे कंपौंडरकाभी विनय किया।

उपनय—तीसरे अध्ययनमें आचार्य—गुरुमहाराजको द्वादशावर्तन देकर दो वार वन्दन किया। तव कंपौंडरसाहिवने पुछा कि सेठजी आपके वैमारीका हाल वतलाइये।

(४) वैमारसेठजीने इष्टस्मरण सावद्ययोगनिग्रहकर मंगलपूर्वक अपनी वैमारीके हाल क्रमशः वतलाया कि इसइसकारणोंसे अमुक अमुक अपथ्य सेवन करनेसे हमारे शरिरमें इतने अंश वैमारी पैदा हुइ है अपने हाल सुना के कंपौंडरको और वन्दनकर वोला कि में किसी प्रकारसे आपका अविनय कीया हो तो क्षमा करें क्यों कि में वाल अज्ञानी हुं परन्तु आप सव हाल जानते है वास्ते क्षमा करो अन्तमें और स्तुति करते हुवे सेठजीने कहा कि आप सब लोग परोपकारी हि होते है वास्ते मे पुनः पुनः नम्रतापूर्वक निवेदन करता हुं कि आप ऐसी दवाइ दें कि शीघ्रतासे मे आरोग्य वनु।

उपनय—चतुर्थ अध्ययनमें दिनभरमें जो लगे हुवे आतिचार प्रगटरूपमें मंगलपूर्वक 'वंदित्तु' से क्रमशः सुनाके दो वार वन्दन दे अब्भुट्ठिओमि

खमाके दो वार वन्दन दे " आयरिय उवज्झाय " तक कहा बाद में अतिचार विशुद्धि की कोसीस करी।

(५) वेमारसेठके नम्रतापर कंपौंडरसाहिबने दीर्घदृष्टिसे विचार करके अच्छी उमदा दवाइ कि पुड किये वान्ध दी, सेठजी उस दवाइको लेके कंपौंडरसाहिबकी औरभी तारीफ विनयभक्ति कर रवाना होने लगे ।

उपनय—पांचवे अध्ययनमें ज्ञान दर्शन चारित्रविशुद्धिनिमित्त चार लोगस्सरूपी दवाइका ग्रहण कर ध्यान किया ।

(६) वेमारसेठजी रवाना होने लगे इतनेमें कंपौंडरसाहिब बोले कि सेठजी आपने दवाइ तो ली है किन्तु इस दवाइके सेवनमें कुछ दिन परहज रखना होगा सेठजीने कहा कि बहुत ठीक है अमुक टाइमके लिये मैं अवश्य परहज रखुंगा—

उपनय—छट्टे अध्ययनमें परहजके लिये प्रत्याख्यान है सो नमुकारसी पोरसी इत्यादि प्रत्याख्यान किया ।

सेठजीकी बेमारी मिटानेमें मोख्य कारण डॉक्टरसाहिबका था वास्ते सेठजी डॉक्टरसाहिबकी वीर्योल्हासके साथ स्तुति करी.

उपनय—"नमोस्तु वर्द्धमानाय" तथा "नमुत्थुणं वरकनक" क आदिसे भगवान् वीरप्रभु या तीर्थंकरोंकी स्तुति करी ।

इस दृष्टान्तसे आप वस्तुकी समज गये होगे कि कर्मरूप रोगको निर्मूल करनेको डॉक्टर कंपौंडरकी स्तुतिकर दवा लेनेसे लगे हुवे अतिचारोंकी शीघ्र विशुद्धि होती है वास्ते मोक्षार्थी भाइयोंको अपना नित्य कर्त्तव्य सामायिक प्रतिक्रमण प्रभुपूजा और पठनपाठन करनेमें उद्यमवन्त हो नरभवको सफल करना चाहिये ।

कितनेक महानुभाव प्रतिक्रमणके लाभसे अज्ञात है. वह अपना अमूल्य जीवन आलस्य प्रमादमें खो वेठते है वह दुगुना नुकशान उठाते है एकतो दिनभरमें जो अतिचार सेवन किया था वह दूसरा पापोंकि विशुद्धिके समय आलोचना नहीं करता हुवा आलस्य प्रमाद गप्पोसप्पोमें पापकर्मो-पार्जन करते है. उन महानुभावोंके लिये प्रतिक्रमणके लाभके बारेमें यहां कुछ उल्लेख करना अनुपयोगी न होगा ।

प्रतिक्रमण—आवश्यकसूत्रका चतुर्थाध्ययन है. प्राचीनग्रन्थोंमें आवश्यक

शब्दही पाया जाता है. अधुनिक पुस्तकोंमें आवश्यकके स्थान प्रतिक्रमण शब्द प्रचलित है. दर अस्सल प्रतिक्रमण आवश्यक सूत्रका चतुर्थाध्ययन है.

आवश्यकसूत्रके विभागरूप छे अध्ययन है यथा सामायिकाध्ययन, चतुर्विंशतिस्तवाध्ययन, वन्दनाध्ययन, प्रतिक्रमणाध्ययन, कायोत्सर्गाध्ययन, प्रत्याख्यानाध्ययन. (नन्दीसूत्र.) अधुना प्रतिक्रमणकी आदिमें चैत्यवंवन्दन अन्तमें स्तवन सज्झाय और कायोत्सर्गादि कितनीक क्रियाएं समयानुकूल आचार्योंनें प्रतिक्रमणके साथ जोड दी है.

छे आवश्यकका क्रम और फल ।

(१) प्रथम सामायिकाध्ययन-प्रतिक्रमणकी आदिमें इरियावहि करी जाती है, वह क्षेत्रशुद्धिके लिये है बाद देववन्दन किया जाता है. यह मन्दिरकी क्रिया है मन्दिरमें जाके देववन्दन करनेकी विधि शिथिल होने लगी जब आचार्योंने प्रतिक्रमणके साथ जोड दी है दर अस्सल " देवसि पडिक्कमण ठाऊं " यहांसे लेके अतिचारकी आठ गाथाओंका कायोत्सर्ग पारके "नमो अरिहन्ताणं" कहना वहांतक सामायिकाध्ययन है. सामायिक तीन प्रकारका है श्रुतसामायिक, सम्यक्त्वसामायिक, चारित्रसामायिक[१] इन तीनों सामायिकसे क्रमशः ज्ञान दर्शन चारित्रकी प्राप्ति होती है. सामायिकाध्यायनमें ज्ञान दर्शन चारित्र उपलक्षणसे तप और वीर्य इन पाचों आचारोंमें अतिचार लगा हो उनका चिंतवन कीया जाता है यह चिंतवन रागद्वेषरूपी विकल्पोंको दूर कर समभाव रखनेसे हो सक्ता है. इसी वास्ते ही इस अध्ययन का नाम सामायिक अध्ययन रक्खा गया है, इस अध्ययन का फल क्या है?

सामाइएणं भन्ते जीवे किं जणयइ ? सामाइएणं सावज्जजोगविरइ जणयइ " । (श्री उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन २९.)

भावार्थ—सामायिक करनेसे जीव सावद्ययोगोंसे निवृत्ति पाता है यानि पाप आनेके सावद्य योग है उन्होंसे निवृत्ति होनेसे फिर नये पाप नहीं आते है ।

---

१ चारित्रसामायिकके दो भेद है (१) देशचारित्र सामा० (२) सर्वचारित्र सामा०.

(२) चतुर्विंशतिस्तवाध्ययन—रागद्वेषरूपी विकल्पोंका त्याग कर समभाव रक्खे वह ही जीव चोवीसतीर्थकरोंकी गुणस्तुति कर सक्ते है यह कायोत्सर्ग पारनेके बाद लोगस्स कहा जाता है इसको चतुर्विंशतिस्तवाध्ययन कहते है इस्का फल ।

" चउव्वीसत्थएणं भन्ते जीवे किं जणयइ ?
चउव्वीसत्थएणं जीवे दंसणविसोहिं जणयइ ॥

(श्री उत्त० अध्य० २९.)

भावार्थ—चौवसि तीर्थकरोंकी गुणस्तुति करनेसे जीवोंको दर्शनविशुद्धि होती है । यानि सम्यक्त्व निर्मल होता है ।

(३) वन्दनाध्ययन—रागद्वेषरहित समभावोंसे देवकी गुणस्तुति करनेवाला महानुभाव आचार्यमहाराजको द्वादशावर्तनवन्दन करनेयोग्य होता है. लोगस्स करनेके बाद दो वार द्वादशावर्तन वन्दना देना. यह तीसराध्ययन है इस्का फल कहेते है—

" वन्दणएणं भन्ते जीवे किं जणयइ ?
वन्दणएणं जीवे नियागोयं कम्मं खवेइ
उच्चागोयं कम्मं निबन्धइ.
सोहग्गं च णं अपडिहयं आणाफलं
निवत्तेइ दाहिण भावं चणं जणयइ ।

(श्री उत्त० अध्य० २९.)

भावार्थ—गुरुमहाराजको नम्रभावे वन्दन करनेसे नीच गौत्रकर्मका क्षय और उच्च गौत्रकर्म का बन्ध करता है. सौभाग्यलक्ष्मिको उपार्जन करे तथा जिसपर आदेश—आज्ञा करे वह सहर्ष स्वीकार कर शीघ्रतापूर्वक उस कार्यको करे और दूसरोंको आनन्दकारी वचन बोलनेकि लब्धिको प्राप्त करे ।

(४) प्रतिक्रमणाध्ययन. जो रागद्वेषरहित समभावोंसे देवगुरुकी स्तुति स्तवना वन्दन नमस्कार करनेवालाही अपने पापोंका प्रतिक्रमण कर सकेगा. यह वन्दना के अन्तसे " आयरिय उवज्झाय " तक प्रतिक्रमण नामका चतुर्थाध्ययन है इसका फल ।—

" पडिक्कमणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ?

पडिक्कमणेणं जीवे वयछिद्दाणिपिहेइ
पिहिय छिद्दे पुण जीवे निरूद्धासवे
असवल चारित्ते अट्ठसु पवयण मायासु
उवउत्ते अपुहते सुप्पणिहिए विहरइ "

(श्री उत्त० अध्य० २९.)

भावार्थ—प्रतिक्रमण करनेवाले जीवोंके व्रतमें अतिचाररूपी जो छिद्र थे जिस्के जरिये कर्मरूपी पानी आरहा था उस छिद्रोंको जानके प्रतिक्रमणरूपी पाटीयासे छिद्रोंको ढांक देनेसे कर्मरूपी पानी आना बन्ध हो गया तबसे असबला यानि निर्मल चारित्र पालता हुवा अष्टप्रवचनमाताके पालनेमें उपयोगवन्त संयमसमाधिवन्त हो निरतिचार चारित्र पालता हुवा विचरें।

(५) कायोत्सर्गाध्ययन—रागद्वेषरहित देवगुरुकि स्तुति वन्दनादि समभावसे करनेवाला शुद्धभावोंसे प्रतिक्रमण करेगा वह ही जीव ज्ञान दर्शन चारित्रकी विशुद्धिके लिये कायोत्सर्ग करनेयोग्य होगा." आयरिय उवज्झाए" के अन्तसे दो वार वन्दना देनेतक पांचवा अध्ययन है इस्का फल—

" काउस्सग्गेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ? काउस्सग्गेणं जीवे तीय पडुप्पन्न पायच्छित्तं विसोहेइ विसुद्ध पायच्छित्तेय जीवे निव्वुय हियए ओहोरिय भारोव्व भारवहे पसत्थ ज्झाणोवगए सुहं सुहेणं विहरइ " (श्रीउत्त० अध्य० २९.)

भावार्थ—कायोत्सर्ग करता हुवा जीव भूत और वर्तमानकालमें लगे हुवे अतिचारोंके प्रायश्चित्तको विशुद्ध करता है. उस प्रायश्चित्तको विशुद्ध करता हुवा जीव प्रशस्त हृदय शुभभावनाओं जैसे भारको वहनेवाला जीव भारको कम करनेसे सुखी होता है इस माफीक प्रायश्चित्तरूपी वजनको कम करनेसे जीव प्रशस्तध्यान यानि धर्मध्यान शुक्लध्यानमें अपनी आत्माको जोडता हुवा सुखसे विहार करे।

(६) प्रत्याख्यानाध्ययन—रागद्वेषत्यागी समभावी देवगुरुभक्ति स्तुति करनेवाले निष्कपटभावसे प्रतिक्रमण कर प्रायश्चित्तरूपी कायोत्सर्ग करनेवाला होगा वह ही भविष्यके लिये प्रत्याख्यान करनेयोग्य बन सकेगा. नमुक्कारसि आदि तपश्चर्या करने रूप यह छठा अध्ययन है इस्का फल—

" पच्चखाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ? पच्चखाणेणं जीवे आसव दाराइं निरूम्भइ पच्चखाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ इच्छानिरोहं गएयणं जीवे सव्व दव्वेसु विणीय तण्हे सीयलभूए विहरइ " (श्रीउत्त० अध्य० २९)

भावार्थ-प्रत्याख्यान करनेसे जीव कर्म आनेके दरवाजेरूप जो आश्रव है उन्होंका निरोध कर देते है । और भविष्यकी इच्छाकाभी निरोध करते है. इच्छाका निरोध करनेसे सर्व द्रव्योंपर जो ममत्वभाव था उस तृष्णाका त्याग करनेसे शितलीभूत हो जाते है अर्थात् प्रत्याख्यान करनेवाले तृष्णासे मुक्त हो जाते है.

यह आवश्यक भगवान् वीरप्रभुके शासनमें निर्विघ्नपणे समाप्त हुवा है इसलिये कमसे कम तीन तथा अधिकसे अधिक १०८ श्लोकोंसे चैत्यवन्दन स्तुति की जाति है. जिस्का फल—

" थयथुइ मङ्गलेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ? थयथुइ मङ्गलेणं जीवे नाणदंसणचारित्त बोहिलाभं जणयइ. नाणदंसण चरित्त बोहिलाभं संपन्नेयणं जीवे अन्तकिरियं कप्प विमणोववत्तिगं आराहणं आराहेइ "

(श्रीउत्त० अध्य० २९.)

भावार्थ—तीर्थकरोंके गुण कीर्तन स्तुति करनेसे जीवों ज्ञानदर्शन चारित्ररूप बोधबीजकी प्राप्ती कर लेते है. ज्ञानादिकी प्राप्ती होनेसे उसी भवमें मोक्ष जाते है या वैमानिक देवके आयुष्य योग्य आराधना करते है वह तीसरे भवमें मोक्ष जाते है

पांच प्रकारके प्रतिक्रमण—मिथ्यात्वकाप्रतिक्रमण, अव्रतकाप्रतिक्रमण, प्रमादकाप्रतिक्रमण, कषायकाप्रतिक्रमण, अशुभयोगोंका प्रतिक्रमण, इन पांचो प्रकारके प्रतिक्रमणके करनेसे जीव सदैव निर्मल रहता है. (श्रीस्थानायांग सूत्र स्थाने ५ वे)

दशगुणोंके धारक हो वह महानुभाव प्रतिक्रमणरूप आलोचना कर सक्ते है जातिवन्त, कुलवन्त, विनयवन्त, उपशान्तकषायवन्त, जितेन्द्रिय, ज्ञानवन्त दर्शनवन्त चारित्रवन्त निष्कपटी और प्रायश्चित्त लेके पश्चात्ताप न करनेवाला अर्थात् प्रतिक्रमण करनेवालोंमें यह दशगुण सहजही प्रगट हो

जाते है. (श्रीस्थानार्यांग सूत्र स्थाने १० वे.)

जैसे गृहस्थ लोग अपने रहने के मकान सामान्यतः दिनके अन्तमें और रात्रीके अन्तमें झाडुसे कचरे को दूर कर साफ करते है विशेषतः पक्षके अन्तमें चतुर्मास के अन्तमें और संवत्सरके अन्तमें धोना लिपनादि शृंगारसे सुन्दर बनाते है तद्वत् धर्मजिज्ञासु दिनके अन्तमें रात्रीके अन्तमें पक्षके अन्तमें चतुर्मासके अन्तमें और संवत्सरके अन्तमें अतिचार रूप कचरेको समार्जनीरूप आलोचनेसे साफ कर मनोमंदीरकों निर्मल सुन्दर बनाते है. जिससे भविष्यमें आराधिकपदसे अंतर्वासी आत्मामी मकानके माफीक शोभनीय होता है.

कितनेक महानुभाव प्रतिक्रमणके सूत्र कण्ठस्थ करलेते है. वह क्रिया-समय तोतेकी माफीक पाठ पढ लेते है किन्तु उन मूलसूत्रोंके अर्थसे अज्ञात होनेसे उतना लाभ नही उठा सक्ते है कि जितना अर्थभावार्थ और मतलबको जानकर लाभ उठा सके. शास्त्रकारोंनें फरमाया है की–

पदंसिक्खितं--पद–पदार्थ अच्छी तरहसे पढा हो.

ठितं—वाचनादि स्वाध्यायासे ठीक स्थिर किया हुवा हो.

जितं—सारणा वारणा धारणासे अस्खालित हो.

मितं–पद अक्षर बराबर याद रखा हो.

परिजितं–क्रमोत्क्रम याद रखा हो.

नामसम–पढाहुवा ज्ञानको स्वनामवत् याद रखा हो.

घोससम–उदात्त अनुदात्त स्वरव्यञ्जन संयुक्त याद रखा हो.

अहिणअक्खरं–अक्षरादि हीनतारहित "

अणाचअक्खरं–अक्षर मात्रादि अधिकपणेरहित "

अवद्धअक्खरं–उलटपलट अक्षररहित "

अक्खलियं–अस्खलितपनेसे बोलना "

अमिलिय अक्खरं–अनमीलन–विरामादि संयुक्त बोलना "

अवच्चामेलियं–पुनरुक्ति आदिरहित बोलना "

पडिपुनं–अष्ट स्थानोच्चारण संयुक्त

कंठोठ्ठ विप्पमुक्क–बालकोंकी माफीक अस्पष्टता न बोले

गुरुवायणोवगयं–गुरुमुखसे वाचना ली हो उसी माफीक बोलना

सेणं तत्थ वायणाए-सूत्रार्थकी वाचना-बोलना याद रखा हो

पुच्छणाए-शंका होनेपर शब्दार्थादि पुछना.

परिअट्टणाए-पढे हुवे ज्ञानकी पुनःपुनः आवृत्ति करना.

धम्मकहाए-उच्च स्वरसे धर्मकथाका कहना.

नो अणुपेहाए-उपर बतलाइ हुइ शुद्धताके साथ मूल सूत्रका उच्चारण करते हुवेभी भावार्थ को नही जाननेवालेकी सब क्रियाओंको " अणोवग दव्वो " उपयोग रहितको द्रव्य क्रिया बतलाइ है.

(श्रीअनुयोगद्वार सूत्र.)

इस परम व्याख्यापर पाठकोंको अवश्य ध्यान देना चाहिये कि इतनी शुद्धता पूर्वक शब्दोच्चारण करनेपरभी उपयोग रहितकी सब क्रियाओंको द्रव्य क्रिया बतलाइ है. वास्ते स्वल्पही क्रिया क्यों न हो परंतु होना चाहिये उपयोग संयुक्त वहही क्रिया फलदायक होती है.

प्रतिक्रमण करनेवाले महानुभावोंको मूलपाठके साथही उस्के भावार्थकोभी कण्ठस्थ करना जरूरी है. कहा है कि " उवओग भावो " उपयोग है वह ही भाव क्रिया कर्म निर्जराका हेतु है।

प्रतिक्रमण कोइ सामान्य क्रिया नहीं है किन्तु धर्म जिज्ञासुओंके लिये परमावश्यक क्रिया है जैसे हिन्दुभाइयोंको सन्ध्या, मुशलमानको निमाज अवश्य क्रिया है इसी माफीक जैनीभाइयोंको प्रतिक्रमण यह एक अवश्य क्रिया है।

इतनी अवश्य और उपयोगी क्रिया होनेपरभी हमारे कितनेक जैन भाइयों जो कि प्रमादकी पाशमें फसे हुवे आलस्यके सरदारोंको प्रतिक्रमणकी तर्फ कितना अनादर भाव है कि सेंकडे दश लोगोंको भी प्रतिक्रमण मूलपाठरूपही स्यात् कण्ठस्थ होगा. तब भावार्थ के साथकि तो आशाही क्यों करना चाहिये ?

इस पवित्र क्रियाको अस्तित्व भावमें रखनेके लिये कोई ऐसीभी कीताबे छपाइ गइ थी कि राइ देवसि प्रतिक्रमण कंठस्थ न होनेवालेभी विधिसहित प्रतिक्रमण किताबोंसेभी कर सके.

परन्तु पांच प्रतिक्रमणकी ऐसी किताब आजतक देखनेमें नही आइ कि प्रतिक्रमणसे अज्ञात भाइ उस किताबसे विधिसहित पांच प्रतिक्रमण

कर सके. हम केइ दिनोंसें इस विचारमें थे कि एक ऐसी किताब तैयार करवाइ जावे कि जिस किताबके जरिये हरेक भाइ पांचों प्रतिक्रमण विधिसहित कर सके आजसे दो साल पेश्तर हमने इस कार्यको प्रारंभ किया था परन्तु अच्छे कार्यों में बहुतसे विघ्न होनेके नियमसे उस कार्यमें बाधाएं आती गइ । तद्यपि हम इस स्थान मुनि श्रीजिनविजयजी और मुनि श्रीतिलकविजयजी महाराजका उपकार मानते है कि आपश्रीने कुछ फॉर्म संशोधन करने मे सहायता दि है. शेष रहे हुवे फॉर्म एक सद्गृहस्थ महानुभावने संशोधन कर इस कार्य को संपूर्ण कीया है।

इस जगह हम अधिक उपकार उस महाशयजीका मानते है कि इस पुस्तक छपानेमें द्रव्यका दान देनेपर भी अपने नामको गुप्त रखा है उस गुप्तदानेश्वरको हम सहस्र धन्यवाद देते है कि अपनि उदारताका गुप्त परिचय दीया है।

दो वर्षोंसे पडे हुवे कार्यको श्रीरत्नप्रभाकरज्ञानपुष्पमाला ऑफीस फलोदीवालोंनें अपने हाथमें लेकर इस किताबकी शुद्धि और प्रस्तावनादि कार्यमें सहायता दे कार्यको प्रवृत्तिरूपमें पहुंचा दिया है । वास्ते उस संस्थाकोभी हम धन्यवाद देते है ।

इस किताबमें पांच प्रतिक्रमणके सिवाय नौस्मरणादि परमोपयोगी स्तोत्र भी मुद्रित करवाये गये है।

अन्तमें हम हमारे स्वधर्मी भाइयों से यह निवेदन करते है कि अगर आप कों पांचो प्रतिक्रमण कण्ठस्थ नहीं भी आता हो तो इस किताबसे कर अपने दिनमें रात्रीमें पक्षमें चतुर्मासमें और संवत्सरमें किये हुवे पापों कों आलोचनकर आत्मा को निर्मल बना लिजिये इससे हम हमारे परिश्रम कों सफल समझेंगे एक सूचना और भी कर देते है वह यह है कि प्रुफ शोधनेमें कुछ अशुद्धियें रह गइ है जिसका शुद्धिपत्र इस किताब के साथ छपा दिया है जब यह किताब आपके हस्तगत हो तब पेस्तर आप शुद्धिपत्रसे इसे शुद्ध कर ले तांकें प्रतिक्रमण करते समय आपको अच्छा सुविधा रहेगा शान्ति शान्ति शान्ति ॥

प्रेसिडेन्ट श्री जैन नवयुवकमित्रमंडल मु. लोहावट–मारवाड.	भवदीय, छोगमल कोचर.

शुद्धिपत्रम्.

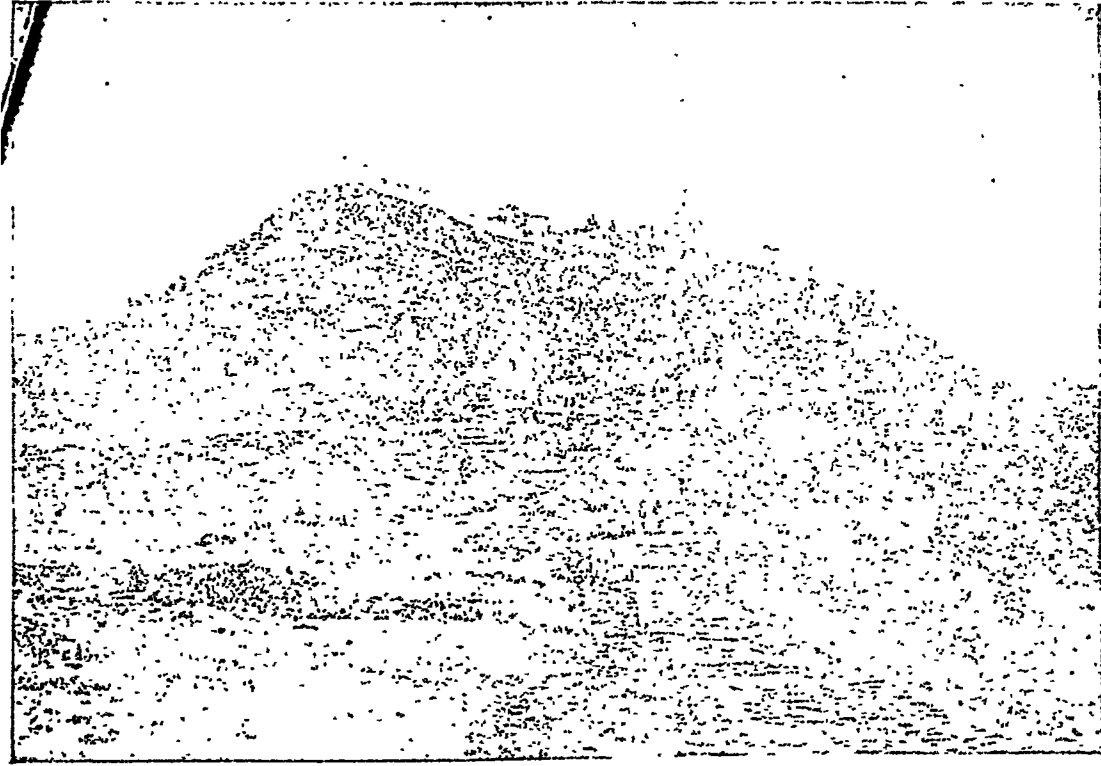


अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठम्	पङ्क्तौ
मक्खकय	मक्खय	७	९
नमोत्थुणं	नमुत्थुणं	९	२३, २६
निससिएणं	नीससिएणं	१०,११,१२ २०,२५,२६, २७,३४,५९	२२,२०,१४,३०, १८,१८,१४,२४, २४,
आवस्यकर्की	आवश्यकर्की	१३	२०
सव्वमिंच्छोवराए	सव्वमिच्छोवयाराए	१२,१९,२२,२२	२९,२५,२,१२
जीवायोनीमेसे	जीवायोनिभेसे	१४	२८
करनेको	करतेको	१५	८
दाहिणा	दाहिना	१५	२३
सव्वस	सव्वस्स	१८	८
समीद	समिद्द	,,	१०
सप्परिआयं	सप्परिआवं	,,	१३
बरसविहस्स	बारसविहस्स	२०	२५
अपूर्वचंद्र	अपूर्वचन्द्रम्	२४	२३
उद्दुएणं	उड्डुएणं	२५	१९
सक्करवत्तिआए	सक्कारवत्तिआए	३१,३४	२०,२१
काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	३१	२९
ऋषम	ऋषभ	३२,३२,४१	१९,२४,१९
दुक्खओ	दुक्खखओ	३४	१६
सर्वसाधुभ्य	सर्वसाधुभ्यः	३४	३१
आयरिआणं	आयरियाणं	३६,३७,६०,६४	२३,९,९,३०
देवसिप	देवसिक	३७	८
उचरना	उच्चरना	२९,७२	१२,२६

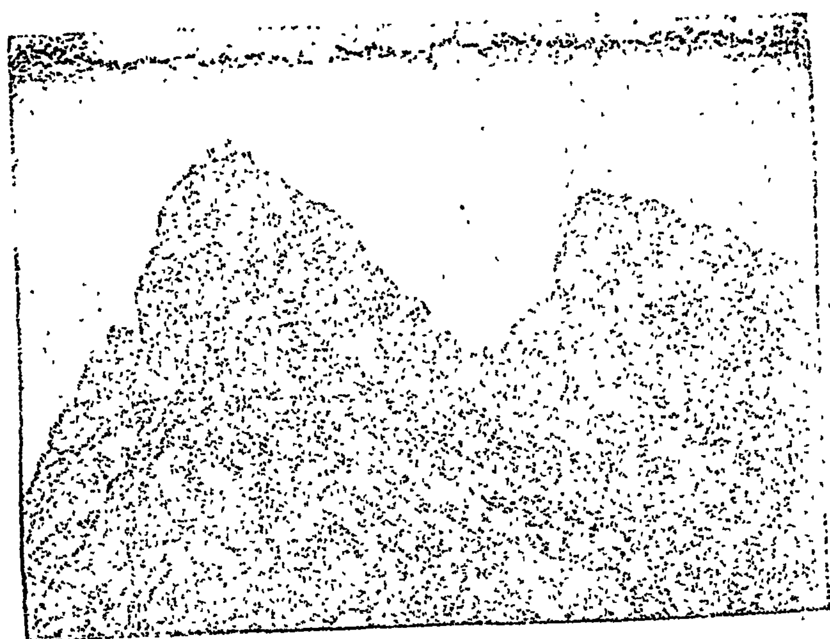
अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठम्	पङ्क्तौ
खमासमन	खमासमण	४०	५
खाइमं	खाइमं, साइमं	४१,७५	६,२२
आठा	आठ	४१	२१
माणाए, माणाए	माणाए, मायाए	४९	४
अइकारो	अइआरो	४९,४९	६,१५
सव्वकालिआए जो मे अइकारो	सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो	४९	१५
खमासमाणाणं	खमासमणाणं	४९	१२
भेसज्जे	भेसज्जे	५२	२२
आव	आवे	५७	४
गिन	गिनना	५८	२
पुक्खरगरदीवढे	पुक्खरवरदीवड्ढे	५३	३
शान्ताऽशिवं	शान्ताऽशिवं	६६ (२)	९
पावंति	पावंति	७०	२३
सुगांस	सुगासं	७२	२९
विमलमणंत	विमलमणंतं	,,	३१
हाके	होके	८३	२८
खंडिअं	खंडिअं	८७	१४
यहां पर संबुद्धा खमासमणके साथ "अब्भुट्ठिओमि" छपना रह गया है वह कहना चाहिये		९१	२१
अट्ट	अट्ठ	९३	७
साव्वी	साध्वी	,,	९
कुवा	कूवा	९४	२६
उपर	ऊपर	,,	२७
भूखा	भूखा	९५	१७

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठम्	पङ्क्तौ
रखा	रखा	९५,९९,	२४,२३
चिल्ह	चील्ह	९५	२६
यतना की	यतना न की	९६	३
लख	लेख	,,	११
सक्ष्म	सूक्ष्म	,,	१६
अलाहदा रखी	अलाहदी रखी	,,	२८
डंगर	डांगर	९९	२३
मिट्ठी	मिट्टी	,,	२६
विनेले	विनोले	,,	२८
गुणव्वयाण	गुणव्वयाणं	१०६	१६
वंदित्त	वंदित्तु	,,	२७
कुडतुल	कूडतुल	१११	२५
॥२॥	॥२२॥	१०८	२२
सिक्खावए	सिक्खावए	१०८	२६
समाससणो	खमासमणो	१२३	२०
मदर	मंदर	१२९	१५
सूर्योदयक	सूर्योदयके	१३८	,,
आभववखंडा	आभत्रमखंडा	१४३	१८
दोप	दोपं	१५२	२४
यद्गर्ज्जदुर्जित	यद्गर्ज्जदूर्जित	१६२	७
कृत्य	कृत्यम्	,,	१०
भयदवक	भयदवक्त्र	,,	१२
प्रेतवकृत:	प्रेतव्रज:	,,	१३
प्रोद्यलपत्रन्ध	प्रोद्यत्प्रबन्ध	,,	३०
गुहुग्गखग्ग	गहुग्गखग्ग	१६४	२०
पमाणनेय	पमाणुनेय	१६६	१५
भुक्खियवसेण	भुक्खियवसेण	१६७	२५

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठम्	पङ्क्तौ
दारिद्र्यापत्सपाश्रिते	दारिद्र्यापत्समाश्रिते	१६९	२५
देवसिप्रतिक्रमणाविधि	पाक्षिकप्रतिक्रमणविधि	८२ से ११२ तक	१
लक्ष्मी	लक्ष्मीम्	१७०	७
ऋर्ह्रीं	र्ह्रीं	१८१	५
र्ह्रीं	र्ह्रीं	१८२	१६
नमोऽक्न्ते	नमोऽन्ते	,,	,,



श्रीसिद्धाचलजी तीर्थ.



[redacted] पर्वत पंचमी टोंक.



श्रीगिरनार पर्वत नेमिनाथ टोंक.

अथ

विधि सहित

॥ श्री पंचप्रतिक्रमण सूत्र ॥

सामायिक लेनेका विधि

(पहिले उंचे आसन पर पुस्तक प्रमुख रखके श्रावक श्राविका, कटासणा, मुहपत्ती, चरवला लेकर शुद्धवस्त्र, जगा पुंजके कटासणे पर बैठके मुहपत्ती वामहाथमें मुंहके पास रखके जिमणा हाथ थापनाजीके सन्मुख रखके)

नमो अरिहंताणं,
नमो सिद्धाणं,
नमो आयरियाणं,
नमो उवज्झायाणं,
नमो लोए सव्वसाहूणं.
एसो पंचनमुक्कारो,
सव्व पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ॥

(ऐसे एक नवकार गिनके फिर)

पंचिंदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो ।
चउव्विह कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ।
पंच महव्वयजुत्तो, पंचविहायार पालणसमत्थो ।
पंचसमिओ तिगुत्तो छत्तीसगुणो गुरुमज्झ ॥

(ऐसे पंचिंदिय कहे, जो आगेसे उस स्थानपर आचार्य प्रमुखकी स्थापना की हुई हो तो वहां पंचिंदिय नहीं कहना, फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि-

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरिया वहियं पडिक्कमामि, इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरिया वहियाए, विराहणाए, गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मकडा संताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया लेसिया, संवाइया संघट्टिया परियाविया, किलामिया उद्दविया, ठाणाओठ्ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणठ्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिठ्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो. जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(फिर एक लोगस्स वा चार नवकारका काउस्सग्ग करना. पीछे प्रगट लोगस्स कहना सो नीचे मुताबिक)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउविसंपि केवली ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥

---

१ प्रतिक्रमण वगैरह विधिओंमें जहां जहां खमासमण देनेमें आते हैं वहां वहां खडे होकर देने चाहिए. आदेश भी खडे होकर मांगना चाहिए.

२ प्रतिक्रमण वगैरह विधिओंमें तीन प्रकारकी मुद्रामें रहनेका होता है.

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिठ्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥
एवं मए अभिथुआ; विहुयरयमला पहीण जरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तिथ्थयरा मे पसीयंतु ॥
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

(फिर खमासमण देना)

इच्छं इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मथ्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं "इच्छं"

(ऐसे कहके मुहपत्ती पडिलेहनी. फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मथ्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं? "इच्छं"। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मथ्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक ठाउं? "इच्छं"।

(ऐसे कहके दोनों हाथ जोडकर नीचे मुजब नवकार गिनना.)

नमो अरिहंताणं,
नमो सिद्धाणं,
नमो आयरियाणं,
नमो उवज्झायाणं,
नमो लोए सव्वसाहूणं.
एसो पंचनमुक्कारो,
सव्व पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ॥

(फिर--इच्छकारि भगवान् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ऐसे गुरुको कहना यदि गुरु न हो तो स्वयं हाथसे ले लेना.)

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ (फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे संदिसाहुं ? " इच्छं। " इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे ठाउं? "इच्छं." इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं ?" इच्छं " । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, सज्झाय करुं ?" इच्छं " ।

ऐसे कह कर दोनों हाथ जोडके तीन नवकार गिनना. ॥

(इति सामायिक लेनेका विधि संपूर्ण.)

अथ श्री राइप्रतिक्रमण विधि.

(इस प्रकार सामायिक लेकर फिर.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् कुसुमिण दुसुमिण

पहिली—" योगमुद्रा " दोनों हाथकी दसों अंगुलियां इक्ट्ठी करके इस मुद्रा को बैठे बैठे जो क्रिया करनेमें आती है उस वख्त पर उपयोगमें लेनी.

दूसरी " जिनमुद्रा "— खडे हुए दो पैरोंके बीचमें अगले भागमें चार अंगुल जगह रखनी और पिछले भागमें उससे कुछ कम रखनी, यह मुद्रा खडे खडे काउस्सग्ग वगैरह विधिओमे करनेकी है. बिना काउस्सग्ग खडे रहे हुए पांवसे जिनमुद्रा और हाथसे योगमुद्रा रखनी चाहिये.

राइउड्डावणि पायच्छित्त विसोहणथ्थं काउस्सग्ग करुं.?'इच्छं'। कुसुमिण दुसुमिण राइउड्डावणि पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं॥ अन्नथ्थ उससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि॥

(चार लोगस्सका काउस्सग्ग करना लोगस्स न आता हो तो सोलह नवकारका काउस्सग्ग करना. काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना वह नीचे मुजब.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥ १॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च॥
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥ २॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च॥
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥ ३॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च॥
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥ ४॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा॥
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥ ५॥
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा॥
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥ ६॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा॥
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥ ७॥

(फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मथ्थएण वंदामि.

(ऐसे कहके चैत्यवंदन करना)

चैत्यवंदन

जगचिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण ।
जगबंधव जगसत्थवाह, जगभावविअक्खण ॥
अट्ठावय संठविय रूवकम्मट्ठ विणासण ।
चउवीसंपि जिणवर जयंतु अप्पडिहयसासण ॥ १ ॥
कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहि पढम संघयणि ।
उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंतलब्भइ ॥
नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स नव साहु गम्मइ ।
संपइ जिणवर वीस मुणि विहुं कोडिहिं वरनाण ।
समणह कोडि सहस्स दुअ थुणिज्जिअ निच्च विहाणि ॥२॥
जयउ सामी जयउ सामी रिसह सत्तुंजि उज्जित पहुनेमिजिण ।
जयउ वीर सच्चउरि मंडण, भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय ।
मुहरिपास दुह दुरिअखंडण, अवर विदेहिं तित्थयरा ।
चिहुंदिसि विदिसि जिं केवि तीअणागय ॥
संपइय वंदुजिण सव्वेवि ॥ ३ ॥
सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडिओ ।
बत्तीसय बासीआइं, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥
पन्नरस कोडि सयाइं कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना ।
छत्तीस सहस्स असिआइं, सासय बिंबाइं पणमामि ॥५॥
जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ॥
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥

फिर

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरियाणं ।
पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥
लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, ॥

सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं ॥
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, ॥
बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयलमरुय ॥
मणंत मक्खकय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ।
ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥
जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥
जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ॥
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥
नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः (फिर)
उवस्सग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहर विसनिन्नासं मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥
विसहर फुलिंगमंतं कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह रोगमारी दुट्ठजरा जांति उवसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नरतिरिएसु वि जीवा पावंति न दुःख.दोगच्चं ॥ ३ ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे चिंतामणि.कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअसंथुओ महायस भत्तिभरनिब्भरेण हियएण ।
ता देव दिज्जबोहिं भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

(फिर)

जय वीयराय जगगुरु होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भव निव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धि ॥ १ ॥
लोगविरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआ-परत्थकरणं च ।

सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥
वारिज्जइ जइवि निआणबंधणं वीयराय तुह समए ।
तहवि मम हुज्ज सेवा भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३॥
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ समाहि मरणं च बोहिलाभो अ ।
संपज्जओ मह एअं तुहनाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥
सर्व मंगल मांगल्यं सर्व कल्याण कारणं ।
प्रधानं सर्व धर्माणां जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥

(यहाँ एक एक खमासमण देकर भगवानहं इत्यादि एक एक पद कहना चाहिये)

भगवानहं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, सर्वसाधुहं । इच्छामि-खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ? "इच्छं"

(ऐसे कहके एक नवकार गिनना. फिर भरहेसरकी सज्झाय कहनी. वह नीचे मुजब)

भरहेसर बाहुबली अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो ।
सिरिओ अणिआउत्तो अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥
मेअज्ज थूलिभद्दो वयररिसी नंदिसेण सीहगिरि ।
कयवन्नोअ सुकोसल पुंडरिओ केसिकरकंडू ॥ २ ॥
हल्लविहल्ल सुदंसण सालमहासाल सालिभद्दोअ ।
भद्दो दसन्नभद्दो पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥ ३ ॥
जंबुपहु वंकचूलो गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ।
धन्नो इलाइपुत्तो चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥
अज्जगिरि अज्जरक्खिअ अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ।
कालयसूरि संबो पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥
पभवो विण्हुकुमारो अद्दकुमारो दढप्पहारी अ ।
सिज्जंस कुरगडू अ सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥
एवमाइ महासत्ता दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ।
जेसिं नामग्गहणे पावपबंधा विलयं जंति ॥ ७ ॥

सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती।
नमयासुंदरि सीया नंदा भद्दा सुभद्दा य। ८॥
राइमइ रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरिदेवी।
जिट्ठसुजिट्ठ मिगावइ पभावइ चिल्लणादेवी॥ ९॥
बंभी सुंदरी रुप्पिणी रेवइ कुंती सिवा जंयती य।
देवइ दोवइ धारणि, कलावइ पुप्फचूला य॥ १०॥
पउमावइ य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य।
जंबुवइ सच्चभामा, रुप्पिणि कन्हट्ठमहिसीओ॥ ११॥
जक्खाय जक्खदिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्ना य।
सेणा वेणा रेणा, भइणीओ थूलिभद्दस्स॥ १२॥
इच्चाइ महासईओ जयंति अकलंक सीलकलिआओ।
अज्जावि वज्जइ जासिं जसपडहो तिहुअणे सयले॥ १३॥

(फिर एक नवकार मंत्र गिनना)

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं एसो पंचनमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥

इच्छकार सुहराइ सुखतपशरीर निराबाध सुखसंयमयात्रा निर्वहो छो जी स्वामी शाता छे जी

इच्छकारेण संदिसह भगवान् राइपडिक्कमणे ठाउं? इच्छं सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुभासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्? इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

(फिर नमोत्थुणं कहना)

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं १ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं २ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरिआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं ३ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपइवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ४ धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ५ अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं विअट्टछउमाणं ६ जिणाणं

जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहिआणं मुत्ताणं मोअगाणं ७ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणंसंपत्ताणं नमोजिणाणं जिअभयाणं८ जे अ अईआ सिद्धा जे अभविस्संति णागए काले संपइअ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि १०.

करेमिभंते सामइयं सावज्जंजोगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाएकाएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामिठामि काउस्सग्गं जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिन्हं गुत्तीणं चउन्हं कसायाणं पंचन्हमणुव्वयाणं तिन्हं गुणव्वयाणं चउन्हं सिक्खावयाणं वरसविहस्स सावग धम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरिकरणेणं पायच्छित्त करणेणं विसोही करणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ उससिएणं निससीएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका काउस्सग करना, न आवे तो चार नवकार मंत्र गिनना. फिर काउस्सग पारके प्रगट लोगस्स कहना वह नीचे मुजब.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं. सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तिय वंदिय महिया जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर)

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ उससिएणं निससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका काउस्सग करना. न आवे तो चार नवकारमंत्र गिनने. फिर पुक्खरवरदीवड्ढे कहना. वह नीचे मुजब.)

पुक्खरवरदीवड्ढे धायइसंडे अ जंबूदीवे अ ।
भरहेरवय विदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥
तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स ।
सीमाधरस्स वंदे पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥

जाइ जरा मरण सोग पणासणस्स
कल्लाण पुक्खलविसालसुहावहस्स।
को देवदाणव नरिंदगणच्चियस्स
धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमये नंदिसया संजमे
देवं नाग सुवन्नकिन्नर गणस्सब्भूअ भावच्चिए।
लोगो जत्थ पइठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढओ ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं. वंदण वत्तिआए पूअण वत्तिआए सक्कार वत्तिआए सम्माण वत्तिआए बोहिलाभ वत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससीएणं निससीएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिठ्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(फिर आठ गाथाका काउस्सग्ग करना. न आवे तो आठ नवकारमंत्र गिनना. वह आठ गाथाका काउस्सग्ग नीचे मुजब.)

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि ।
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥
काले विणए वहु माणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ।
वंजण अत्थ तदुभय, अठ्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥
निस्संकिअ निक्कंखिअ निव्वितिगिच्छा अमूढदिठ्ठी अ ।
उववूह थिरीकरणे वच्छल्लप्पभावणे अठ्ठ ॥३ ॥
पणिहाण जोगजुत्तो पंचहिं समिइहिं तिहिं गुत्तिहिं ।
एस चरित्तायारो, अठ्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥
वारस विहंमि तवे, सब्भिंतर वाहिरे कुसलदिठ्ठे ।

अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥
अणसणमूणोअरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ।
कायकिलेसो संलीणयाय वज्झो तवो होई ॥६ ॥
पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं उस्सग्गोवि अ, अब्भितरओ तवो होई ॥ ७ ॥
अणगूहिअ बलविरिओ परिक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ।
जुंजइ अ जहा थामं नायव्वो वीरियायारो ॥ ८ ॥

(काउस्सग्ग पारके सिद्धाणं बुद्धाणं कहना. वह नीचे मुजब.)

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥
जो देवाण वि देवो जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार सागराओ तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥
उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥
चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउवीसं ।
परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

(फिर तिसरे आवस्यककी मुहपत्ती पडिलेहनी फिर दो वांदणां देना वह नीचे मुजब.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइकंता जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिकमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्न यराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

फिर

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइअं आलोउं ? " इच्छं "। आलोएमि जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुविचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावग पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता चरित्ते सुए सामाइए तिण्हंगुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावग धम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर)

सात लाख पृथिवीकाय सात लाख अपकाय सात लाख तेउकाय सात लाख वाउकाय दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय वे लाख वे इंद्रिय वे लाख तेइंद्रिय वे लाख चउरिंद्रिय चार लाख देवता चार लाख नारकी चार लाख त्रियंच पचेंद्रिय चौद लाख मनुष्य एवंकारे चोरासी लाख जीवायोनीमेंसे मेरे जीवने जो कोई जीव हनन किया हो कराया हो करनेवाले को भला जाना होय सो सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर)

पहले प्राणातिपात दूजे मृषावाद तीजे अदत्तादान चौथे मैथुन पांचमे परिग्रह छट्ठे क्रोध सातमे मान आठमे माया नवमे लोभ दसमे राग इग्यारमे द्वेष बारमे कलह तेरमें अभ्याख्यान चौदमें पैशुन्य पंदरमे रति अरति सोलमे पर परिवाद सत्तरमे मायामृषावाद अठारमे मिथ्यात्वशल्य इन अठारह पापस्थानोंमें से मेरे जीवने जो कोई पापस्थान सेवन किया हो कराया हो करनेको भला जाना हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

फिर

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिन्तिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(दाहिणा गोडा ऊंचा करके नीचे मुजब बोलना)

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं एसो पंच
नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणंच सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारस विहस्स सावग धम्मस्स जं खंडिअं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥

जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ।
सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥
दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे।
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ ३ ॥
जं वद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥
आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे।
अभियोगे अ नियोगे पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ ५ ॥
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु।
सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं॥ ६ ॥
छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा।
अत्तट्ठाय परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे।
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ ८ ॥
पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवाय विरईओ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ प्पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥
वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए।
पढमवयस्स इयारे, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ १० ॥
बीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलियवयण विरईओ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ प्पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ।
बीयवयस्स इयारे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १२ ॥
तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईओ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ प्पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ।
कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १४ ॥
चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण विरईओ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ प्पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे।
चउत्थवयस्स इयारे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १६ ॥

इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि।
परिमाण परिच्छेए, इत्थप्पमायप्पसंगेणं ॥ १७॥
धण धन्न खित्तवत्थु, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे।
दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १८॥
गमणस्सउ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहेअ तिरिअं च।
वुड्ढिसइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे॥ १९॥
मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ।
उवभोगे परिभोगे, बीअंमि गुणव्वए निंदे॥ २०॥
सच्चित्ते पडिबद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअं च आहारे।
तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे राइअं सव्वं॥ २१॥
इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं।
वाणिज्जं चेव य दंत, लक्खरस केसविस विसयं॥ २२॥
एवं खु जंतपिल्लण,कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं।
सरदह तलायसोसं, असई पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३॥
सत्थग्गि मुसल जंतग, तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे।
दिन्ने दवाविएवा पडिक्कम्मे राइअं सव्वं ॥ २४॥
न्हाणुवट्टणवन्नग, विलेवणे सद्दरूवरसगंधे।
वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं॥ २५॥
कंदप्पे कुक्कइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते।
दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे॥ २६॥
तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहासइविहुणे।
सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे॥ २७॥
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे।
देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे॥२८॥
संथारुच्चारविही, पमाए तहचेव भोयणा भोए।
पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥
सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव।
कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३०॥
सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे असंजएसु अणुकंपा।

२

रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गिरहामि ॥३१॥
साहूसु संविभागो, न कओ तवचरण करण जुत्तेसु ।
संते फासुयदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥
इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसप्पओगे ।
पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥
काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइयारस्स ॥३४॥
वंदणवयसिक्खागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ।
गुत्तीसु अ समीइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५॥
सम्मदिट्ठीजीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि ।
अप्पोसि होई वंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआयं सउत्तरगुणं च ।
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥
जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया ।
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥
एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोस समज्जिअं ।
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥
कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे ।
होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ भरुव्व भारवहो ॥४०॥
आवस्सएण एएण, सावओ जइवि वहुरओ होइ ॥
दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥
आलोअणा वहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमणकाले ।
मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥
तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥
अब्भुट्ठिओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए ।
तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥
जावंति चेइआइं०॥४४॥ जावंत केवि साहू० ॥४५॥
चिर संचिय पाव पणासणीए भवसय सहस्स महणीए

चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥
मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
सम्मद्दिट्ठीदेवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥
खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥
एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥५०॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर राइअं खामेउं इच्छं खामेमि राइअं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर दो वांदनां देनां)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवासिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं काय संफासं खमणिज्जो

मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे राइओ वइक्कंतो जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नय-राए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्क-डाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल गणेअ,
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिकरिअ सीसे ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥
सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहीअ निअचित्तो ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

करेमि भंते सामइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे राइओ अइआरो कओ काइ-ओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकर-णिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिन्हं गुत्तीणं चउन्हं कसायाणं पंचन्हमणुव्वयाणं तिन्हं गुण-व्वयाणं चउन्हं सिक्खावयाणं बरसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरिकरणेणं पायच्छित्त करणेणं विसोही करणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं निससीएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-एणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहु-

मेहिं अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहाँपर तपचिंतनका काउस्सग करना न आवे तो सोलह नवकार गिनने फिर काउस्सग पारके प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे मुताबिक)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुष्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग वोहिलाभं, समाहि वरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर छट्ठा आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहनी, फिर दो खमासमण देने वह नीचे मुजब.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे राइ वइ-क्कंता जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए

सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जोमे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे राइ वइक्कंता जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जोमे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(फिर सकलतीर्थ कहना.)

सकल तीर्थ वंदु कर जोड, जिनवरनामे मंगल कोड ॥
पहेले स्वर्गे लाख वत्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निशदिश ॥ १ ॥
वीजे लाख अठावीश कह्यां, त्रीजे बार लाख सद्दह्यां ।
चोथे स्वर्गे अडलख धार, पांचमे वंदु लाखज चार ॥ २ ॥
छठ्ठे स्वर्गे सहस पच्चास, सातमे चालीश सहस प्रासाद ।
आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमे वंदुं शत चार ॥ ३ ॥
अग्यार बारमे त्रणसें सार, नव ग्रैवेयके त्रणसे अढार ।
पांच अनुत्तर सर्वे मळी, लाख चोराशी अधिकां वळी ॥ ४ ॥
सहस सत्ताणुं त्रेवीस सार, जिनवर भुवनतणो अधिकार ।
लांवा सो जोजन विस्तार, पचास उंचां बोहोतेर धार ॥ ५ ॥
एकसो एंशी विंव प्रमाण, सभासहित एक चैत्ये जाण ।
सो कोड वावन कोड संभाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥ ६ ॥
सातसें ऊपर साठ विशाल, सवि विंव प्रणमुं त्रण काल ।
सात क्रोडनें बोहोतेर लाख, भुवनपतिमां देवल भाख ॥ ७ ॥
एकसो एंशी विंव प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण ।

तेरसें कोड नेव्याशी कोड, साठ लाख वंदुं करजोड ॥ ८ ॥
बत्रीसें ने ओगणसाठ, तीर्छालोकमां चैत्यनो पाठ ।
त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणसें वीश ते बिंब जुहार ॥ ९ ॥
व्यंतर जोतिषिमां वळी जेह, शाश्वता जिन वंदुं तेह ।
ऋषभ चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामे गुणसेण ॥ १० ॥
समेत शिखर वंदुं जिन वीश, अष्टापद वंदुं चोवीश ।
विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु ऊपर जिनवर जुहार ॥११॥
शंखेश्वर केसरिओ सार, तारंगे श्री अजितजुहार ।
अंतरिक वरकाणो पास, जीरावलो ने थंभण पास ॥ १२ ॥
गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ।
विहरमान वंदुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निश दिश ॥१३॥
अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस सिलांगना धार ।
पंचमहाव्रत समितिसार, पाळे पळावे पंचाचार ॥ १४ ॥
बाह्य अभ्भिंतर तप उजमाळ, ते मुनि वंदुं गुण मणिमाळ ।
नित नित ऊठी कीर्ति करूं, जीव कहे भवसागर तरुं ॥१५॥

(फिर जो पच्चक्खाण धारणा हो सो यहांपर धार लेना.)

॥ अथ नमुक्कार सहिअं मुट्ठिसहिअंनुं पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ । चउ-व्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे

(अथ पोरिसिं साड्ढपोरिसिंका पच्चक्खाण)

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ उग्गएसूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति-आगारेणं वोसिरे ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक, चउव्विसथओ, वंदणा, पडिक्कमणु, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण, कीया होतो कीया है, धारा होतो धारा है, वैसा कहना, और नोकारसी पारास

उपरांत पच्चक्खाण करना होतो भी यहाँ पर ही धार लेना।
(फिर बाइआँ प्रतिक्रमण करती हो तो यहाँपर संसारदावा कहे वह नीचे मुजब)-

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं,
मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥
भावावनामसुरदानवमानवेन,
चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ।
संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि,
कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥
बोधागाधं सुपदपदवी नीरपूराभिरामं,
जीवाहिंसाविरललहरी संगमागाहदेहं ।
चूलावेलं गुरुगममणि संकुलं दूरपारं,
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

पुरुष इच्छामि अणुसट्ठि नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ऐसा कहके विशाललोचन कहे

विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेसरं,
प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥१॥
येषामभिषेककर्मकृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेंद्राः ।
तृणमपि गणयंति नैव नाकं,
प्रातःसन्तु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २
कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं ।
अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रभाषितं,
दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥
नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं, तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरियाणं,
पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं,
लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,,
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,
बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयलमरुय मणंत-
मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं
संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए पुअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धीइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थउससिएणं निससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायानिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग पारके फिर नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके प्रगट स्तुति कहनी वह नीचे मुताबिक.)

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं ।
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥

(फिर)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तिय वंदिय महिया, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं निससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिठ्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग करना फिर स्तुति कहनी वह नीचे मुजब)

अपार संसार समुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं ।
सव्वे जिणिंदा, सुरविंद वंदा, कल्लाण वल्लीण विसालकंदा ॥१॥

पुक्खरवरदीवड्ढे धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ।
भरहेरवय विदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥
तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स ।
सीमाधरस्स वंदे पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥

जाइ जरा मरण सोग पणासणस्स
कल्लाण पुक्खलविसालसुहावहस्स ।
को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स
धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमये नंदिसया संजमे
देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअ भावच्चिए ।
लोगो जत्थ पइठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं
धम्मो वढ्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वढ्ढओ ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदण वत्तिआए पूअण वत्तिआए सक्कार वत्तिआए सम्माण वत्तिआए बोहिलाभ वत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वढ्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं निससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिठ्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(फिर एक नवकारका काउस्सग्ग करना, काउस्सग्ग पारके एक स्तुति कहनी वह नीचे मुजब.)

निव्वाण मग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेसकुवाइदप्पं ।
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥
उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठ्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥

चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउवीसं।
परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥
वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठि समाहिगराणं
करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं,अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करना फिर नमोऽर्हत् कहके स्तुति कहनी वह नीचे मुजब.)

कुंदिंदु गोक्खीर तुसारवन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना।
वाएसिरिपुत्थयवग्गहत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरियाणं,
पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं,
लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहिआणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुय मणंत-
मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं।

ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

(यहांपर चार बख्त एक एक खमासमण देकर दरेकके अंतमें भगवान् हं आदि कहना.)

भगवानहं, आचार्य हं, उपाध्याय हं, सर्वसाधु हं.

फिर

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमीसु, जावंतकेवि साहू रयहरणगुच्छपडिग्गहधरा पंचमहव्वयधरा अट्ठारससहस्स सीलांगधरा, अक्खयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

(फिर एक खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रीसीमंधरस्वामी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं. " इच्छं ")

चैत्यवंदन

श्री सीमंधर वीतराग, त्रिभुवन उपगारी ।
श्री श्रेयांस पिताकुले, बहु शोभा तुमारी ॥ १ ॥
धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी ।
वृषभलंछन विराजमान, वंदे नरनारी ॥ २ ॥
धनुष पांचशे देहडीए, सोहिए सोवनवान ।
कीर्तिविजय उवज्झायनो, विनयधरे तुम ध्यान ॥ ३ ॥
जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥
नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरियाणं,
पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं,
लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अभयदाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,
सरणदयाणं, वोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयलमरुय मणंत-
मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं
ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥
जावंति चेइआइं उड्ढेअ अहेअ तिरिय लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थसंताइं ॥ १ ॥

(एक खमासमण देके)

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

(ऐसा कहके स्तवन कहना.)

(स्तवन)

पुक्खलवइ विजए जयोरे, नयरी पुंडरिगिणी सार ।
श्रीसीमंधर साहिवोरे, राय श्रेयांस कुमार ॥
जिणंदराय धरजो धर्म सनेह । ए आंकणी ॥
मोटा न्हाना अंतरारे, गिरुआ नवि दाखंत ॥
शशि दरिसण सायरवधेरे, कैरववनविकसंत । जि०ध० ॥२॥
ठाम कुठाम नवि लेखवेरे, वरसंत जलधार ।
करदोय कुसुमे वासिएरे, छाया सवि आधार । जि०ध० ॥३॥
राय ने रंक सरिखा गणेरे, उद्योते शशि सूर ।

गंगाजल ते बिंदु तणारे, ताप करे सवि दूर । जि०ध० ॥ ४ ॥
सरिखा सहुने तारवारे, तिम तुमे छो महाराज ।
मुजसुं अंतर किम करोरे, बांहे ग्रह्यांनी लाज । जि०ध० ॥५॥
मुख देखी टीलुं करेरे, ते नवि होय प्रमाण ।
मुजरो माने सवि तणोरे, साहेब तेह सुजाण । जि०ध० ॥६ ॥
वृषभलंछन माता सत्यकीरे, नंदन रुक्मिणीकंत ।
वाचकजसएम विनवेरे, भयभंजन भगवंत जि०ध० ॥ ७ ॥

जय वीयराय जगगुरु होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धि ॥ १ ॥
लोगविरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआपरत्थकरणं च ।
सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥
वारिज्जइ जइवि निआणबंधणं वीयराय तुहसमए ।
तहवि मम हुज्ज सेवा भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३॥
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ समाहिंमरणं च बोहिलाभो अ ।
संपज्जओ मह एअं तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥
सर्व मंगलमांगल्यं सर्व कल्याण कारणं ।
प्रधानं सर्व धर्म्माणां जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण वत्तिआए पूअण वत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माण वत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवस्सग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धीइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नथ्थ उससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमालिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहांपर एक नवकारका क उस्सग्ग करके फिर नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः कहके एक स्तुति कहनी वह नीचे मुजब.)

सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव ।
अरिहंत सकळनी, भावधरी करुंसेव ।
सकलागम पारग, गणधरभाषित वाणी ।
जयवंति आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥

(दोहरा)

सिद्धाचळ समरुं सदा, सोरठदेश मझार ।
मनुषजनम पामी करी, वंदूं वार हजार ॥ १ ॥
एकेकुं डगलुं भरे, शेत्रुंजा साहमुं जेह ।
रिखभ कहे भवकोडनां, कर्म खपावे तेह ॥ २ ॥
शेत्रुंजा समो तीरथ नहि, रुषभ समो नहि देव ।
गौतमसारखा गुरु नहि, वळी वळी वंदूं तेह ॥ ३ ॥
सिद्धाचळ समरुं सदा, सोरठ देश मोझार ।
मनुषजनम पामी करी, वंदूं वार हजार ॥ ४ ॥
सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार ।
शेत्रुंजी नदी नाह्यो नहि, तेनो एळे गयो अवतार ॥ ५ ॥

(फिर खमासमण देकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रीसिद्धगिरि आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं. " इच्छं "

चैत्यवंदन.

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ।
भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ॥ १ ॥
अनंत सिद्धनुं एह ठाम, सकल तीरथनो राय ।
पूर्व नवाणुं रुषभ देव, ज्यां ठवीया प्रभु पाय ॥ २ ॥
सूरजकुंड सोहामणो, कविडयक्ष अभिराम ।
नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥
नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरियाणं।
पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥
लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
अभयदाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, ॥
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं ॥
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, ॥
बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयलमरुय मणंत-
मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं
संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले।
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥
जावंति चेइआइं उड्ढेअ अहेअ तिरिय लोए अ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥
(फिर एक खमासमण देकर)
जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥
नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः
(ऐसा कहके स्तवन कहना.)
(स्तवन)
विमलाचल नितु वंदिये, कीजे एहनी सेवा।
मानुं हाथ ए धर्मनो शिवतरुफल लेवा। विमला० ॥१॥

उज्ज्वल जिनगृह मंडली, तिहां दीपे उत्तंगा ।
मानुं हिमगिरी विभ्रमे, आइ अंबर गंगा । वि० ॥ २ ॥
कोई अनेरो जग नहि, ए तीरथ तोले ।
एम श्रीमुख हरि आगले, श्रीसीमंधर बोले । वि० ॥३॥
जे सगळा तीरथ कर्यां, यात्रा फल कहिए ।
तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहिए । वि०॥४॥
जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ।
सुजशविजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे । वि० ॥५॥

जय वीयराय जगगुरु होउ ममं तुह पभावओ भयवं
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धि ॥ १ ॥
लोगविरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआपरत्थकरणं च ।
सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥
वारिज्जइ जइवि निआणबंधणं वीयराय तुहसमए ।
तहवि मम हुज्ज सेवा भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥
दुक्खओ कम्मक्खओ समाहिमरणं च बोहिलाभो अ ।
संपज्जउ मह एअं, तुह णाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥
सर्वमंगल मांगल्यं सर्व कल्याण कारणं ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धीइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ उससिएणं निससीएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करना काउस्सग्ग पारके नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य ऐसा कहकर स्तुति कहनी.)

पुंडरिकगिरी महिमा आगममां परसिद्ध ।
विमलाचल भेटी, लहिए अविचल रिद्ध ॥
पंचमि गति पहोत्या, मुनिवर कोडाकोड ।
एणे तीरथे आवी, कर्म विपातिक छोड ॥ १ ॥

(अथ सामायिक पारनेका विधि)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहिआए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसाउत्तिंग पणगदग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिआ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाउठाणं संकामिया जीविआओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरिकरणेणं पायच्छित्त करणेणं विसोही करणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससीएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि॥

(ऐसा कहके एक लोगस्सका काउस्सग्ग करना लोगस्स आता न हो तो चार नवकार मंत्र गिनने फिर काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना वह नीचे मुजब)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंत च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिठ्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥
कित्तिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् मुहपत्ति पडिलेहुं, "इच्छं"

(ऐसा कहके मुहपत्ति पडिलेहनी. फिर खमासमण देना.)

इच्छामि खमाणमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारुं, 'यथाशक्ति'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पार्युं, "तहत्ति"।

(ऐसा कहकर फिर एक नवकार गिनना)

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरिआणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

(फिर आसनपर दाहिणा हाथ रखके नीचे मुजब गाथा बोलना)

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंजुत्तो ।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ॥ १ ॥
सामाइयंमिउ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ॥
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ २ ॥

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोइ अविधि हुआ हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं। दश मनके दश वचनके बारह कायाके यह बत्तीस दोषमें जो कोइ दोष हुआ हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

(इति सामायिक पारनेका विधि)

॥ अथ देवसिथ प्रतिक्रमण विधि ॥



नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरिआणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं· एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो ।
चउव्विहकसायमुक्को, इअ अट्ठारसगुणेहिं संजुत्तो ।
पंचमहव्वयजुत्तो, पंचविहायारपालणसमत्थो ।
पंचसमिओ तिगुत्तो छत्तीसगुणो गुरू मज्झ ॥

(आचार्यजी हो तो पंचिंदिय न कहना; न हो तो पुस्तक, नवकारवाळी प्रमुखकी पंचिंदिय कहके दाहिणा हाथ नीचे जमीन पर रखके स्थापना करनी.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि·

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहिआए, विराहणाए, गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग, मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिआ, एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया, पंचिंदिया,

अभिहया वत्तिया लेसिया, संघाइया संघट्टिया परियाविया, किलामिया उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो. जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(ऐसा कहकर एक लोगस्सका काउस्सग करना न आता हो तो चार नवकार गिनने. फिर प्रगट लोगस्स कहना. वह नीचे मुताबिक.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥
एवं मए अभिथुआः विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥
कित्तिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

इच्छं इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-

आए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं "इच्छं"

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं? "इच्छं"। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक ठाउं? "इच्छं"।

(ऐसा कहकर एक नवकार गिनना फिर)

इच्छकारि भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ऐसा कहकर दोनों हाथ जोडकर करेमिभंते उचरना वह नीचे मुताबिक

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि,दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामिं गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे संदिसाहुं? "इच्छं।" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे ठाउं? "इच्छं." इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, सज्झाय संदिसाहुं? "इच्छं"। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, सज्झाय करूं? "इच्छं"।

ऐसा कहके दोनों हाथ जोडकर तीन नवकार गिनने.

(इति सामायिक लेनेका विधि.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् मुहपत्ति पडिलेहुं ? " इच्छं "

ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी फिर खमासमन देने.

इच्छामि खमासमणो वंदिउं आवणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइ-कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमा-मि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणु-जाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्न-यराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्क-डाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

(फिर पच्चक्खाण करना.)

चउविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥

पाणहारका पच्चक्खाण ।

पाणहारादिवसचरिमं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे।

तिविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ तिविहं पि आहारं असणं खाइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥

दुविहारका पच्चक्खाण

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ दुविहं पि आहारं असणं खाइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥

(एकासण वा बेआसण किया हो तो भी पाणहारका पच्चक्खाण करना)

(इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? " इच्छं " ऐसा कहकर चैत्यवंदन करना)

चैत्यवंदन

माहासुदि आठमने दिने, विजयासुत जायो ।
तिम फागण सुदि आठमे, संभव चवी आयो ॥ १ ॥
चइतर वदनी आठमे, जन्म्या रुषभजिणंद ।
दिक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥
माधवसुदि आठम दिने, आठा कर्म कर्या दूर ।
अभिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥
एही ज आठम ऊजली, जन्म्या सुमति जिणंद ।
आठ जाति कलशे करी, नवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥
जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रतस्वामी ।
नेम आषाढसुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
श्रावणवदनी आठमे, नमि जन्म्या जगभाण ।
तिम श्रावणसुदि आठमे, पासजिन निरवाण ॥ ६ ॥

भादरवा वदि आठम दिने, चविया स्वामी सुपास ।
जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥
जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥
नमु त्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं, तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरियाणं,
पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं,
लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,
बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुयमणंत-
मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं
संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धीइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं

एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करना. फिर काउस्सग्ग पारकर प्रगट स्तुति कहनी, वह स्तुति नीचे मुजब.)

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥

(ऐसे स्तुति कहकर फिर प्रगट लोगस्स कहना. वह लोगस्स नीचे मुताबिक.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥
आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं

उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसं-चालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एव-माइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग करना फिर स्तुति कहनी वह नीचे मुजब)

अपारसंसारसमुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं ।
सव्वे जिणिंदा, सुरविंदवंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ।
भरहेरवयविदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥
तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स ।
सीमाधरस्स वंदे पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥
जाइजरामरणसोगपणासणस्स
कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स ।
को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स
धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमये नंदि सया संजमे
देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए ।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयउ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहि-लाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-एणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्स-ग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव

कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(फिर एक नवकारका काउस्सग्ग करके स्तुति कहनी)

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेसकुवाइदप्पं ।
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥
उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥
चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिया जिणवरा चउवीसं ।
परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं,अभग्गो अविराहिओ,हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करना फिर काउस्सग्ग पारकर 'नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कहके स्तुति कहनी वह नीचे मुजब.)

कुंदिंदुगोक्खीरतुसारवन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना ।
वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था,सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४॥

नमु त्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरियाणं,

पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं,
लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहिआणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुयमणंत-
मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ।
ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

(फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवान्हं ।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्यहं ।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहं ।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि । सर्वसाधुहं ।
सर्व श्रावकने वांदुं ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं पडिक्कमणे ठाउं ? इच्छं, सव्वस्स वि देवसिय दुच्चिंतिय दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं

पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(आठ गाथाका काउस्सग्ग करना न आवे तो आठ नवकार गिनने काउस्सग्गकी आठ गाथा नीचे मुजब.)

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि ।
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥
काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह य निन्हवणे
वंजण अत्थ तदुभय, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥
निस्संकिअ निक्कंखिअ निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ।
उववूह थिरीकरणे वच्छल्लप्पभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥
पणिहाण जोगजुत्तो पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ।
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥

वारहावहाम तवे, सब्भिंतरवाहिरे कुसलदिट्ठे ।
अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥
अणसणमूणोअरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ।
कायकिलेसो संलीणया य बज्झो तवो होई ॥ ६ ॥
पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भिंतरओ तवो होई ॥ ७ ॥
अणगूहिअ बलविरिओ परिक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ।
जुंजइ अ जहाथामं नायव्वो वीरियायारो ॥ ८ ॥

(फिर काउस्सग पारकर प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे मुजव.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तिय वंदिय महिया, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर तीजा आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहनी, फिर दो खमासमण देने.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं

वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए माणाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइकारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिजं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमाणाणं देवासिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए जो मे आइकारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

फिर खडा होकर

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवासिअं आलोउं? "इच्छं"! आलोएमि जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर हाथ जोडके)

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बे इंद्रिय,

वे लाख तेइंद्रिय,वे लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता,चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पचेंद्रिय,चौद लाख मनुष्य एवंकारे चौरासी लाख जीवायोनीमेंसे मेरे जीवने जो कोई जीव हनन किया हो, कराया हो, करनेवाले को भला जाना होय वह सव मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहले प्राणातिपात, दूजे मृषावाद, तीजे अदत्तादान, चौथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दसमे राग, इग्यारमे द्वेष, वारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पंदरमे रति अरति, सोलमे पर परिवाद, सत्तरमे मायामृषावाद, अठारमे मिथ्यात्वशल्य इन अठारह पापस्थानोंमें से मेरे जीवने जो कोई पापस्थान सेवन किया हो, कराया हो, करनेको भला जाना हो वह सव मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिन्तिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर दाहिणा ढींचण खडा (वीरासन) करके नीचे मुजव कहना)

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं एसो पंच
नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमिभंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिवीहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि न कारवेमि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं

गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥
जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ।
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥
दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे।
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥
जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥
आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे।
अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ५ ॥
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु।
सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ६ ॥
छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा।
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे।
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ८ ॥
पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥
वह बंध छवि च्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए।
पढमवयस्स इयारे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १० ॥
बीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलियवयणविरईओ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ।
बीयवयस्स अइयारे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १२ ॥
तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥

दोनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ ।
कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १४ ॥
चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमणविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ प्पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे ।
चउत्थवयस्स अइयारे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १६ ॥
इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि ।
परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥
धण धन्न खित्तवत्थु, रुप्प सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे ।
दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥१८॥
गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।
वुड्ढि सइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥
मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ।
उवभोगे परिभोगे, बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥
सच्चित्ते पडिबद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअंच आहारे ।
तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २१ ॥
इंगाली वण-साडी भाडी, फोडी सुवज्जए कम्मं ।
वाणिज्जं चेवदंत लक्खरसकेसविस विसयं ॥ २२ ॥
एवं खुजंत पिल्लण, कम्मं निल्लंछणंच दवदाणं ।
सरदहत लायसोसं, असइ पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥
सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कट्ठे मंत मूल भेसज्जे ।
दिन्ने दवा विएवा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं २४
न्हाणुवट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरुव रस गंध ।
वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥
कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते ।
दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥
तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहासइविहुणे ।
सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ।

देसावगासिअंमि, वीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥
संथारुच्चारविही, पमाए तहचेव भोयणा भोए।
पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥
सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव।
कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥
सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे असंजएसु अणुपंका ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥
साहुसु संविभागो, न कओ तवचरण करण जुत्तेसु।
संते फासुयदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥
इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसप्पओगे ।
पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥
काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस वयाइयारस्स ॥३४॥
वंदणवयसिक्खागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ।
गुत्तीसु अ समीइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५॥
सम्मदिट्ठीजीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि ।
अप्पोसि होई वंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआयं सउत्तरगुणं च।
खिप्पं उवसामेइ, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥
जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया ।
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥
एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोस समज्जिअं।
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥
कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे।
होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ भरुव्व भारवहो ॥४०॥
आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ ॥
दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥
आलोअणा बहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमणकाले।

मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥
तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥
अब्भुट्ठिओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए ।
तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥
जावंति चेइआइं०॥४४॥ जावंत केवि साहू० ॥४५॥
चिर संचिय पाव पणासणीए,भवसय सहस्स महणीए।
चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥
मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
सम्मद्दिठ्ठीदेवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरुवणाए अ ॥ ४८ ॥
खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥
एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ।
तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

(फिर दो खमासमण देने)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो

जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर देवसिअं खामेउं इच्छं खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए

कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल गणेअ,
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिकरिअ सीसे ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥
सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहीअ निअचित्तो ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे

काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्सका काउस्सग्ग करना. न आव तो आठ नवकार गिनने. फिर प्रगट लोगस्स कहना. वह नीचे मुजब.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंत च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिठ्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥
कित्तिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धीइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिठ्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका काउसग्ग करना, न आवे तो चार नवकार गिन फिर पुक्खरगरदीवड्ढे कहना.)

पुक्खरवरदीवड्ढे धायइसंडे अ जंबुदीवे अ।
भरहेरवयविदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥
तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स।
सीमाधरस्स वंदे पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥
जाइजरामरणसोगपणासणस्स
कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स।
को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स
धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमये नंदी सया संजमे
देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका काउस्सग्ग करना. न आवे तो चार नवकार गिनने. फिर सिद्धाणं बुद्धाणं काउस्सग्ग पारकर कहना.)

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं।
लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति।

तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स।
संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥
उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥
चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिया जिणवरा चउवीसं।
परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥
सुअदेवआए करेमि काउसग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं,अभग्गो अविराहिओ,हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ऐसा कहकर नीचेकी स्तुति बोलनी)

सुयदेवया भगवई, नाणावरणीय कम्मसंघायं ।
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुयसायरे भत्ती ॥ १ ॥

(स्त्रियोंको कमलदलकी स्तुति कहनी चाहिए वह नीचे मुताबिक.)

कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलसमगौरी ।
कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिं ॥ १ ॥
खित्तदेवताए करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं निससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करना काउस्सग्ग पारकें नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति बोलनी)

जीसे खित्ते साहू, दंसणनाणेहिं चरणसहिएहिं ।
साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं ॥ १ ॥

(स्त्रियोंको भुवनदेवताकी स्तुति कहनी वह नीचे मुताबिक.)

यस्या क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरिआणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

(फिर छट्टा आवश्यककी मुहपत्ति पडिलेहनी फिर दो खमासमण देने)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो

मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ २ ॥

सामायिक, चउवीसत्थो, वांदणां, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है जी ।

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं
नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

(पुरुषोंको नमोऽस्तुवर्द्धमानाय कहना चाहिए, सो नीचे मुजव.)

नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ।
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥
येषां विकचारविंदराज्या,
ज्यायःक्रम कमलावलिं दधत्याः
सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं,
कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥
कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं,
करोति यो जैन मुखांबुदोद्गतः स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो,
दधातु तुष्टिं मयि । विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥

(स्त्रियोंको संसारदावाकी तीन स्तुति कहनी चाहिए.)

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं ।
मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥
भावावनामसुरदानवमानवेन,
चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ।
संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि,
कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥
बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं,
जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहं ।
चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं,
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधुसेवे ॥ ३ ॥
नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥

पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरियाणं,
पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं,
लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,
सरणदयाणं, वोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहिआणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुयमणंत-
मक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ।
ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् स्तवन भणुं "इच्छं" नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

(स्तवन)

मारुं मन मोह्युंरे सिद्धाचळेरे,
मारुं मन मोह्युंरे श्री विमळा चळेरे,
देखीने हरखीत होय ।
विधिसुं कीजेरे यात्रा एहनीरे,
भव भवनां दुःख जाय मारूं० ॥ १ ॥
पंचम आरेरे पावन कारणेरे,
ए समो तीरथ न कोय ।
मोटो ते महिमारे जगमां एहनोरे ।
आ भरते अहिआं जोय । मारूं० ॥ २ ॥

ए गिरि आव्यारे जिनवर गणधरारे,
सिध्या साधु अनंत।
कठण करम पण ए गिरि फरसतारे,
होवे करमनी सांत। मारुं० ॥ ३ ॥
जैन धर्म ते साचो जाणीनेरे,
मानवंतीरथए स्तंभ। सुरनरकिन्नरनृपविद्याधरारे,
करता हो नाटारंभ। मारुं० ॥ ४ ॥
धनधन दहाडेरे धन वेळाघडीरे,
धरिये हृदय मोझार।
ज्ञानविमळ गुणएहना घणारे,
कहंता न आवेरे पार। मारुं० ॥ ५ ॥
वरकनक शंख विद्रुम, मरकत घन सन्निभं विगतमोहं।
सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं वंदे ॥ ॥ ॥
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि। भगवान्हं।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि। आचार्यहं।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि। उपाध्यायहं।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि। सर्वसाधुहं।

(फिर आसनपर दाहिणाहाथ रखके अड्ढाइज्जेसु कहना वह नीचे मुजब.)

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमीसु, जावंतकेवि साहू रयहरणगुच्छपडिग्गहधरा पंचमहव्वयधरा अट्ठारससहस्स सीलांगधरा, अक्खयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअ पायच्छित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं "इच्छं" देवसिअ पायच्छित्त विशोधनार्थं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताबकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

चार लोगस्सका काउस्सग करना न आवे तो सोले नवकार गिनना. फिर प्रगट लोगस्स कहना. वह नीचे मुताबिक.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिठ्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥
कित्तिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं. "इच्छं".

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ? "इच्छं"

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरिआणं, नमो

उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

॥ सज्झाय ॥

पवयण देवी चित्त धरीजी, विनय वखाणीश सार।
जंबूने पूछे कह्योजी, श्रीसोहम गणधार॥ १॥
भविकजन विनय वहो सुखकार॥ ए आंकणी।
पहिले अध्ययने कह्योजी, उत्तराध्ययन मझार।
सघला गुणमां मूलगोजी, जे जिनशासनसार। भविकजन २
नाण विनयथी पामीयेजी, नाणे दरिसण शुद्ध।
चारित्र दरिसणथी हुवेजी, चारित्रथी पुण सिद्धि॥ भवि० ३
गुरुनी आण सदा धरेजी, जाणे गुरुनो रे भाव।
विनयवंत गुणरागियोजी, ते मुनि सरलस्वभाव॥ भवि०॥४॥
कणनुं कुंडुं परिहरीजी, विष्टाशुं मनराग।
गुरुद्रोही ते जाणवाजी, सूअर ओपमा लाग॥ भवि० ॥५॥
कोह्या काननी कूतरीजी, ठाम न पामीरे जेम।
शीलहीण अकह्यागराजी, आदर न लहे तेम॥ भवि०॥ ६॥
चंद्र तणी परे उजळीजी, कीर्ति तेह लहंत।
विषय कषाय जीती करीजी, जे नर विनय वहंत।भवि०॥७॥
विजयदेव गुरु पाटवीजी, श्रीविजयसिंह सूरिंद।
शिष्य उदयवाचक भणंजी, विनय सयल सुखकंद॥भवि०॥८॥

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं एसो पंच नमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणंच सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् दुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं काउस्सग्ग करुं? "इच्छं" दुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं करेमि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमालिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं

अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार संपूर्ण लोगस्सका क उसग्ग करना न आवे तो सोल१ नवकार गिनने. फिर एकजन खडे होकर प्रगट नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ऐसा कहकर शांति बोले वह नीचे मुताबिक.)

शान्ति शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्तऽशिवं नमस्कृत्य ।
स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥
ओमितिनिश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ।
शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥२॥
सकलातिशेषकमहा-सम्पत्तिसमन्विताय शस्याय ।
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥
सर्वामरसुसमूह,-स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ।
भुवनजनपालनोद्यत,-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥
सर्वदुरितौघनाशन,-कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ।
दुष्टग्रहभूतपिशाच,-शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥
यस्येतिनाममन्त्र -प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ।
विजया कुरुते जनहित,-मिति च नुता नमत तं शान्ति ॥६॥
भवतु नमस्ते भगवति ! विजये ! सुजये ! परापरैरजिते ! ।
अपराजिते ! जगत्यां, जयतीति जयावहे ! भवति ! ॥ ७ ॥
सर्वस्यापि च सङ्घस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे ।
साधूनां च सदा शिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥
भव्यानां कृतसिद्धे ! निर्वृत्तिनिर्वाणजननि ! सत्वानाम् ।
अभयप्रदाननिरते ! नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे ! तुभ्यम् ॥ ९ ॥
भक्तानां जन्तूनां शुभावहे नित्यमुद्यते ! देवि ! ।
सम्यग्दृष्टिनां धृति,-रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥
जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम् ।
श्रीसम्पत्कीर्तियशो,-वर्द्धनि ! जय देवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥

सलिलानलविषविषधर,-दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः ।
राक्षसरिपुगणमारी,-चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥
अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्ति च कुरु कुरु सदेति ।
तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं,कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वम् ॥१३॥
भगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति,
तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ।
ओमिति नमो नमो ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ,
फुट् फुट्[1] स्वाहा ॥ १४ ॥
एवं यन्नामाक्षर,-पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी ।
कुरुते शान्ति नमन्तां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥
इति पूर्वसूरिदर्शित,-मन्त्रपदविदर्भितः स्तवः शान्तेः ।
सलिलादिभयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥
यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगम् ।
स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥
उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
मनः प्रसन्नतामेति, पुज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यम्, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥
(फिर सर्वलोक काउसग्ग पारे बाद एक मनुष्य प्रगट लोगस्स कहे.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

1–' फट् फट् ' इत्यपि.

कित्तियवंदियमहिया, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भवगन् इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणगदग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिआ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोही करणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उसासिएणं नीसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक लोगस्स वा चार नवकारका काउसग्ग करना, फिर प्रगट लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणवाणमुसुमूरणु ।
सरसपियंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ॥१॥
जसु तणुकंतिकडप्प सिणिद्धउ,
सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ ।
नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ,
सो जिणु पासु पयच्छिउ वंछिउ ॥ २ ॥
नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरियाणं ।
पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥
लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, ॥
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं ॥
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥

जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, ॥
बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयलमरुअमणंत-
मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं
संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥
जावंति चेइआई उड्ढे अ अहे अ तिरिय लोए अ ।
सव्वाई ताई वंदे, इह संतो तत्थ संताई ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि.

जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥
नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
उवसग्गहरंपासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥
विसहरफुल्लिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवेभवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥
जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भवनिव्वेओ मग्गा,-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥
लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ।
सुहगुरुजोगो तव्वय,-णसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥
वारिज्जइ जइवि निआ-,णबंधणं वीयराय तुह समए ।

तहवि मम हुज्ज सेवा भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणामकरणेणं ॥ ४ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? " इच्छं "

(ऐसा कहके मुहपत्ति पडिलेहनी.)

इच्छामिं खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए-मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारुं ? ' यथाशक्ति '

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पार्‍युं ? " तहत्ति. " ।

(फिर आसनपर दाहिना हात रखके एक नवकार गिनकर सामायिक पारनेकी गाथा कहनी वह निचे मुजब.)

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचनमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

सामाइयवयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंजुत्तो ।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ॥ १ ॥
सामाइयम्मिउ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ २ ॥

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुआ हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छा मि दुक्कडं । दश मनके दश वचनके बारह कायाके

यह बत्तीस दोषमें जो कोइ दोष हुआ हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छा मि दुक्कडं ॥

समाप्तम्.

॥ अथ पाक्षिक प्रतिक्रमण विधिसहित ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहिअं पडिक्कमामि " इच्छं " इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहिआए विराहणाए, गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसाउत्तिंग पणगदग मट्टीमक्कडा संताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिआ, एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका काउस्सग्ग करना. न आवे तो चार नवकार गिनना. फिर प्रगट लोगस्स कहना.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिठ्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तियवंदियमहिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिलेहु ? " इच्छं "

(ऐसा कहके मुहपत्ति पडिलेहनी अंगकी पडिलेहना पचास बोलके साथ करना.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं?" इच्छं "

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक ठाउं ? " इच्छं "

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं एसो पंच
नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं ॥

इच्छकारी भगवन् पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावोजी

(ऐसा कहकर दोनो हाथ जोडकर करेमिभंते उचरना (कहना) वह नीचे मुजब)

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि. दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे संदिसाहुं ? "इच्छं"

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे ठाउं ? " इच्छं " ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं ? " इच्छं " इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् , सज्झाय करुं ? " इच्छं "

(फिर दो हाथ जोडके तिन नवकार गिनना.)

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचनमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

(यह नवकार तीन दफे गिनना)

(फिर पानी पिया होतो मुहपत्ति पडिलेहनी, और आहार किया होवेतो दो खमासमण देना.

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणु--

जाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खम-णिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालि-आए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ २ ॥

(इच्छकारी भगवन् पसायकरी पच्चक्खानका आदेश दीजियेजी)

तिविहार उपवास, आंबेल निवी एकासन, बेआसन किया हो तो पाणहार का पच्चक्खान लेना.

१ पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे.

बिलकुल पानी न पीना होतो चउविहारका पच्चक्खान लेना ॥

२ दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहंपिहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेण महत्तरागारेणं सव्व-समाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥

फक्त पानी पीना हो तो तिविहारका ॥

३ दिवसचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्व-समाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥

पानी और मुखवास खुला रखना हो तो दुविहारका पच्चक्खान लेना.

४ दिवसचरिमं पच्चक्खाइ दुविहंपि आहारं असणं खाइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्व-समाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? " इच्छं "

ऐसा कहके सकलार्हत् कहना.

चैत्यवंदन.

सकलार्हत् प्रतिष्ठान,-मधिष्ठानं शिवश्रियः ।
भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान,-मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ॥ १ ॥
नामाकृतिद्रव्यभावैः, पुनतस्त्रिजगज्जनं ।
क्षेत्रे काले च सर्वस्मि,-न्नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥
आदिमं पृथिवीनाथ,-मादिमं निःपरिग्रहं ।
आदिमं तीर्थनाथंच, ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥
अर्हन्तमजितं विश्व,-कमलाकर भास्करम् ।
अम्लान केवलादर्श,-संक्रान्त जगतं स्तुवे ॥ ४ ॥
विश्वभव्यजनाराम,-कुल्यातुल्या जयन्ति ताः ।
देशनासमये वाचः, श्रीसम्भवजगत्पतेः ॥ ५ ॥
अनेकान्तमताम्भोधि,-समुल्लासनचन्द्रमाः ।
दद्यादमन्दमानन्दं, भगवानभिनन्दनः ॥ ६ ॥
द्युसत्किरीटशाणाग्रो,-त्तेजिताङ्घ्रिनखावलिः ।
भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानि वः ॥ ७ ॥
पद्मप्रभप्रभोर्देह-, भासः पुष्णन्तु वः श्रियम् ।
अन्तरङ्गारिमथने कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥
श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय, महेन्द्रमहिताङ्घ्रये ।
नमश्चतुर्वर्णसङ्घ,-गगनाभोगभास्वते ॥ ९ ॥
चन्द्रप्रभप्रभोश्चन्द्र, मरीचिनिचयोज्ज्वला ।
मूर्तिर्मूर्तसितध्यान,-निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥ १० ॥
करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवलश्रिया ।
अचिन्त्यमाहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥११॥
सत्त्वानां परमानन्द,-कन्दोद्भेदनवाम्बुदः ।
स्याद्वादामृतनिस्यन्दी, शीतलः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥
भवरोगार्तजन्तूना,-मगदङ्कारदर्शनः ।
निःश्रेयसश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥
विश्वोपकारकीभूत,-तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ।

सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥
विमलस्वामिनो वाचः, कतकक्षोदसोदराः ।
जयन्ति त्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥
स्वयम्भूरमणस्पर्द्धि,-करुणारसवारिणा ।
अनन्तजिदनन्तां वः, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ॥ १६ ॥
कल्पद्रुमसधर्माण,-मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् ।
चतुर्धाधर्मदेष्टारं धर्मनाथमुपास्महे ॥१७॥
सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना,-निर्मलीकृतदिङ्मुखः ।
मृगलक्ष्मा तमश्शान्त्यै, शान्तिनाथजिनोऽस्तु वः॥१८॥
श्रीकुन्थुनाथो भगवान्,-सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः ।
सुरासुरनृनाथाना,-मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥ १९ ॥
अरनाथस्तु भगवां,-श्चतुर्थारनभोरविः ।
चतुर्थपुरुषार्थश्री,-विलासं वितनोतु वः ॥ २० ॥
सुरासुरनराधीश,-मयूरनववारिदम् ।
कर्मद्रून्मूलनेहस्ति,-मल्लं मल्लिमभिष्टुमः ॥ २१ ॥
जगन्महामोहनिद्रा,-प्रत्यूषसमयोपमम् ।
मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥ २२ ॥
लुठन्तो नमतां मुर्ध्नि, निर्मलीकारकारणम् ।
वारिप्लवा इव नमेः, पान्तु पादनखांशवः ॥ २३ ॥
यदुवंशसमुद्रेन्दुः, कर्मकक्षहुताशनः ।
अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥
कमठे धरणेन्द्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ।
प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥
श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ।
महानन्दसरोराज,-मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥
कृतापराधेऽपि जने, कृपामन्थरतारयोः ।
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥ २७ ॥
जयति विजितान्यतेजाः सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ।
विमलस्त्रासविरहित,-स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ २८॥

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो, वीरं बुधाः संश्रिताः ।
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ।
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो ।
वीरे श्रीधृतिकीर्तिकान्तिनिचयः, श्रीवीर ! भद्रं दिश ॥ २९ ॥
अवनितलगतानां, कृत्रिमाकृत्रिमानाम् ।
वरभवनगतानां, दिव्यवैमानिकानाम् ।
इह मनुजकृतानां, देवराजार्चितानाम्, ।
जिनवरभवनानां, भावतोऽहं नमामि ॥ ३० ॥
सर्वेषां वेधसामाद्य,-मादिमं परमेष्ठिनाम् ।
देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ ३१ ॥
देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहापापप्रदीपानलो ।
देवः सिद्धिवधूविशालहृदयालङ्कारहारोपमः ।
देवोऽष्टादशदोषसिन्धुरघटानिर्भेद पञ्चाननो ।
भव्यानां विदधातु वाञ्छितफलं, श्रीवीतरागो जिनः ॥३२॥
ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेत शैलाभिधः ।
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः ।
वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय- ।
स्तत्र श्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ ३३ ॥
जं किंचि नाम तित्थं सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं,
पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं,
लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
अभयदयाणं, चक्खुदयाणं मग्गदयाणं,
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,

धम्मसारहिणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहयवरनाणदंसणधारणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,
बुद्धाणं वोहिआणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सुव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुयमणंत
मक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति ॥ सिद्धिगइनामधेयं ॥
ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले ।
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥
(फिर चरवलावाले खडे होकर अरिहंत चेइआणं कहे ।)

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग कर नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः कहकर स्तुति कहना.)

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्या विभोः शैशवे ।
रूपालोकनविस्मयाहृतरस,-भ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ॥
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशङ्कया ।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति, श्रीवर्धमानो जिनः ॥ १ ॥
लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ २ ॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ ३ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ४ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ५ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ६ ॥
कित्तियवंदियमहिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ७ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ८ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके फिर स्तुति कहनी.)

हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवाम्भोभृतैः ।
कुम्भैरप्सरसां पयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिः काञ्चनैः ।
येषां मन्दररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ।
सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ।
भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥
तमतिमिरपडलविद्धं,-सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स।
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥
जाइजरामरणसोगपणासणस्स,
कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स।
को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स,
धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदि सया संजमे
देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए।
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं।
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयउ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धीइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके तीसरी स्तुति कहनी)

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं, चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः। मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं, भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं।
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥

जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥
उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥
चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिया जिणवरा चउवीसं ।
परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं,अभग्गो अविराहिओ,हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग पारके "नमोऽर्हत सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुभ्यः" कहके फिर स्तुति कहनी.)

निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं बालचंद्राभदंष्ट्रं ।
मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयंतं समंतात् ।
आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी ।
यक्षः सर्वानुभूति दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥४॥

(फिर बैठके)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरिआणं,
पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं,
लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयलमरुअमणंत-
मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं
संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ।
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवान्हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्यहं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । सर्वसाधुहं ।

(फिर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ? "इच्छं"

(दाहिणा हाथ चरवला वा आसनपर रखके)

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

(फिर खडा होके वा बैठके करेमिभंते कहे वह नीचे मुताबिक)

करेमिभंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न

करेमि न कारवेमि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओं माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(फिर अतिचारकी आठ गाथाका काउस्सग्ग करना, न आवे तो आठ नवकार गिनने फिर

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।

चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर तीजे आवश्यककी मुहपत्ति पडिलेहनी और दो खमासमण देने)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिकमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

(फिर खडा होकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउ ? "इच्छं" आलोएमि जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ

वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं

(फिर हाथ जोडके)

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दोइंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी; चार लाख तिर्यंच पचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य एवंकारे चौरासी लाख जीवायोनीमेंसे मेरे जीवने जो कोई जीव हनन किया हो, कराया हो, करनेवाले को भला जाना हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहले प्राणातिपात, दूजे मृषावाद, तीजे अदत्तादान, चौथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दसमे राग, इग्यारमे द्वेष, वारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति, सोलमे पर परिवाद, सत्तरमे मायामृषावाद, अठारमे मिथ्यात्वशल्य इन अठारह पापस्थानोंमेंसे मेरे जीवने जो कोई पापस्थान सेवन किया हो, कराया हो, करतेको भला जाना हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर दाहिणा ढींचण खडा करके नीचे मुजब कहना.)

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच

नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं ।
पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमिभंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पचण्हमणुव्वयाण तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥
जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥
दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।
करावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥
जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥
आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।
सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ६ ॥
छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे ।
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ८ ॥

पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥
वह वंध छविं च्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए।
पढमवयस्स इयारे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १० ॥
वीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलियवयणविरईओ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ।
वीयवयस्स अइयारे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १२ ॥
तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ।
कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १४
चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमणविरईओ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे
चउत्थवयस्स अइयारे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १६ ॥
इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि।
परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥
धण धन्न खित्तवत्थु, रुप्प सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे।
दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१८॥
गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च।
वुड्ढि सइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥
मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ।
उवभोगे परिभोगे, वीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥
सच्चित्ते पडिवद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअं च आहारे।
तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २१ ॥
इंगाली वण-साडी भाडी, फोडी सुवज्जए कम्मं।
वाणिज्जं चेव दंत, लक्खरसकेसवीस वीसयं ॥ २ ॥
एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं।

सरदह तलायसोसं, असइ पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥
सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कट्ठ मंत सूल भेसज्जे ।
दिन्ने दवा विएवा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २४ ॥
न्हाणुवट्टण वन्नग्ग, विले-वणे सद्दरुव रस गंधे ।
वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥
कंदप्पे कुक्कइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते ।
दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥
तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहासइविहुणे ।
सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७॥
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ।
देसावगासिअंमि, वीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥
संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणा भोए ।
पोसहविहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥
सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ।
कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥
सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे असंजएसु अणुकंपा ।
रागेण व दोसेण व, त निंदे तं च रिगहामि ॥३१॥
साहुसु संविभागो, न कओ तवचरण करण जुत्तेसु ।
संते फासुयदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥
इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसप्पओगे ।
पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥
काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइयारस्स ॥३४॥
वंदणवयसिक्खागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ।
गुत्तीसु अ समीइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे॥ ३५ ॥
सम्मदिट्ठीजीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि ।
अप्पोसि होई वंधो, जेण निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ।
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥

जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया ।
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥
एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोस समज्जिअं ।
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥
कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे ।
होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ भरुव्व भारवहो ॥४०॥
आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ ॥
दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥
आलोअणा बहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमणकाले ।
मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥
तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥
अब्भुट्ठिओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥
जावंति चेइआइं०॥४४॥ जावंत केवि साहू० ॥४५॥
चिर संचिय पाव पणासणीए,भवसय सहस्स महणीए।
चउवीस जिण विणिग्गय कहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥
मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
सम्मदिट्ठीदेवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरुवणाए अ ॥ ४८ ॥
खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥
एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि· देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता - इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि मुहपत्ति पडिलेहुंजी ? " इच्छं "

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी. फिर दो खमासमण देने वह नीचे मुताबिक)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइकम्मं आवसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए असायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइकारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खोवइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइकारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं आलोउ ? "इच्छं" आलोएमि जो मे पक्खिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए समाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि अतिचार आलोउं ? "इच्छं" ऐसा कहके पाक्षिक अतिचार कहना वह नीचे मुताबिक)

पाक्षिक अतिचार

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि । आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, इन पांचों आचारोंमें जो कोइ अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते, लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं.

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार "काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह य निन्हवणे । वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान नियमित वक्तमें पढा नहीं, अकाल वक्तमें पढा. विनयरहित, बहुमानरहित, योगोपधानरहित, पढा. ज्ञानजिससें पढा उससे अतिरिक्तको गुरु माना, या कहा. देववंदन, गुरुवंदन, करते हुए, तथा प्रतिक्रमण सज्झाय पढते, गुणते, अशुद्ध अक्षर कहा, लगमात्र न्यूनाधिक कहा, अथवा सूत्र अर्थ दोनों असत्य कहे, पढकर भूला, असझाईके समयमें थविरावलि, प्रतिक्रमण, उपदेशमालाआदिसिद्धांत पढा. अपवित्र स्थानमें पढा, विना साफ किये घृणित भूमिपर रखा. ज्ञानके उपकरण तखती, पोथी, ठवणी, कवली, माला, पुस्तक रखनेकी रील, कागज, कलम, दवात आदिके पैर लगा, थूंक लगा, अथवा थूंकसें अक्षर मिटाया. ज्ञानके उपकरणको मस्तकके नीचे रखा, अथवा पासमें लिए हुए आहार निहार किया. ज्ञान द्रव्य भक्षण करनेवालेकी उपेक्षा की, ज्ञानद्रव्यकी सारसंभाल न की, उलटा नुकसान किया. ज्ञानवंतके उपर द्वेप किया, ईर्षा की, तथा अवज्ञा आशातना की. किसीको पढने गुननेमें विघ्न डाला. अपने जानपनेका मान किया, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, और केवलज्ञान इन पांचों ज्ञानोंमें श्रद्धा न

की. गुंगे तोतलेकी हांसी की इत्यादि. ज्ञानाचार संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

दर्शनाचारके आठ अतिचारः--" निस्संकिअ निकंखिअ, निवितिगिच्छा अमूढदिट्ठि अ । उववूह थिरीकरणे, वच्छलप्पभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥ देवगुरु धर्ममें निःशंक न हुआ. एकांत निश्चय न किया. धर्मसंबंधी फलमें संदेह किया, साधु साध्वीकी जुगुप्सा निंदा की, मिथ्यात्वियोंकी पूजा प्रभावना देखकर मूढदृष्टिपना किया. कुचारित्रीको देखकर चारित्रवाले-परभी अभाव हुआ, संघमें गुणवानकी प्रशंसा न की. धर्मसे पतित होते हुए जीवको स्थिर न किया. साधर्मीका हित न चाहा, भक्ति न की, अपमान किया. देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्यकी हानि होते हुए उपेक्षा की, शक्तिके होते हुए भली प्रकार सारसंभाल न की, साधर्मीसे कलह, क्लेश करके कर्मबंधन किया, मुखकोश बांधेविना भगवत् देवकी पूजा की, धूपदानी, खसकुची, कलशआदिकसे प्रतिमाजी को ठपका लगाया, जिनबिंब हाथसे छूटा, श्वासोश्वास लेते आशातना हुई. मंदिर और पौपधशालामें थूंका, तथा मल श्लेश्म किया, हांसी की, कुतुहल किया. जिनमंदिरसंबंधी चौरासी आशातनामेंसे और गुरुमहाराज संबंधी तेतीस आशातनामेंसे कोइ आशातना हुइ हो, स्थापनाचार्य हाथसे गिरे हो, या उनकी पडिलेहण न हुइ हो, गुरुके वचनको मान न दिया हो इत्यादि दर्शनाचार संबंधी जो कोइ अतिचार, पक्षदिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

चारित्राचारके आठ अतिचारः--"पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो॥४॥ इर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति आदानभंडम-

त्तनिक्षेपणासमिति, पारिष्ठापनिका समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति यह आठ प्रवचनमाता—सामायिक, पौषधादिकमें अच्छीतरह पाली नहीं. चारित्राचार संबंधी जो कोइ अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

विशेषतः श्रावकधर्मसंबंधी श्रीसम्यक्त्वमूल बारहव्रत सम्यक्त्वके पांच अतिचार. "संका कंख विगिच्छा," शंकाः— श्री अरिहंत प्रभुके बल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांभीर्यादिगुण, शाश्वतीप्रतिमा, चारित्रावानके चारित्रमें तथा जिनेश्वर देवके वचनमें संदेह किया. आकांक्षाः—ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड, गूगा, दिक्पाल, गोत्रदेवता, नवग्रहपूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, वाली, माता, मसानी—आदिक तथा देश, नगर, ग्राम, गोत्रके जुदे जुदे देवादिकों का प्रभाव देखकर शरीरमें रोगांतक कष्टादिके आनेपर इसलोक, परलोकके लिए पूजा मानता की. बौद्ध, सांख्यादिक संन्यासी, भगत, लिंगिये, योगी, फकीर, पीर इत्यादि अन्यदर्शनियोंके मंत्र तंत्र चमत्कारको देखकर, विना परमार्थ जाने मोहित हुआ, कुशास्त्र पढा, सुना. श्राद्ध, संवत्सरी, होली, राखडीपुनम, राखी, अजाएकम, प्रेतदूज, गौरीतीज, गणेशचौथ, नागपंचमी, स्कंदषष्ठी, झीलणषष्ठी सील सप्तमी दुर्गाष्टमी, रामनवमी, विजया दशमी, व्रत एकादशी, वामन द्वादशी, वत्सद्वादशी, धन तेरस, अनंत चौदश, शिवरात्री, काली चौदस, अमावस्या, आदित्यवार, उत्तरायण, याग, भोगादिकिये कराये, करते को भला माना. पीपलमें पानी डाला, डलावया. कुवा, तलाव, नदी, द्रह, बावडी, समुद्र, कुंडउपर पुण्यनिमित्त स्नान और दान किया, कराया, अनुमोदन किया, शनिश्वर, माघमास, नवरात्रिका स्नान किया. नवरात्रिव्रत किया, अज्ञानियोंके माने हुए व्रतादि किये, कराये. वितिगिच्छाः— धर्मसंबंधी संदेह किया, जिन

वीतराग अरिहंत भगवान् धर्मके आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्ष मार्गदातार, इत्यादि गुणयुक्त जानकर पूजा नहीं, इसलोक, परलोकसंबंधी भोगवांच्छाके लिये पूजा की, रोगआंतक कष्टके आनेपर क्षीण वचन बोला, मानता मानी, महात्मा महासतीके आहार, पानीआदिकी निंदा की, मिथ्यादृष्टिकी पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा की, प्रतीति की, दाक्षिण्यतासे उसका धर्म माना, मिथ्यात्वको धर्म कहा इत्यादि श्रीसम्यकत्व व्रतसंबंधी जो कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहले स्थूल प्राणातिपात विरमणव्रतके पांच अतिचारः- " वह बंध छविच्छेए " द्विपद, चतुष्पदआदि जीवको क्रोधवश ताडन किया, घाव लगाया, जकडकर बांधा, अधिक बोझ लादा. निर्लांछन कर्मः—नासिका विंधवाई, कर्णछेदन करवाया, खसी किया, दाना, घास, पानीके समयसार वार न की. लेणदेणमें किसीके बदले किसीको भूखा रखा, पासे खडा होकर मरवाया, कैद करवाया. सडे हुए धानको विना शोधे काममें लिया, अनाज शोधे विना पिसवाया, धूपमें सुकाया. पानी यतनासे न छाना; ईंधन. लकडी, उपले, गोहेआदि विना देखे वाले, उसमें सर्प, विच्छू, कानखूजरा, किडी, मकौडीआदि जीवका नाश हूआ. किसी जीवको दवाया, दुःख दिया, दुःखी होते जीवको अच्छी जगहपर न रखा. चिल्ह, काग, कबूतरआदिके रहनेकी जगहका नाश किया. घौंसले तोडे, चलते, फिरते या अन्य कुछ काम करते निर्दयपना किया, भली प्रकार जीवरक्षा न की. विना छाने पानीसे स्नानादि कामकाज किया, कपडे धोये, यतनापूर्वक कामकाज न किया, चारपाई, खटोला, पीढा, पीढी आदि धूपमें रख, डंडेआदिसें झडकाये. जीव संसक्त जमीनको लींपी; दलते, कूटते, लिंपते या अन्य कुछ कामकाज करते

यतना की. अष्टमी, चौदसआदि तिथिका नियम तोडा; धूनी करवाई इत्यादि पहले स्थूल प्रणातिपात विरमणव्रत-संबंधी जो कोइ अतिचार, पक्षदिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रतके पांच अतिचार, "सहसा रहस्स दारे" सहसात्कारे बिना विचारे एकदम किसीको अयोग्य आल, कलंक दिया. स्वस्त्रीसंबंधी गुप्तबात प्रगट की, अथवा अन्य किसीका मंतभेद मर्म प्रगट किया. किसीको दुःखी करनेके लिए खोटी सलाह दी. झूटा लख लिखा, झूटी साक्षी दी, अमानतमें खयानत की, किसीकी घरोड वस्तू पीछी न दी. कन्या, गौ, भूमिसंबंधी लैन दैनमें, लडते, झगडते वादविवादमें मोटा झूट बोला. हाथ पैर आदिकी गाली दी. इत्यादि स्थूल मृषावाद विरमणव्रतसंबंधी जो कोइ अतिचार, पक्षदिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमणव्रतके पांच अतिचार "तेनाहडप्पओगे" घर, बाहिर, खेत, खलामें बिना मालिकके भेजे वस्तु ग्रहण की, अथवा बिना आज्ञा अपने काममें ली चोरीकी वस्तु ली, चोरको सहायता दी, राज्यविरुद्ध कर्म किया, अच्छी, बुरी, सजीव, निर्जीव, नई, पुरानी वस्तुका भेलसंभेल किया जकातकी चोरी की, लेते देते तराजूकी दंडी चढाई, अथवा देते हुए कमती दिया, लेते हुए अधिक लिया रिशवत खाई, विश्वासघात किया, ठगी की, हिसाब कितावमें किसीको धोखा दिया. माता, पिता, पुत्र, मित्र, स्त्रीआदिके साथ ठगी कर किसीको दिया, अथवा पुंजी अलाहदा रखी, अमानत रखी हुई वस्तुसे इन्कार किया. किसीको हिसाब, कितावमे ठगा, पडीहुइ चीज उठाई इत्यादि स्थूल अदत्ता-

दान विरमण व्रतसंबंधी जो कोइ अतिचार, पक्षदिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

चौथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमन विरमणव्रतके पांच अतिचार "अप्परिगहियाइत्तर" परस्त्री गमन किया, अविवाहिता, कुमारी, विधवा, वेश्यादिकसे गमन किया, अनंगक्रीडा की. कामआदिकी विशेष जाग्रति की. अभिलाषासे सरागवचन कहा. अष्टमी, चौदशआदि पर्वतिथिका नियम तोडा. स्त्रीके अंगोपांग देखे, तीव्र अभिलाषा की, कुविकल्प चिंतवन किया, पराये नाते जोडे, गुड्डे गुड्डियोंका विवाह किया, वा कराया. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, स्वप्न, स्वप्नांतर हुआ, कुस्वप्न आया, स्त्री, नट, विट, भांड, वेश्यादिकसे हास्य किया, स्वस्त्रीमें संतोष न किया इत्यादि स्वदारासंतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार, पक्षदिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानेत लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पंचमे स्थूल परिग्रहपरिमाणके पांच अतिचार "धण धन्न खित्त वत्थू" धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, सोना चांदी, वर्तनआदि. द्विपदः-दास, दासी, नौकर. चतुष्पद-गौ, बेल, घोडादि नव प्रकारके परिग्रहका नियम न लिया, लेकर बढाया, अथवा अधिक देखकर, मूर्च्छावश माता, पिता, पुत्र, स्त्रीके नाम किया; परिग्रहका प्रमाण किया नहीं, करके भूलाया, याद न किया इत्यादि स्थूल परिग्रह परिमाण व्रतसंबंधी जो कोइ अतिचार, पक्षदिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

छट्ठे दिक् परिमाणव्रतके पांच अतिचार "गमणस्सउ परिमाणे" उर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यगदिशि जाने, आनेके नियमीत प्रमाण उपरांत भूलसे गया, नियम तोडा प्रमाण

उपरांत सांसारिक कार्यके लिये अन्य देशसें वस्तु मंगवाई, अपने पाससें वहां भेजी, नौका, जहाजादि द्वारा व्यापार किया, वर्षाकालमें एक ग्रामसे दूसरे ग्राममें गया, एकदिशा-के प्रमाणको कम करके, दूसरी दिशाके प्रमाणको अधिक किया, इत्यादि छट्ठे दिक्परिमाण व्रतसंबंधी जो कोइ अति-चार, पक्षदिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

सातमें भोगोपभोगव्रतके भोजनआश्री पांच, और कर्म-आश्री पंद्रह अतिचार, "सचित्तेपडीवद्धे" सचित्त खान पानकी वस्तु नियमसे अधिक अंगीकार की, सचितसें मिली हुइ वस्तु खाई, तुच्छऔषधिका भक्षण किया. अपक्व आहार, दुपक्वआहार किया. कोमल इमली, वूँट, भुट्टे फलियां आदि वस्तु खाई. सच्चित्त १ दव्व २ विगई ३, वाहण ४ तंवोल ५ वत्थ ६ कुसुमेसु ७। वाहण ८ सयण ९ विलेवण १०, वंभ ११ दिसि १२ न्हाण १३ भत्तेसु १४ ॥१॥ यह चौदह नियम लिये नहीं, लेकर भुलाये, वड, पीपल, पिलंखण, कठुंवर, गूलर, यह पांच फल, मदिरा, मांस, शहद, मक्खन, यह चार महाविगई, वरफ, ओले, कच्ची मिट्टी, रात्रिभोजन, वहुवीजाफल, अचार, घोलवडे, द्विदल, वैंगण, तुच्छफल, अजानाफल, चलितरस, अनंतकाय, यह वावीस अभक्ष्य, सूरन, जिमीकंद, कच्ची हलदी, सतावरी, कच्चा नरकचूर, अदरक, कुवारपाठ, थोर, गिलोय, लसन, गाजर, गटा, प्याज, गोंगलु, कोमलफल, फूल, पात्र, थेगी, हरामोत्था, अमृतवेल, मूली, पदवहेडा, आलु, कचालु, रतालु, पिंडालुआदि अनंतकायका भक्षण किया. सूर्यो-दयसें पहेले भोजन किया. तथा कर्मतः पंद्रह कर्मादान इंगा-लकम्मे, वणकम्मे, साडिकम्मे, भाडिकम्मे, फोडीकम्मे यह पांच कर्म, दंतवाणिज्ज, लक्खवाणिज्ज, रसवाणिज्ज, केस-वाणिज्ज विसवाणिज्ज यह पांच वाणिज्ज, जंतपिल्ल-

णकम्म, निल्लंछनकम्म, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसो सणया, असइपोसणया यह पांच सामान्य, एवं कुल पंद्रह कर्मादान, महा आरंभ किये, कराये, करतेको अच्छा समझा. श्वान, बिल्लीआदि पोषे, पाले, महासावद्य पापकारी कठोर काम किया. इत्यादि सातमे भोगोपभोग व्रतसंबंधी जो कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते,अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

आठमें अनर्थदंडके पांच अतिचार, "कंदप्पे कुक्कुइए" कंदर्पः—कामाधीन होकर नट, विट, वेश्यादिकसें हास्य, खेल, क्रीडा, कुतुहल किया; पुरुषके हावभाव, रूप, शृंगार संबंधी वार्ता की, विषयरसपोषक कथा की. स्त्रीकथा, देश कथा, राजकथा, भक्तकथा, यह चार विकथा की. पराई भांजगढ की. किसीकी चुगलखोरी की. आर्त्तध्यान, रौद्र ध्यान ध्याया. खांडा, कटार, काशि, कुहाडी, रथ, उखल, मुसल, अग्नि, चक्कीआदिक वस्तु दाक्षिण्यता वशासे किसी-को मांगी दी. पापोपदेश किया. अष्टमी, चतुर्दशीके दिन दलने पीसनेका नियम तोडा.मूर्खतासे:असंबद्ध वाक्य बोला, प्रमादाचरण सेवन किया. घी, तैल, दूध, दही, गुड, छाछ आदिका भाजन खुला रखा, उसमें जीवादिका नाश हुआ. बासी मक्खन रखा, और तपाया, न्हाते, धोते, दातण करते जीव अकुलित मोरीमें पानी डाला. झुलेमें झूला, जुआ खेला, नाटकआदि देखा, ढोर डंगर खरीदवाये, कर्कशवचन कहा, किचकिची ली, ताडना, तर्जना की, मत्सरता धारण की, श्राप दिया; भैसा, मेंढा, मुरगा, कुत्तेआदिक लडवाये, या इनकी लडाई देखी, ऋद्धिमान्की ऋद्धि देख ईर्षा की. मिट्टी नमक, धान, विनेले, विनाकारण मसले. हरीवनस्पति खुंदी, शस्त्रादिक बनवाये; रागद्वेषके वशसे एकका भला चाहा, एकका बुरा चाहा, मृत्युकी वांछा की. मैना, तोते, कबुतर बटेर, चकोरादि पक्षियोंको पींजरेमें डाला. इत्यादि आठमें

अनर्थदंड विरमणव्रत संबंधी जो कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं॥

नवमे सामायिक व्रतके पांच अतिचार "तिविहे दुप्पणि हाणे" सामायिकमें संकल्प, विकल्प किया, चित्त स्थिर न रखा, सावद्य वचन बोला, प्रमार्जन किये विना शरीर हलाया, इधर उधर किया, शक्तिके होते हुए सामायिक न किया, सामायिकमें खुले मुह बोला, नींद ली, विकथा की, घर संबंधी विचार किया, दीपक या विजलीका प्रकाश शरीर पर पडा, सचित्त वस्तुका संघट्टा हुआ, स्त्री, तिर्यंचआदिका निरंतर परस्पर संघट्टा हुआ, मुहपत्ति संघट्टी, सामायिक अधुरा पारा, विना पारे उठा इत्यादि नवमे सामायिक व्रत-संबंधी जो कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

दसमे देशावगासिक व्रतके पांच अतिचार "आणवणे पेसवणे" आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाई, रुवाणुवाई, वहियापुग्गलपक्खेवे. नियमित भूमिमें वाहिरसें वस्तु मंगवाई, अपने पाससे अन्यत्र भिजवाई, खुंखारादि शब्द करके, रुप दिखाके वा कंकरादि फेंककर, अपना होना मालूम किया इत्यादि दसमे देशावगाशिक व्रतसंबंधी जो कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

ग्यारहवे पौषधोपवासव्रतके पांच अतिचार "संथारुच्चारविहि" अप्पडिलेहिअ दुप्पडिलेहिअ सिज्जासंथारए, अप्पडिलेहिअ दुप्पडिलेहिअ उच्चारपासवण भुमि, पौषधलेकर सोनेकी जगह विना पुंजे, प्रमार्जे सोया, स्थंडिलादिकी भूमि भली प्रकार शोधी नही, लघुनीति, वडीनीति करने

या परठने समय "अणुजाणहजस्सुग्गह" न कहा, परठे बाद तीन वार वोसिरे वोसिरे न कहा. जिन मंदिर और उपाश्रयमें प्रवेश करते हुए निसीहि, और वाहिर निकलते आवस्सही तीनवार न कही. वस्त्रादि उपधिकी पडिलेहणा न की. पृथवीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकायका संघट्टा हुआ, संथारा पोरिसी पढनी भुलाई. विना संथारे जमीनपर सोया, पोरिसीमें नींद ली, पारनादिकी चिंता की, समयसर देववंदन न किया, प्रतिक्रमण न किया, पौषध देरीसे लिया और जल्दीसे पारा, पर्वतिथिको पोषध न लिया इत्यादि ग्यारहवें पौषधव्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

वारहवे अतिथिसंविभाग व्रतके पांच अतिचार "सच्चित्तेनिक्खिवणे" सचित्तवस्तुके सघट्टेवाला अकल्पनीय आहारपाणी साधु, साध्वीको दिया. देनेकी इच्छासे सदोष वस्तुको निर्दोष कही, देनेकी इच्छासे पराई वस्तुको अपनी कही, न देनेकी इच्छासे निर्दोष वस्तुको सदोष कही, न देनेकी इच्छासे अपनी वस्तुको पराई कही. गोचरीके वक्त इधर उधर हो गया, गोचरीका समय टाला, वेवक्त साधुमहाराजकी प्रार्थना की. आये हुए गुणवानकी भक्ति न की. शक्तिके होते हुए स्वामीवात्सल्य न किया. अन्य किसी धर्मक्षेत्रको पडता देख मदद न की, दीन दुःखीकी अनुकंपा न की इत्यादि वारहवे अतिथिसंविभागव्रतसंबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

संलेषणाके पांच अतिचार "इहलोए परलोए" इह लोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जिविआसंसप्पओगे मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे, धर्मके प्रभावसे

इसलोक संबंधी राजऋद्धि भोगादिकी वांछा की, परलोकमें देवदेवेंद्र, चक्रवर्तीआदि पदवीकी इच्छा की, सुखी अवस्थामें जीनेकी इच्छा की, दुःख आनेपर मरनेकी वांछा की. कामभोग की वांछा की इत्यादि संलेषणा व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सुक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

तपाचरके वारह भेद, छ वाह्य, छ अभ्यंतर "अणसण मुणोयरिया" अनशनः—शक्तिके होते हुए पर्वतिथिको उपवासादि तप न किया. उनोदरीः-दो चार ग्रास कम न खाये. वृत्तिसंक्षेपः—द्रव्य खानेकी वस्तुओंका संक्षेप न किया, रस विगय त्याग न किया. कायक्लेशः—लोचादि कष्ट सहन न किया. संलीनताः-अंगोपांगका संकोच न किया, पच्चक्खाण तोडा, भोजन करने समय एकासणा, आंविल प्रमुखमें चौकी, पटडा, अखलादि हिलता ठीक न किया, पच्चक्खाण पारना भूलाया, वैठते नवकार न पढा, उठते पच्चक्खान न किया; निवि, आंविल, उपवासादि तपमें कच्चा पानी पिया, वमन हुआ इत्यादि वाह्य तपसंवंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

अभ्यंतर तप "पायच्छित्तं विणओ" शुद्धांतःकरणपूर्वक गुरुमहाराजसे आलोचना न ली, गुरुकी दी हुई आलोचना संपूर्ण न की, देव, गुरु, संघ, साधर्मिका, विनय न किया वाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वीआदिकी वेयावच्च न की, वांचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पांच प्रकारका स्वाध्याय न किया, धर्मध्यान, शुक्लध्यान ध्याया नहीं, आर्तध्यान, रौद्रध्यान, ध्याया. दुःखक्षय, कर्मक्षय निमित्त दस, वीस लोगस्सका काउस्सग्ग न किया इत्यादि अभ्यंतरतपसंवंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिव-

समें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सव मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

· वीर्याचारके तीन अतिचार पढते, गुणते, वीनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यमें मन, वचन, कायाका बलवीर्य, पराक्रम फोरा नहीं. विधिपूर्वक पंचांग खमासमण न दिया, द्वादशावर्त्त वंदनका विधी भली प्रकार न किया, अन्याचित्त निरोदरसे वैठा. देववंदन, प्रतिक्रमणमें जल्दी की. इत्यादि वीर्याचार संवंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सव मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

नाणाइ अट्ठपइवय, समसंलेहण पन्नर कम्मेसु ।
वारस तव विरिअतिगं, चउव्वीसं सय अइआरा ॥ १ ॥

" पडिसिद्धाणं करणे " प्रतिषेधः—अभक्ष, अनंत काय, वहुवीजभक्षण, महारंभ, परिग्रहादि किया, देवपूजनादि षट्कर्म, सामायिकादि छ आवश्यक, विनयादिक अरिहंतकी भक्तिप्रमुख करणीय कार्य किये नहीं. जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचारकी सद्दहणा न की. अपनी कुमतिसे उत्सुत्र प्ररुपणा की. तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथून परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य यह अठारह पापस्थान किये, कराये, अनुमोदे. दिन कृत्य, प्रतिक्रमण, विनय, वैयावृत्य न किया औरभी जो कुछ वितरागकी आज्ञासे विरुद्ध किया, कराया, करतेको भला जाना इन चार प्रकारके अतिचारमें जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकार मिच्छामि दुक्कडं ॥ एवंकारे श्रावकधर्म सम्यक्त्वमूल वारहव्रतसंबंधी एकसो चोवीस अतिचारोंमेसें जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें

सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सव मन, वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि पक्खिय दुच्चितिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इच्छकारि भगवन् पसायकरी पक्खि तपप्रसाद करावोजी.

गुरुहोवेतो वो कहे नहीं तो आपही नीचे मुजब कहे.

चउत्थेणं एक उपवास, दो आंबिल, तीन नीवि चार एकासना, आठ वेआसना, दो हजार सज्झाय यथाशक्ति तप करके पहोंचानाजी. प्रवेश किया हो तो " पइट्ठिओ " कहे और करनेका हो तो " तहत्ति " कहे और न करनेका हो तो मात्र मौनही रहना.

(फिर दो खमासण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए

सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पत्तेअं खामणेणं अब्भुट्ठिओहं अब्भितर पक्खिअं खामेउं ? "इच्छं" खामेमि पक्खिअं पन्नरसदिवसाणं, पन्नरसराइआणं, जंकिंचि अपत्तियं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणय परिहिणं सुहुमो वा बायरो वा तुब्भे जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइकम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए असायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइकारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताण वहुसुभेण भे पक्खोवइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसा-

यणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं पडिक्कमुं, सम्मं पडिक्कमामि "इच्छं"

(ऐसा कहके फिर).

करेमिभंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ अइआरो कओ काइओ, वाइओ, माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाण चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि सूत्र पढुं? 'इच्छं'

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरिआणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहुणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

(यह नवकार तीन दफे गिनना, फिर साधु हो तो वह पक्खिसूत्र कहे और न होवे तो श्रावक वंदितासुत्र कहे, वह नीचे मुजब)

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥
जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ।
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥

दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ३ ॥
जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥
आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
अभियोगे अ नियोगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ५ ॥
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।
सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ६ ॥
छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे य जे दोसा ।
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे ।
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ८ ॥
पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥
वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ।
पढमवयस्सऽइयारे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १० ॥
बीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलियवयणविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
बीयवयस्स अइयारे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १२ ॥
तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ ॥
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ ।
कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १४ ॥
चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमणविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे ।
चउत्थवयस्स अइयारे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १६ ॥
इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि ।

परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥
धण धन्न खित्तवत्थु, रुप्प सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे ।
दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १८ ॥
गमणस्सउ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च
वुड्ढि सइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥
मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ।
उवभोगे परिभोगे, बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥
सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअंच आहारे ।
तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२१॥
इंगाली वण-साडी भाडी, फोडी सुवज्जए कम्मं ।
वाणिज्जं चेव दंत, लक्खरसकेसवीस वीसयं ॥ २ ॥
एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ।
सरदह तलायसोसं, असइ पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥
सत्थग्गि मुसलं जंतग, तण कट्ठे मंत मूल भेसज्जे ।
दिन्ने दवा विएवा, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २४ ॥
न्हाणुव्वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरुव रसं गंधे ।
वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २५ ॥
कंदप्पे कुक्कइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते ।
दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥
तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहासइविहुणे ।
सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ।
देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥
संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणा भोए ।
पोसहविहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥
सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ।
कालइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥
सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे असंजएसु अणुकंपा ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥

साहुसु संविभागो, न कओ तवचरण करण जुत्तेसु।
संते फासुयदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥
इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसप्पओगे।
पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥
काएण काइअस्सं, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइयारस्स ॥३४॥
वंदणवयसिक्खागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु।
गुत्तीसु अ समीइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥
सम्मदिट्ठीजीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि।
अप्पोसि होई बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च।
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥
जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया।
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥
एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोस समज्जिअं।
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥
कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे।
होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ भरुव्व भारवहो ॥४०॥
आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होई ॥
दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥
आलोअणा बहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमणकाले।
मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥
तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥
अब्भुट्ठिओमि आराहणाए। विरओमि विराहणाए।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥
जावंति चेइआइं, ॥४४॥ जावंत केवि साहू, ॥४५॥
चिर संचिय पाव पणासणीए, भवसय सहस्स महणीए
चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलतु मे दिअहा ४६।
मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ।

सम्मद्दिट्ठिदेवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥
खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥
एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५० ॥

(फिर सुअदेवयाकी स्तुति नीचे मुजब कहनी.)

सुअदेवया भगवइ, नाणावरणीय कम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं जेसिं सुयसायरे भत्ती ॥१॥

(फिर नीचे बैठे दाहिणा ढीचण खडा कर नीचे मुताबिक कहना.)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहुणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ करेमि भंते सामाइयं, सावज्जजोगं पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणेदंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावग धम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥
जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।
सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥

दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ३ ॥
जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥
आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ५ ॥
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।
सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ६ ॥
छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे ।
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ८ ॥
पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥
वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ।
पढमवयस्स इयारे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १० ॥
बीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलियवयणविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
बीयवयस्स अइयारे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १२ ॥
तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ ।
कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १४ ॥
चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमणविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥
अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे ।
चउत्थवयस्स अइयारे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १६ ॥
इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि ।

परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥
धण धन्न खित्तवत्थु, रुप्प सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे ।
दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १८ ॥
गमणस्सउ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।
वुड्ढि सइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥
मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ।
उवभोगे परिभोगे, बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥
सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअंच आहारे ।
तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २१ ॥
इंगाली वण-साडी भाडी, फोडी सुवज्जए कम्मं ।
वाणिज्जं चेव दंत, लक्खरसकेसविस विसयं ॥ २२ ॥
एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ।
सरदह तलायसोसं, असइ पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥
सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कट्ठे मंत मूल भेसज्जे ।
दिन्ने दवा विएवा, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २४ ॥
न्हाणुवट्टण वन्नग, विले-वणे सद्दरुव रस गंधे ।
वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २५ ॥
कंदप्पे कुक्कइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते ।
दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥
तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहासइविहुणे ।
सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥
आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ।
देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥
संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणा भोए ।
पोसहविही विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥
सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ।
कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥
सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे असंजएसु अणुकंपा ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥

साहुसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु ।
संते फासुयदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥
इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपओगे ।
पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥
काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥
वंदणवयसिक्खागा,- रवेसु सन्नाकसायदंडेसु ।
गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥
सम्मदिट्ठीजीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि ।
अप्पो सि होई बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ।
खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥
जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया ।
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥
एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं ।
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥
कयपावो वि मणुस्सो,आलोइअ निंदिअ य गुरुसगासे ।
होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥४०॥
आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।
दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥
आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले ।
मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥
तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥
अब्भुट्ठिओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥
जावंति चेइआइं०॥४४॥ जावंत के वि साहू० ॥ ४५ ॥
चिर संचिय पाव पणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए ।
चउवीसजिणविणिग्गय,-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥
मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।

सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ।
असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥
खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥ ४९ ॥
एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिउं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं. ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(फिर बारह लोगस्सका चंदेसुनिम्मलयरातक काउस्सग्ग करना न आवे तो अडेतालीस नवकार गिनने.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तियवंदियमहिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर मुहपत्ति पडिलेहकर दो खमासमण देना.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे पक्खो वइक्कंतो जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइकारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं

खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खिओ वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइकारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् समत्ताखामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भितर पक्खिअं खामेउं ? " इच्छं " खामेमि पक्खिअं एक पक्खाणं पनरसदिवसाणं, पनरसराइआणं, जंकिंचि अपत्तियं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणयपरिहिणं सुहुमो वा वायरो वा तुब्भे जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि खामणा खामुं ? " इच्छं "

(ऐसा कहके प्रत्येक खामणाके पहेले एक खमासमण देकर दाहिना हाथ चखला वा आसनपर रख शिर झुकाकर साधु न होवे तो नीचे मुताबिक चार खामणा देना.)

॥१॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि खामणा खामुं ? " इच्छं. "

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं, सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

॥ २ ॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि खामणा खामुं ? " इच्छं. "

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं, सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

॥ ३ ॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि खामणा खामुं ? " इच्छं. "

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं, सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

॥ ४ ॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि खामणा खामुं ? " इच्छं. "

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं, सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छामो अणुसट्ठिं पक्खिअं सम्मत्तं देवसिअं भणामि.

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पाकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए

लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसिअं खामेउं ? " इच्छं " खामेमि देवसिअं जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणयपरिहिणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्मा क्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

आयरियउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ।
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ २ ॥
सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्सका काउस्सग्ग करना, न आवे तो आठ नवकार गिनने.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तियवंदियमहिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा
आरुग्गवोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंत चेइआणं करेमि काउसग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धीईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचा-

लेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका न आवे तो चार नवकारका काउस्सग्ग करना फिर)

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुद्दीवे अ ।
भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥
तमतिमिरपडलविद्धं-,सणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स ।
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥
जाइजरामरणसोगपणासणस्स,
कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स ।
को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स,
धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥
सिद्धे भो पयओ णमो जिणमये नंदी सया संजमे ।
देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए ॥
लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं ।
धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धीईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका न आवे तो चार नवकारका काउस्सग्ग करना. फिर)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥

इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥
उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥
चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।
परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

सुअणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउसग्ग कर[illegible]र्हत ॥ [illegible]र्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहकर फिर स्तुति कहनी)

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम् ।
विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्व साधूनाम् ॥ १ ॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः कहकर फिर स्तुति कहनी)

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ॥
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

(फिर छट्ठे आवश्यककी मुहपत्ति पडिलेहके दो खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं आवासिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्क-

मणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक चउविसत्था। वंदनक पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है जी

(ऐसा कहकर फिर)

इच्छामो अणुसट्ठिं नमोखमासमणाणं, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

(पुरुषवर्ग नमोस्तु वर्द्धमानाय और स्त्रियां संसारदावाकी तीन स्तुति कहेवे)

नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्धमानाय कर्मणा।
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुर्तीर्थिनाम् ॥ १ ॥
येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायःक्रमकमलावलिं दधत्याः।
सदृशैरतिसंगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्राः॥२॥
कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैन मुखांबुदोद्गतः।
स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं वोहियाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ।
संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् स्तवन भणुं ?
" इच्छं "

(नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ऐसा कहके अजित शांतिका स्तवन बोलना.)

(स्तवन)

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ।
जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि॥१॥ (गाहा)
ववगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे ।
निरुवयमहप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥२॥ (गाहा)
सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं ।
सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो)
अजिअजिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ।
तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम संति कित्तणं॥४॥
(मागहिआ)

किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं ।
अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं ।
अजिअस्स य संतिमहामुणिणो वि अ संतिकरं ।
सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं ॥५॥ (आलिंगणयं)
पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइ य विमग्गह सुक्खकारणं ।
अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जह ॥ ६ ॥
(मागहिआ)

अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं,
सुरअसुरगरुलभुयगवइपययपणिवइयं ।
अजिअमहमवि अ, सुनयनयनिउणमभयकरं,

१ पवज्जहा, दीर्घत्वमार्षत्वात्.

सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥
(संगययं)

तं च जिणुत्तम मुत्तमनित्तमसत्तधरं,
अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं,
संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं,
संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ (सोवाणयं)

सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थवित्थिन्नसंथियं, थिरसरित्थवच्छं मयगलीलायमाणवरगंधहत्थिपत्थाणपत्थियं संथवारिहं । हत्थिहत्थबाहुं धंतकणगरुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचियसोमचारुरूवं, सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥ ९ ॥
(वेड्ढओ)

अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं ।
पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥
(रासालुद्धओ)

कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो,जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो । चउदसवररयणनवमहानिहिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई, चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी छन्नवइगामकोडीसामी आसिजो भारहंमि भयवं ॥ ११ ॥ (वेड्ढओ)

तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया ।
संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ (रासानंदियं)

इक्खाग विदेहनरीसर नरवसहा मुणिवसहा,
नवसारयससिसकलाणण विगयतमा विहुअरया ।
आजि उत्तम तेअगुणेहिं महामुणिअमिअबला विउलकुला,
पणमामि ते भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं ॥ १३ ॥
(चित्तलहा)

देवदाणविंद चंदसुरवंद हट्ठतुट्ठजिट्ठपरम-
लट्ठरूव धंतरुप्पपट्टसेयसुद्धनिद्धधवल-
दंतपंति संति सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर ।
दित्ततेअवंद धेअ सव्वलोअभाविअप्पभाव णेअ पइस मे
समाहिं ॥१४॥ (नारायओ)

विमलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरकराइरेअतेअं ।
तिअसवइगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥ १५ ॥
(कुसुमलया)

सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं ।
तवसंजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥
(भुअगपरिरिंगिअं)

सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी,
तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी ।
रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई,
सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ (खिज्जिअयं)

तित्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं,धीरजणथुअच्चिअं चुअकलि-
कलुसं । संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणि
सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ (ललिअयं)

विणओणयसिररइअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं,
विबुहाहिवधणवइनरवइथुअमहिअच्चिअं बहुसो ।
अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पभं तवसा ।
गयणंगणवियरणसमुइअचारणवंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥
(किसलयमाला)

असुरगरुलपरिवंदिअं, किन्नरोरगनमंसिअं ।
देवकोडिसयसंथुअं, समणसंघपरिवंदिअं ॥२०॥ (सुमुहं)
अभयं अणहं, अरयं अरुयं ।
अजियं अजियं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥ (विज्जुविलसिअं)

आगया वरविमाणदिव्वकणग,-रहतुरयपहकरसएहिं हुलिअं ।. ससंभमोअरणखुभिअलुलिअचल,-कुंडलंगयतिरीडसोहंत मउलिमाला ॥ २२ ॥ (वेड्ढओ)

जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ताभत्तिसुजुत्ता,
आयरभूसिअसंभमपिंडिअसुट्ठुसुविम्हिअसव्वबलोघा ।
उत्तमकंचणरयणपरूविअभासुरभूसणभासुरिअंगा,
गायसमोणय भत्तिवसागय, पंजलिपेसियसीसपणामा ॥२३॥
(रयणमाला)

वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं ।
पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया
॥२४॥ (खित्तयं)

तं महामुणिमहं पि पंजली, रागदोसभयमोहवज्जिअं ।
देवदाणवनरिंदवंदिअं, संतिमुत्तममहातवं नमे ॥ २५ ॥
(खित्तयं ।)

अंबरतरविआरिणिआहिं, ललिअहंसवहुगामिणिआहिं ।
पीणसोणिथणसालिणिआहिं, सकलकमलदललोअणिआहिं
॥ २६ ॥ (दीवयं)

पीणनिरंतरथणभरविणमिअगायलआहिं,
मणिकंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं ।
वरखिंखिणिनेउरसतिलयवलयविभूसणिआहिं,
रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥ २७ ॥(चित्तक्खरा)

देवसुदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्तिसंन्निविट्ठवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥
(नारायओ ।)

तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं ।
धुयसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥२९॥ (नंदिअयं ।]

थुअवंदिअस्सा रिसिगणदेवगणेहिं,

तो देववहूहिं पयओ पणमिअस्सा ।
जस्सजगुत्तमसासणअस्सा भत्तिवसागयपिंडिअयाहिं ।
देववरच्छरसावहुआहिं सुरवररइगुणपंडियआहिं ॥ ३० ॥
(भासुरयं)

वंससद्दतंतितालमेलिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए-अ, सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीयपायजालघंटिआहिं । वलय-मेहलाकलावनेउराभिरामसद्दमीसए कए अ, देवनट्टिआहिं हावभावविब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं । वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं, पसंतसव्वपावदोसमेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥
(नारायओ)

छत्तचामरपडागजूअजवमंडिआ,
झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा ।
दीवसमुद्दमंदरदिसागयसोहिआ,
सत्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकिया ॥ ३२ ॥ (ललिअयं।)

सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा ।
पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा, रिसीहिं जुट्ठा ॥३३॥
(वाणवासिआ ।)

ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया ।
संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया ३४
(अपरांतिका ।)

एवं तवबलविउलं, थुअं मए अजिअसंतिजिणजुअलं ।
ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥
(गाहा ।)

तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं ।
नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसा वि अ प्पसायं ॥३६॥
(गाहा ।)

तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं ।

परिसा वि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥
(गाहा।)

पक्खिय चाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो।
सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो॥ ३८ ॥ (गाहा)
जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओकालं पि अजिअसंतिथअं।
न उ हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति ॥ ३९ ॥
(गाहा।)

जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे।
ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥४०॥ (गाहा।)
वरकनकशंखविद्रुम,—मरकतघनसन्निभं विगतमोहम्।
सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं वन्दे ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। भगवान हं।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। आचार्य हं।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। उपाध्याय हं।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। सर्वसाधु हं।

(फिर दाहिना हाथ चखला अथवा आसनपर रखके वडील हो वह अड्ढाइज्जेसु कहे.)

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमिसु, जावंत केवि साहू रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा, पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्ससीलंगधारा, अक्खु(क्खु) यायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअ-पायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं।

---

१ संवच्छरं राइए अ दिअहेअ इति पाठान्तरम्

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव-कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार लोगस्स न आवे तो सोलह नवकारका काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ॥
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पास तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा
आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं ? " इच्छं "

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय पढुं ? " इच्छं "

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उव-

ज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचनमुक्कारो सव्व-पावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

उवसग्गहरं-पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥
विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥
संसारदावानलदाहनीरं. संमोहधूलीहरणेसमीरं ।
मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं॥ १ ॥

भावावनामसुरदानवमानवेन,
चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ।
संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि,
कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥
बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं ।
जीवाहिंसाऽविरललहरीसंगमागाहदेहं ।
चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं ।
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला,
झंकारारावसारामलदलकमलागारभूमिनिवासे ।
छायासंभार सारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे,
वाणीसंदोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारं ॥ ४ ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् दुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि॥

(चार लोगस्स वा सोलह नवकारका काउसग्ग करना गुरु अथवा वडीलकी आज्ञा जिसको मिली हो वह नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहकर वडी शांति कहे.)

भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्,
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः।
तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा,-
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः॥ १॥

भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य, सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पन्थाः इति भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय [अधुना] शान्तिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्व-

ज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः ॥

[ॐ]ऋषभ-अजित-संभव-अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल-अनन्त-धर्म शान्ति-कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्द्धमानान्ताः जिनाः शान्ताः शान्तिकराः भवन्तु स्वाहा ।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।

ॐ [श्री ह्री] ह्रीं श्रीं धृति-मति कीर्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्या-साधन-प्रवेशन-निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेंद्राः ।

ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति-वज्रशृंखला-वज्रांकुशी-अप्रतिचक्रा-पुरुषदत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गान्धारी-सर्वास्त्रा-महाज्वाला-मानवी-वैरुट्या-अच्छुप्ता-मानसी-महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु, तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।

ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्यांगारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहु-केतुसहिताः सलोकपालाः सोम-यम वरुण-कुबेर-वासवादित्य-स्कन्द विनायकोपेताः[1] ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीणकोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ।

ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृद्-स्वजन-संबन्धि-बन्धुवर्ग-सहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः अस्मिँश्च भूमण्डलायतननिवासिसाधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोपसर्ग-

---

१ विनायकाः इति पाठः

व्याधिदुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ।

ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मांगल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि [दुरितानि] शाम्यन्तु दुरितानि [पापानि] शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने ।
त्रैलोक्यस्यामराधीश,-मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥
शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ।
शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥
उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ।
संपादितहितसंप,-न्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥
श्रीसंघजगज्जनपद,-राजाधिपराजसन्निवेशानाम् ।
गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥

श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु, [श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु], श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, श्रीपौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु, श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु, श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ।

एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा, कुंकुमचन्दनकर्पूरागुरुधूपवासकुसुमाञ्जलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणाऽलंकृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा, शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ।

नृत्यन्ति नित्यं मणिपुष्पवर्षं,
सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि ।
स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्,
कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके[1] ॥ १ ॥

---

[1] "जन्माभिषेके" इति पाठान्तरम्

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवन्तु लोकाः॥ २॥
अहं तित्थयरमाया, शिवादेवी तुम्हनयरनिवासिनी।
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतुस्वाहा३॥
उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे॥ ४॥
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम्॥ ५॥
(फिर शेष सर्व काउसग्ग पारे और एक जन प्रगट लोगस्स कहे)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली॥ १॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥ २॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥ ३॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च॥
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥ ४॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥ ५॥
कित्तियवंदियमहिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥ ६॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥ ७॥
॥ इति श्री पाक्षिक पतिक्रमणका विधि संपूर्ण॥

अब चउमासी प्रतिक्रमणका विधि नीचे मुताबिक फेरफारसे समझना॥

(१) पाक्षिक प्रतिक्रमणमें खमासमणमें जिस जिस जगह "पक्खो वइक्कंतो, पक्खिअं वइक्कम्मं" और "पक्खिआए आसायणाए" ऐसा कहते उस जगह "चउ-

१ भवतु लोकः इति पाठान्तरम्

मासो वइक्कंतो " " चउमासिअं वइक्कम्मं " और " चउमासिआए आसायणाए " ऐसा कहना.

(२) वंदित्तासूत्रमें " पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं " की जगह "पडिक्कमे चउमासिअं सव्वं " ऐसा कहना.

(३) अतिचारमें " पाक्षिक अतिचार पढुं ? पक्ष दिवसमें जो कोई अतिचार लगा हो " उस जगह " चउमासिअ अतिचार पढुं ? " और " चउमासी दिवसमें जो कोइ अतिचार लगा हो " ऐसा कहना.

(४) पाक्षिक प्रतिक्रमणमें " पत्तेय खामणेणं, संबुद्धा खामणेणं, सम्मत्ता खामणेणं " वह प्रत्येकमें " एकपक्खाणं, पन्नरस दिवसाणं, पन्नरस राइआणं " कि जगह " चार मासाणं, आठ पक्खाणं, एकसो वीस राइदिवसाणं " ऐसा कहना और " पक्खिअं खामुं ? " कि जगह " चउमासिअं खामुं ?" ऐसा कहना.

(५) पाक्षिक प्रतिक्रमणमें " पक्खियं तपप्रसाद करोजी " वहां " चउत्थेणं एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवि, चार एकासना, आठ बेआसना, दो हजार सज्झाय, यथाशक्ति तप करके पहोंचाना " कि जगह "छट्ठेणं, दो उपवास, चार आयंबिल," छह निवि, आठ एकासना, सोलह बिआसना चार हजार सज्झाय यथाशक्ति तप करके पहोंचाना ऐसा कहना.

(६) " पाक्खिसूत्र पढुं ? " कि जगह " चउमासी सुत्र पढुं ? " ऐसा कहना.

(७) पाक्षिक प्रतिक्रमणमें बारह लोगस्सके काउस्सग्गकी जगह यहांपर बीस लोगस्सका काउस्सग्ग करना.

(८) फिर " इच्छामि ठामि " वगैरह सूत्रोमें जहां जहां " पक्खिअं शब्द आता है वहां वहां चउमासिअं " शब्द बोलना.

(९) जब चउमासीक प्रतिक्रमण पुरा होकर, देवसिक प्रतिक्रमणके प्रारंभमें उसकी संधिके वीचमें जो जो चउमासीक प्रतिक्रमण हो जैसा कि कार्तिक, फाल्गुन, ओर आसाढ वह चार मासमें जो जो काल पानी, कंबल, सुखडी, भाजीपाला और मेवामिठाई वगैरहका हो वह शास्त्रमें कहे मुताविक साधारण रीतसें सर्व लोगोंको जाननेके लिये दिखेलाते है.

१ कार्तिकचोमासा

१ गरम जलका काल—चार प्रहरका
२ कंवल काल—सूर्योदयके वाद और सूर्यास्तके पहेले चार घडी.
३ सुखडी वगैरहका काल—एक मास तक.
४ मेवामिठाइ, भाजीपालेका काल फाल्गुनचोमासेतक

२ फाल्गुनचोमासा

१ उष्ण जलका काल—पांच प्रहरका.
२ कंबलकाल—सूर्योदयक वाद और सूर्योदयके पहेले दो घडी.
३ सुखडी वगैरहका काल—२० दिन तक.
४ मेवामिठाइ, भाजीपालेका काल—८ मास तक

३ आषाढचोमासा

१ उष्ण जलका काल—तीन प्रहरका.
२ कंबलका काल—सूर्योदयके वाद और सुर्यास्तके पहेले छह घडी.
३ सुखडी वगैरहका काल—१५ पंद्रह दिन तक.
४ मेवामिठाइ, भाजीपालेका काल—चार मास तक न कल्पे.

———

अथ संवत्सरी प्रतिक्रमणका विधि



चउमासी प्रतिक्रमणसें नीचे मुताबिक फेरफार समझना

१ जिस जगह " चउमासिअं " है उस जगह " संवच्छरिअं " कहना.

२ चउमासी प्रतिक्रमणमें " पत्तेअखामणेणं, संबुद्धा खामणेणं, समत्ता खामणेणं" कहते है वहां संवच्छरी प्रतिक्रमणमें " बारह मासाणं चोवीस पक्खाणं तिनसो साठ राइदिवसाणं " ऐसा पाठ कहना

३ " चउमासी तप प्रसाद करोजी " की जगह " संवच्छरी तपप्रसाद करोजी " ऐसा कहके फिर " अट्ठंभत्तं, तीन उपवास, छह आयंबिल, नउ निवि, बारह एकासना, चौवीस बेआसना और छह हजार सज्झाय यथाशक्ति तप करके पहोंचाना," ऐसा कहना.

४ चउमासी प्रतिक्रमणके वीस लोगस्सके काउस्सग्गकी जगह यहांपर चालीस लोगस्स और एक नवकारका काउस्सग्ग करना लोगस्स न आवे तो एकसो साठ नवकार गिनने.

५ हरेक सूत्रमें जहां जहां " चउमासिअं " बोलनेका हो वहां वहां " संवच्छरिअं " बोलना.

इति श्री पाक्षिक, चाउमासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमणका विधि संपूर्ण ॥

(कोई जगह प्रतिक्रमणके बाद संतिकरं स्तवन बोलते है वह नीचे मुताबिक है, जिसको बोलना हो वह बोले)

॥ अथ संतिकर ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं ॥
समरामि भत्तपालग,-निव्वाणी गरुडकयसेवं ॥ १ ॥

ॐ सनमो विप्पोसहि,-पत्ताणं संतिसामिपायाणं ॥
झ्रौंस्वाहामंतेणं, सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥ २ ॥
ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं ॥
सौँह्रींनमो सव्वोसहि, पत्ताणं च देइ सिरिं ॥ ३ ॥
वाणीतिहुअणसामिणि, सिरिदेवीजक्खरायगणिपिडगा ॥
गहदिसिपालसुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ॥ ४ ॥
रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया ॥
वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ॥
अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीओ ॥ ६ ॥
जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंबरु कुसुमो ॥
मायंगविजयअजिंआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ॥७॥
छम्मुह पयाल किन्नर, गरुडो गंधव्व तह य जक्खिंदो ॥
कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगो ॥ ८ ॥
देवीओ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि कालि महाकाली ॥
अच्चुअ संता जाला, सुतारयासोअ सिरिवच्छा ॥ ९ ॥
चंडा विजयंकुसिं, प-न्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी ॥
वइरुट्ट छुत्त गंधारि, अंब पउमावई सिद्धा ॥ १० ॥
इअ तित्थरक्खणरया, अन्ने वि सुरासुरी य चउहा वि ॥
वंतरजोइणिपमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥ ११ ॥
एवं सुदिट्ठिसुरगण,-सहिओ संघस्स संतिजिणचंदो ॥
मज्झ वि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥१२॥
इअ संतिनाहसम्म, द्दिट्ठी रक्खं सरइ तिकालं जो ।
सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥
तवगच्छगयणदिणयर,-जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरूणं ।
सुपसायलद्धगणहर,-विज्जासिद्धी भणइ सीसो ॥ १४ ॥

---

१ " वइरुट्ट दत्त गंधारि " इत्यपि.

(इसके बाद सामायिक पारनेका विधी है वह नीचे मुताबिक)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणीज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि "इच्छं" इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे, जे मे जीवा विराहिआ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोही करणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका काउस्सग्ग करना, न आवे तो चार नवकार गिनने.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तियवंदियमहिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमुसुमूरणू ॥
सरसपिंअंगुवण्णु गयगामिउ,जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ॥१॥
जसु तणुकंतिकडप्प सिणिद्धउ,
सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ ।
नं नव जलहरतडिल्लयलंछिउ,
सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडि, हयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणतंमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइआ सिद्धा जे अ भविस्संतिणागएकाले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥
जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ ।

सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ २ ॥
नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥
विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलोहोइ ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३ ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ।
तादेव दिज्ज वोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

(फिर दोनो हाथ जोडके नीचे का सूत्र बोलना.)

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भवनिव्वेओ मग्गा,-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥ १ ॥
लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ।
सुहगुरुजोगो तव्वय,-णसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥
वारिज्जइ जइवि निया,-ण बंधणं वीयराय तुह समए ।
तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥
दुक्खखओ कम्मखओ, समाहिमरणं च वोहिलाभो अ ।
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणामकरणेणं ॥ ४ ॥
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् मुहपत्ती पडिलेहुं ? "इच्छं"

(ऐसा कहकर मुहपत्ती पडीलेहना.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारुं? "यथाशक्ति"

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पार्युं ? "तहत्ति"।

(फिर दाहिना हाथ आसन वा चरवलेपर रखके नवकार बोलना.)

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंचनमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

समाइयवयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंजुत्तो।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिआ वारा ॥ १ ॥
सामाइअंम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥

मैने सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण किया, विधिमें कोई अविधि हुई हो तो मन वचन कायाकर मिच्छा मि दुक्कडं ॥

दस मनके, दस वचनके, बारह कायाके कुल बत्तीस दोषमें जो कोई दोष लगा हो तो मन वचन कायाकर मिच्छा मि दुक्कडं।

फिर गुरु नही होवे और स्थापनाचार्य सन्मुख प्रतिक्रमण किया हो तो सवळा हाथ रखके एक नवकार गिनना, गुरु होवे तो नवकार गिननेकी जरुरियत नही है.

प्रतिक्रमणमें छींक आइ हो उसकी आलोचन करने की विधि.

पाक्षिक चउम्मासी वा संवत्सरी प्रतिक्रमण करते समय बडे अतिचार कहनेसे पहिले छींक आई हो तो इरियावहिसे लगाके प्रारंभसेही फिर से सर्व विधि करना. और जो बडे अतिचारसे लेकर बडी शांतितकमें छींक आई हो तो दुक्खखओ कम्मखओका काउस्सग्ग करते पहेले नीचे मुताबिक विधि कर लेना.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहिअं पडिक्कमामि "इच्छं" इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहिआए विराहणाए, गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसाउत्तिंग पणगदग मट्टीमक्कडा संताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिआ, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्स वा चार नवकारका काउस्सग्ग करना फिर प्रगट लोगस्स बोलना.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तियवंदियमहिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् क्षुद्रोपद्रवोड्डावणार्थं काउस्सग्गं करुं? "इच्छं" करेमि काउस्सग्गं

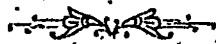
अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(सागरवर गंभीरातकका चार लोगस्सका काउस्सग करना, न आवे तो सोलह नवकार गिनने फिर काउस्सग पारकर नीचेकी स्तुति तीन दफे बोलना) :

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने।
क्षुद्रोपद्रव संघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥ १ ॥

॥ समाप्तम् ॥

॥ अथ नवस्मरणानि ॥



॥ श्रीपार्श्वनाथस्तोत्रं उवसग्गहरं ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १॥
विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्सगह-रोग-मारी,-दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झपणामो वि बहुफलो होई ।
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुःख दोगच्चं ॥ ३ ॥
ॐ अमरतरु-कामधेणु,-चिंतामणिकामकुंभमाइया ।
सिरिपासनाहसेवा-, ग्गहाण सव्वे वि दासत्तं ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ ऐँ ॐ तुहदंसणेण सामिय, पणासेइ रोग-
-सोग-दोहग्गं ।
कप्पतरुमिव जायइ, ॐ तुहदंसणेण सफल हेउं स्वाहा ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीँ नमिऊण विग्घणासय, मायाबीएण धरणनागिंदं ॥
सिरिकामराज क्लीं (कलियं), पासजिणंदं नमंसामि ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ पासविसहर, विज्जा-मंतेण झाणज्झाअव्वो ॥
धरण-पउमावइ देवी, ॐ ह्रीँ क्ष्म्ल्व्र्यु स्वाहा ॥ ७ ॥
जयउ धरणदेव, पढमहुत्ती नागिणी विज्जा ।
विमलज्झाणसहिओ, ॐ ह्रीँ क्ष्म्ल्व्र्यु स्वाहा ॥ ८ ॥
ॐ थुणामि पासं, ॐ ह्रीँ पणमामि परमभत्तिए ।
अट्ठक्खरधणिंद-, पउमावईपयडियकित्ति ॥ ९ ॥
जस्स पयकमले सया, वसइ पउमावई धरणिंदो ।
तस्स नामेण सयलं, विसहरविसं नासेइ ॥ १० ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरंठाणं ॥ ११ ॥
नट्ठट्ठमयट्ठाणं, पणट्ठकम्मट्ठनट्ठसंसारं ।

परमट्ठनिट्ठिअट्ठं, अट्ठगुणाधीसरं वंदे ॥ १२ ॥
इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण ।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ! ॥ १३ ॥
स तुहनाम सुद्धे, मंते जो नर जपंति सुद्धभावस्स ।
सो अयरामरं ठाणं, पावंति नयगयसुक्खं ॥१४॥
पनास गोपीडां, क्रुरगहदंसणभयंकाये ।
आपी न हुंति एतह वी, तसीझं गुणी जासो ॥ १५ ॥
पीडजंतं भगंदरं, खास सास सूलतह नीवाह ।
श्रीसामलपासमहंत, नाम पउर पउलेण ॥ १६ ॥
रोगजलजलणविसहर, चोरारिमइंदगयरणभयाइं ।
पासजिणनाम संकि-, त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १७ ॥
तं नमह पासनाहं, धरणिंदनमंसियं दुह पणासेइ ।
तस्स पभावेण सया, नासंति सयलदुरियाइं ॥ १८ ॥
ए ए समरंताणं मुणिं, न दुह वाहि नासमाहिदुक्खं ।
नासं सियमं असमं, पयडो नात्थिथ्थ संदेहो ॥ १९ ॥
जलजलण तहप्पसीहो, मारारी संभवेपि खिप्पं ।
जो समरेइ पास पहु, पहो वि नकया वि किंचितस्स ॥२०॥
इहलोगट्ठि परलोगट्ठि जो समरेइ पासनाहं तु ।
तत्तो सिज्झेइ न कोसंइ, नाह सुराभगवंतं ॥ २१ ॥
इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्रं उवसग्गहरं संपूर्णं ॥

अथ तिजयपहुत्त

तिजयपहुत्तपयासय,-अट्ठ महापाडिहेरजुत्ताणं ।
समयक्खित्तट्ठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥ १ ॥
पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो ।
नासेउ सयलदुरिअं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥
वीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ।
गहभूअरक्खसाइणि,- घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥

सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो ।
वाहिजलजलणहरि करि,-चोरारिमहाभयं हरउ ॥ ४ ॥
पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा ।
रक्खंतु मे सरीरं देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥
ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह चेव सरसुंसः ।
आलिहियनामगब्भं, चक्कं किर सव्वओभद्दं ॥ ६ ॥
ॐ रोहिणि पन्नत्ति, वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ ।
चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥
गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तहय अच्छुत्ता ।
माणसि महमाणसिआ, विज्झादेवीओ रक्खंतु ॥ ८ ॥
पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ।
विविहरयणाइवन्नो - वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ९ ॥
चउतीसअइसयजुआ, अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा ।
तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥ १० ॥
ॐ वरकणयसंखविद्रुम,-मरगयघणसन्निहंविगयमोहं ।
सत्तरीसयं जिणाणं सव्वामरपूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥
ॐ भवणवइवाणवंतर,-जोइसवासी विमाणवासी अ ।
जे के वि दुट्ठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥
चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ।
एगंतराइगहभूअ, साइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥
इअ सत्तरिसयजंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं ।
दुरिआरिविजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥

इति तिजयपहुत्त

अथ नमिऊण

नमिऊण पणयसुरगण,-चूडामणि किरणरंजिअं मुणिणो ।
चलणजुअलं महाभय,-पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥
सडियकरचरणनहमुह, निबुड्डनासा विवन्नलायन्ना ।
कुट्ठमहारोगानल,-फुलिंग निद्दड्डसव्वंगा ॥ २ ॥
ते तुह चलणाराहण,-सलिलंजलिसेयवुड्ढिय(उ)च्छाया ॥

चणदवदड्ढा गिरिपा, यव व्व पत्ता पुणो लच्छि ॥ ३ ॥
दुव्वायखुभिय जलनिहि, उब्भडकल्लोलभीसणारावे ।
संभंतभयविसंठुल,-निज्जामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥
अविदालिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ।
पासजिणचलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥
खरपवणुद्धुअवणदव, जालावलि मिलियसयल दुमगहणे।
डज्झंत मुद्धमयवहु,-भीसणरवभीसणंमि वणे ॥ ६ ॥
जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअसयलतिहुअणाभोअं ।
जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥
विलसंतभोगभीसणफुरिआरुण, नयणतरलजीहालं ।
उग्गभुअंगं नवजल य,-सत्थहं भीसणायारं ॥ ८ ॥
मन्नंति कीडसरिसं, दूरपरिच्छूढविसमविसवेगा ।
तुह नामक्खरफुडसि, द्धमंतगुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥
अडवीसु भिल्लतक्कर,-पुलिंदसद्दूलसद्दभीमासु ।
भयविहुरवुन्नकायर,-उल्लूरियपहियसत्थासु ॥ १० ॥
अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाममत्तवावारा ।
ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हियइच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥
पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ।
नहकुलिसघायविअलिअ,-गइंद कुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥
पणयससंभमपत्थिव, नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स ।
तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुद्धं पि न गणंति ॥ १३ ॥
ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लालवुड्ढिउच्छाहं ।
महुपिंगनयणजुअलं, ससलिल-नवजलहरारावं ॥ १४ ॥
भीमं महागइंदं, अच्चासण्णं पि ते न विगणंति ।
जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥
समरम्मि तिक्खखग्गा,-भिग्घायपविद्धउद्धुयकबंधे ।
कुंतविणिभिन्नकरिकलह,-मुक्कसिक्कारपउरंमि ॥ १६ ॥
निज्जियदप्पुद्धररिउ,-नरिंदनिवहा भडा जसं धवलं ।

पावंति पावपसमिणं, पासजिण! तुहप्पभावेण॥ १७ ॥
रोगजलजलणविसहर,-चोरारिमइंदगयरणभयाइं।
पासजिणनामसंकि,-त्तणेण पसमंतिसव्वाइं॥ १८ ॥
एवं महाभयहरं, पासजिणंदस्स संथवमुआरं।
भवियजणाणंदयरं, कल्लाणपरंपरनिहाणं॥ १९॥
रायभयजक्खरक्खस,-कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु।
संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु॥२०॥
जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स।
पासो पावं पसमेउ, सयल भुवणच्चियचलणो॥ २१ ॥
उवसग्गंते कमठा,-सुरम्मि झाणाओ जो न संचलिओ।
सुरनरकिन्नरजुवइहिं, संथुओ जयउ पासजिणो॥ २२ ॥
एअस्स मज्झयारे, अट्ठारस अक्खरेहिं जो मंतो।
जो जाणइ सो झायइ, परमपयत्थं फुडं पासं॥ २३ ॥
पासह समरण जो कुणइ, संतुट्ठे हियएण।
अट्ठुत्तरसयवाहिभयं, नासइ तस्स दूरेण॥ २४ ॥
॥ इति भयहरस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

अथ श्रीभक्तामरस्मरण.

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा,-
मुद्योतकं दलितपापतमो वितानम्॥
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा,-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्॥ १ ॥
यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा,-
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥ २ ॥
बुध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठः
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम्॥

वालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब,-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥
वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरोःप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥
सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥
अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम् ॥
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥
त्वत्संस्तवेन भवसंततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥
मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद,-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ॥
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥
आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त दोष,
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ॥
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥
नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत ! नाथ !,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ॥
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,

भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥
दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥
यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवःपृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥
वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ॥
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥
संपूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप,-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ॥
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥
चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि,-
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥
निर्धूम वर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥
नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ॥
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥ १८ ॥
किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ! ॥
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥
ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥
तेजः स्फुरन्मणिषु याति तथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥
मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥
स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥
त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,-
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पंथाः ॥ २३ ॥
त्वमव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ॥
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,

त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात् ॥
धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥
तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥
को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै,-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! ॥
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥
उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख -
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ॥
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥
सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥
कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ॥
उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधार,-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥
छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त,-
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ॥
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥
उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ति,-
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाऽभिरामौ ॥

पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥
इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥
श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल,-
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥
भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त,-
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ॥
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥
कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिङ्गम् ॥
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥
रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ॥
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क,-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥
वल्गत्तुरङ्गगजगर्जितभीमनाद,-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ॥
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥
कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह,-
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा,-

स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥
अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र,-
पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा,-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥
उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ॥
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥
आपादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः ॥
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥ ४२ ॥
मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि,-
सङ्ग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ॥
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥
स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं,
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥
इति श्रीभक्तामरनामक स्तोत्रं सम्पूर्णम्

———

अथ श्रीकल्याणमंदिर स्तोत्रम्.

वसन्ततिलकावृत्तम्

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु-,

पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥
यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-,
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥ युग्मम् ॥
सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-,
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥
मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्,
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ? ॥ ४ ॥
अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः ? ॥ ५ ॥
ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ? ।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥
आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥
हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः ॥
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग,-
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !,
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥
त्वं तारको जिन ! कथं ? भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ॥
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥
यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥
स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना,-
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ? ॥
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥
क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वत कथं किल कर्मचौराः ? ॥
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥
त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप,-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे ॥
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य,-
दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥
ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ॥
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥
अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,

भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ?॥
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥
आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्धया,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ॥
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥
त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ॥
किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो,
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥
धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा,-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ?॥ १९ ॥
चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ? ॥
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !
गच्छन्ति नूनमध एव हि बंधनानि ॥ २० ॥
स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ॥
पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥
स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ॥
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥
श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ॥

आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै,-
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥
उद्गच्छता तव शितिद्युति मण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ॥
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥
भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन,-
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ॥
एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥
उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र,-
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥
स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन,
कान्ति प्रतापयशसामिव सञ्चयेन ॥
माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥
दिव्यस्रजो जिन ! नमत्त्रिदशाधिपाना,-
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् ॥
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥
त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि,
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥
युक्तं हि पार्थिव निपस्य सतस्तवेव
चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥
विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं,
किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ! ॥
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,

ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥
प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषा,–
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ॥
छायापि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमी भिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥
यद्गर्ज्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं,
भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्य ॥ ३२ ॥
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड,–
प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ॥
प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्या भवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥
धन्यास्त एव भुवनाधिप ! येत्रिसन्ध्य,–
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः,
पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥
अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !
मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥
जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ॥
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥
नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ॥
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ? ॥ ३७ ॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ॥
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥
त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !
कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ! ॥
भक्त्या न ते मयि महेश ! दयां विधाय,
दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥
निःसङ्ख्यसारशरणं शरणं शरण्य,
मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥
देवेंद्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !
संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ॥
त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ! ॥ ४१ ॥
यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्ततिसञ्चितायाः ॥
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥
इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !
सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ॥
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्षाः
ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥
जननयनकुमुदचन्द्र ! प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ॥
ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥
युग्मम् ॥ ४४ ॥

इति श्रीकल्याणमन्दिरनामकं स्मरणम् ॥

जय तिहुअण स्तोत्र.



जय तिहुअणवरकप्परुक्ख जय जिणधन्नंतरि,
जय तिहुअणकल्लाणकोस दुरिअक्करिकेसरि ।
तिहुअणजणअविलंघिआण भुवणत्तयसामिअ,
कुणसु सुहाइ जिणेस पास थंभणय पुरट्ठिअ ॥ १ ॥
तइ समरंत लहंति झत्ति वरपुत्तकलत्तइ,
धण्णसुवण्णहिरण्णपुण्ण जण भुञ्जइ रज्जइ ।
पिक्खइ मुक्ख असंख सुक्ख तुह पास पसाइण,
इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख सुक्खइ कुण मह जिण ॥२॥
जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण
चक्खुक्खीण खयेण खुण्ण नर सल्लिय सूलिण ।
तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव,
जय धन्नंतरि पास महवि तुह रोग हरो भव ॥ ३ ॥
विज्जाजोइस मंततंतसिद्धिउ अपयत्तिण,
भुवणऽब्भुउ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण ।
तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ,
तं तिहुअणकल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥
खुद्द पउत्तइ मंत तंत जंताइ विसुत्तइ,
चरथिरगरल गुहुग्गखग्ग रिउवग्ग विगंजइ ।
दुत्थियसत्थ अणत्थघत्थ नित्थारइ दयकरि,
दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियक्करिकेसरि ॥ ५ ॥
तुह आणा थंभेइ भीमदप्पुद्धुरसुरवर-,
रक्खस जक्ख फणिंदविंद चोरानल जलहर ।
जलथरचारि रउद्द खुद्द पसुजोइणिजोइय,
इय तिहुअण अविलंघिआण जय पास सुसामिय ॥६॥
पत्थिअ अत्थ अणत्थतत्थ भत्तिब्भरनिब्भर,
रोम चंचिअ चारुकाय किन्नरनरसुरवर ।

जसु सेवहि कमकमलजुयल पक्खालियकलिमलु,
सो भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउवलु ॥ ७ ॥
जय जोइय मण कमलभसल भयपंजरकुंजर ।
तिहुअणजण आणंदचंद भुवणत्तयदिणयर ।
जय मइ मेइणिवारिवाह जयजंतुपयामह,
थंभणयट्ठिय पासनाह नाहत्तण कुण मह ॥ ८ ॥
बहुविह वन्नु अवन्नु सुन्नुवन्निउ छप्पन्निहिं,
मुक्खधम्मकामत्थकाम नर नियनियसत्थिहिं ।
जं ज्झायहि बहु दरिसणत्थ बहुनाम पसिद्धउ,
सो जोइयमणकमलभसल सुहु पास पवद्धउ ॥ ९ ॥
भयविब्भल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय,
तरलिय नयण विसुण्ण सुण्ण गग्गर गिर करुणय ।
तइ सहसत्ति सरंत हुंति नर नासिअ गुरुदर,
मह विज्झवि सज्झसइ पास भयपंजरकुंजर ॥ १० ॥
पइंपासिविअसतनित्तपत्तंतपविත्तिय,-
बाहपवाहपवूढरूढदुहदाह सुपुलइय ॥
मन्नइमन्नुसउन्नुपुन्नुअप्पाणं सुरनर,
इय तिहुअणआणंदचंद जयपासजिणेसर ॥ ११ ॥
तुहकल्लाणमहेसु घंटटंकारव पिल्लिय,
वल्लिरमल्ल महल्लभत्ति सुरवरगंजुल्लिअ ॥
हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति भुवणेवि महूसव,
इय तिहुअणआणंदचंदजयपास सुहुब्भव ॥ १२ ॥
निम्मलकेवलकिरणनियरविहुरिअतमपहयर,
दंसिअ सयलपयत्थसत्थवित्थरिअपहाभर ॥
कलिकलुसिअजणघूअलोयलोयणह अगोयर,
तिमिरइ निरु हर पासनाहभुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥
तुह समरणजलवरिससित्त माणवमइमेइणि,
अवरावरसुहुमत्थवोहकंदलदलरेहाणि ॥
जायइ फलभरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम,

इय मइमेइणिवारिवाह दिस पास मई मम ॥ १४ ॥
कय अविकलकल्लाणवल्लि उल्लुरिय दुहवणु,
दाविअ सग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगम वारणु ॥
जय जंतुहजणएणतुल्लजं जणि यहियावहु,
रम्मु धम्मु सो जयउ पास जय जंतुपिआमहु ॥ १५ ॥
भुवणारण निवास दरिअ परदसणदेवय,
जोइणिपूअणाखेत्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥
तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु अविसंठुलचिठहि;
इयतिहुअण वणसींहपास पावाइ पणासहि ॥ १६ ॥
फणिफणफारफुरंतरयणकररंजिअनहयल,
फलिणीकंदलदलतमालनिल्लु प्पलसामल ॥
कमठासुरउवसग्गवग्गसंसग्गअंगजिअ,
जय पच्चक्खजिणेस पास थंभणयपुरट्ठिअ ॥ १७ ॥
महमणुतरलपमाणनेय वायावि विसंठुलु,
नियतणुवि अविणयसहाव आलसविहऽलंथलु ॥
तुहमाहप्पुपमाणुदेव कारुण्ण पवित्तउ,
इयमहमाअवहीरपासपालाहिविलवंतउ ॥ १८ ॥
किंकि कप्पिउणयकलुण किंकि वनजंपिउ,
किं वन चिट्ठिउकिट्ठदेवदीणयमऽविलंबिउ ॥
कासुनाकियनिप्फल्लुलल्लिअत्थेहिदुहात्तई,
तहविनपत्त उताण किं पि पई पहु परिचात्तिई ॥ १९ ॥
तुहुं सामिहु तुहुं मायं बप्पु तुहुं मित्तपियंकरु,
तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिजी ताणु तुहुं गुरु खेमंकरु ॥
हउं दुहभरभारिअवराउ राउलनिब्भुग्गह,
लीणउ तुह कमकमल सरणुजिणपालहि चंगह ॥ २० ॥
पइ किविकयनीरोयलोयाकिवि पावियसुहसय,
किविमइं मंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय
किवि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूयल,
मइ अवहीरहि केणपाससरणागयवच्छल ॥ २१ ॥

पच्चुवयार निरी हनाहनिप्पणपयोअण,
तुहुं जिणपासपरोवयार करुणिक्कपरायण,
सतु मित्त समचित्त विती नय निंदय समसण
माअवहीरिअजुग्गउविमइ पासनिरंजण ॥ २१ ॥
हउं बहु विहदुहतत्तगत्तुतुहुं दुहनासणपरु,
हउं सुयण इकरुणिकठाणु तुहुं निरुकरुणाकरु ॥
हउं जिणपास अ सामिसालुतुहुं तिहुअणसामि अ,
जं अवहीरहि मइ झखन्तइयपासन सोहिअ ॥ २३ ॥
जुग्गाजुग्ग विभागनाहनहुजोवहितुहसम,
भुवणुवयारसहावभाव करुणारससत्तम ॥
समविसमइं किघणुमिएइ भुविदाहुसमंतउ,
इयं दुहिवंधवपासनाह मइं पालथुणतउ ॥ २४ ॥
नयदीणह दीणयमुए विअणविकि विजुग्गय,
जं जोइविउवयारुकरइउ वयारसमुज्जय ॥
दीणहदीणु निहीणुजेणतुहनाहणचत्तउ,
तोजुग्गउअहमेव पासपालहिमइ चंगउ ॥ २५ ॥
अह अणु वि जुग्गयविसेसु कि विमणहि दीणह,
जंपासविउवयारुकरइ तुह नाहसमग्गह ॥
सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुह्मपसीयह,
किं अण्णिण तंचेव देव मामइअवहीरह ॥ २६ ॥
तुह पच्छण नहु होइ विहल जिणजाणउ किं पुण,
हउं दुक्खिय निरुसत्तचत्तदुक्कउ उस्सुयमण ॥
तं मणउ निमिसेण एउ एउविज्जइ लब्भइ,
सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥
तिहुअणसामिअ पासनाह मइ अप्पुपयासिउ,
किज्जउ जं नियरूव सरिसु नमणुंव हुंजपिउ ॥
अणु ण जिणजगितुहसमोविदक्खिणु दयासउ,
जइ अवगिन्नासि तुंहिजअहहकिहोइसहयासउ ॥ २८ ॥
जइ तुहरू विणकिणविपेअ पाइणवेलविउ,

तउजाणुंजिणपास तुह्महउंअंगीकरिउ ॥
इयमहइच्छिउ जं न होइ सातुहउहावणु,
रक्खंतह नियकित्तिणेय जुज्झइअवहरिणु ॥ २९ ॥
एहमहारिहजत्तदेवइसुन्हवणमहूसउ,
जं अणलिय गुणगहण तुह्म मुणिजणअणिसिद्धउ ॥
एम पसिअसुपासनाहथंभणयपुरठिअ इय
मुणिवरुसिरि अभयदेवु विणवइ अणिंदिअ ॥ ३० ॥
॥ इति श्रीस्तंभनकतीथराज श्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

जिनपञ्जरस्तोत्रं.



ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः ॥
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥
ॐ ह्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः ॥
ॐ ह्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः ॥
ॐ ह्रीं अर्हं गौतमप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥१॥
एष पञ्चनमस्कारः, सर्वपाप क्षयंकरः ॥
मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥
कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥
एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् ॥
मनोभिलाषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥
भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥
देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासै लंभते फलम् ॥ ५ ॥
अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षु ललाटके ॥
आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥
साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च ॥
सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥

दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥
अङ्गसन्धिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥ ८ ॥
पूर्वाशां च जिनो रक्षे,-दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥
दक्षिणाशां परब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥
पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः ॥
उत्तरां तीर्थकृत्सर्वामीशानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥
पातालं भगवानर्हं,-न्नाकाशं पुरुषोत्तमः, ॥
रोहिणीप्रमुखादेव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥
ऋषभो मस्तकं रक्षे,-दजितोऽपि विलोचनम् ॥
सम्भवः कर्णयुगले,ऽभिनन्दनस्तु नासिके ॥ १२ ॥
ओष्ठं श्रीसुमति रक्षे,-द्दन्तान्पद्मप्रभु विभुः ॥
जिव्हां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभाभिधः ॥ १३ ॥
कण्ठं श्रीसुविधि रक्षेद्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥
श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयम् ॥ १४ ॥
अङ्गुलीर्विमलो रक्षे,-दनन्तोऽसौ नखानपि ॥
श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशान्ति र्नाभिमण्डलम् ॥१५॥
श्रीकुन्थु र्गुह्यकं रक्षे,-दरोलोमकटीतटम् ॥
मल्लिरूरुपृष्ठवंशं, जङ्घे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥
पादाङ्गुलिर्नमीरक्षे,-च्छ्रीनेमि श्चरणद्वयम् ॥
श्रीपार्श्वनाथः सर्वाङ्गं, वर्धमानश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥
पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥
राजद्वारे श्मशाने च, सङ्ग्रामे शत्रुसङ्कटे ॥
व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥
अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥
अपुत्रत्वे महादुःखे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥
डाकिनी शाकिनी ग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥
नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥
प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम् ॥
तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति, लभते सुखसम्पदः ॥ २२ ॥

जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरेदनुवासर ॥
कमलप्रभ राजेन्द्र,-श्रियं स लभते नरः ॥२३॥
प्रातः समुत्थाय पठेत्कृतज्ञों,
यस्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यं ॥
आसादयेच्छ्री कमलप्रभाख्यं,
लक्ष्मी मनोवाञ्छित पूरणाय ॥ २४ ॥
श्रीरुद्रपल्लीय वरेण्यगच्छे,
देवप्रभाचार्य पदाब्जहंसः ॥
वादीन्द्रचूडामणिरेषजैनो,
जीयाद्गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥
इति श्रीकमलप्रभाचार्यविरचितं
श्रीजिनपञ्जरस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ॥



जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ॥
ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि, भव्यानां सुखहेतवे ॥ १ ॥
जन्मलग्ने च राशौ च, यदा पीडन्ति खेचराः ॥
तदा संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहिताञ्जिनान् ॥ २ ॥
पुष्पैर्गन्धैर्धूपैर्दीपैः, फलनैवेद्यसंयुतैः ॥
वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ ३ ॥
पद्मप्रभस्य मार्तण्ड, श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च ॥
वासुपूज्यो भूसुतश्च, बुधोऽप्यष्ट जिनेश्वरः ॥४॥
विमलानन्त धर्माऽराः, शान्तिः कुन्थु र्नमिस्तथा ॥
वर्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुधो न्यसेत् ॥ ५ ॥
ऋषभाजितसुपार्श्वा, श्चाभिनन्दनशीतलौ ॥
सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्च बृहस्पतिः ॥६॥
सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः ॥

नेमिनाथस्य राहुः स्यात्, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥७॥
जिनानामग्रतः कृत्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे ॥
नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ८ ॥
भद्रबाहुरुवाचेदं पञ्चमश्रुतकेवली
विद्याप्रवादतः पूर्वात् ग्रहशान्तिविधिं शुभम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतु सहिताः खेटा जिनपतिपुरतोवस्तिष्ठन्तुः मम धनधान्यजयविजयसुखसौभाग्यधृतिकीर्तिकान्तिशान्तितुष्टिपुष्टिबुद्धिलक्ष्मीधर्मार्थकामदाः स्युः स्वाहा ॥

इति ग्रहशान्ति स्तोत्रं समाप्तम्.

॥ अथ मन्त्राधिराजस्तोत्रम् ॥



श्री पार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशङ्करः ॥
नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥
सर्वविघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥
सर्व सत्व हितो योगी, श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥
देवदेवः स्वयंसिद्ध, श्चिदानन्दमयः शिवः ॥
परमात्मा परब्रह्म, परमः परमेश्वरः ॥ ३ ॥
जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषोत्तमः ॥
सुरेन्द्रो नित्य धर्मश्च, श्रीनिवासः शुभार्णवः ॥ ४ ॥
सर्वज्ञः सर्वदेवेशः सर्वदः सर्वगोत्तमः ॥
सर्वात्मा सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः ॥ ५ ॥
तत्त्वमूर्तिः परादित्यः, परब्रह्मप्रकाशकः ॥
परमेन्दुः परप्राणः, परमामृतसिद्धिदः ॥ ६ ॥
अजः सनातनः शम्भु, रीश्वरश्च सदाशिवः ॥
विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुभप्रदः ॥ ७ ॥
साकारश्च निराकारः, सकलो निष्कलोऽव्ययः ॥

निर्ममो निर्विकारश्च, निर्विकल्पो निरामयः ॥ ८ ॥
अमरश्चाजरोऽनन्त, एकोऽनन्तः शिवात्मकः ॥
अलक्ष्यश्चाप्रमेयश्च, ध्यानलक्ष्यो निरञ्जनः ॥ ९ ॥
ॐकाराकृतिरव्यक्तो, व्यक्तरूपस्त्रयीमयः ॥
ब्रह्मद्वय प्रकाशात्मा, निर्भयः परमाक्षरः ॥ १० ॥
दिव्यतेजोमयः शान्तः, परामृतमयोऽच्युतः ॥
आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी परः पुमान् ॥ ११ ॥
शुद्धस्फटिकसङ्काशः, स्वयम्भूः परमाच्युतः॥
व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकावभासकः ॥ १२ ॥
ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारूढो मनःस्थितिः ॥
मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः ॥ १३ ॥
सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभुः ॥
भगवान् सर्वतत्त्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायकः ॥ १४ ॥
इति श्री पार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः ॥
दिव्यमष्टोत्तरं नाम, शतमत्र प्रकीर्तितम् ॥ १५ ॥
पवित्रं परमं ध्येयं, परमानन्ददायकम् ॥
भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं, पठते मङ्गलप्रदम् ॥ १६ ॥
श्रीमत्परमकल्याण, सिद्धिदः श्रेयसेऽस्तुवः ॥
पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, भगवान् परमः शिवः ॥१७॥
धरणेन्द्रफणछत्रा-, लंकृतो वः श्रियं प्रभुः ॥
दद्यात्पद्मावती देव्या, समाधिष्ठितशासनः ॥ १८ ॥
ध्यायेत्कमलमध्यस्थं, श्रीपार्श्वजगदीश्वरम् ॥
ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं समायुक्तं, केवलज्ञानभास्करम् ॥१९॥
पद्मावत्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण दक्षिणे ॥
परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्र राजेन संयुतम् ॥ २० ॥
अष्टपत्रस्थितैः पञ्च, नमस्कारैस्तथा त्रिभिः ॥
ज्ञानाद्यैर्वेष्टितं नाथं, धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ २१ ॥
शतषोडशदलारूढं, विद्यादेवीभिरन्वितम् ॥
चतुर्विंशतिपत्रस्थं, जिनं मातृसमावृतम् ॥ २२ ॥

मायावेष्टय त्रयाग्रस्थं, क्रोङ्कारसहितं प्रभुम् ॥
नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालैर्दशभिर्वृतम् ॥ २३ ॥
चतुष्कोणेषु मन्त्राद्य, चतुर्बीजान्वितैर्जिनैः ॥
चतुरष्ट दशद्वीति, द्विधाङ्कसंज्ञकै र्युतम् ॥ २४ ॥
दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षुलाङ्कितेन च ॥
चतुरस्रेण वज्राङ्कक्षितितत्त्वे प्रतिष्ठितम् ॥ २५ ॥
श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः समाराधये ज्जिनम् ॥
तं सर्वपापनिर्मुक्तं, भजते श्रीः शुभप्रदा ॥ २६ ॥
जिनेशः पूजितो भक्त्या, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा ॥
ध्यातस्त्वं यैः क्षणंवापि, सिद्धस्तेषां महोदयः ॥ २७ ॥
श्रीपार्श्वयन्त्रराजान्ते, चिन्तामणिगुणास्पदम् ॥
शान्तिपुष्टिकरं नित्यं, क्षुद्रोपद्रवनाशनम् ॥ २८ ॥
ऋद्धिसिद्धिमहाबुद्धि, धृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् ॥
मृत्युञ्जयं शिवात्मानं, जपन्नानन्दितो जनः ॥ २९ ॥
सर्वकल्याणपूर्णः स्या-, ज्जरामृत्युविवर्जितः ॥
अणिमादिमहासिद्धि, लक्षजापेन चाप्नुयात् ॥ ३० ॥
प्राणायाममनोमन्त्र, योगादमृतमात्मनि ॥
त्वमात्मानं शिवं ध्यात्वा, स्वामिन् सिध्यन्ति जन्तवः ३१
हर्षदः कामदश्चेति, रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः ॥
पातु वः परमानन्द, लक्षणः संस्मृतो जिनः ॥ ३२ ॥
तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रं सर्वमङ्गलसिद्धिदम् ॥
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स श्रियम् ॥३३॥

अथ ऋषिमण्डलस्तोत्रं



आद्यन्ताक्षरसंलक्ष, -मक्षरंवाप्ययत्स्थितं ।
अग्निज्वालासमंनाद, बिन्दुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥
अग्निज्वालासमाक्रान्त, मनोमलविशोधकं ।

देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं। २॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३॥
ॐनमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्यः, ॐ सिद्धेभ्यो नमोनमः
ॐनमः सर्वसूरिभ्यः, उपाध्यायेभ्यः ॐनमः ॥ ४॥
ॐनमः सर्वसाधुभ्यः, ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः।
ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य, श्चारित्रेभ्यस्तु ॐनमः॥ ५॥
श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत,—दर्हदाद्यष्टकं शुभं।
स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग्बीजसमन्वितं ॥ ६॥
आद्यं पदं शिखाम्रक्षे, त्परंरक्षेत्तुमस्तकं।
तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्चनासिकां॥ ७॥
पञ्चमं तु मुखंरक्षेत्, षष्ठं रक्षेच्च घण्टिकां।
नाभ्यन्तसप्तमं रक्षेत्, रक्षेत्पादान्तमष्टमं ॥ ८॥
पूर्वप्रणवतः सान्त, सरेफोद्व्यब्धिपञ्चषान्।
सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्, श्रितोबिन्दुस्वरान् पृथक् ॥ ९॥
पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचातोज्ञानदर्शन।
श्चारित्रेभ्यो नमोमध्ये, ह्रीँ सान्त समलंकृतः॥ १०॥
ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रुँ ह्रूँ ह्रेँ ह्रैँ ह्रोँ ह्रौँ ह्रँः
असिआउसाज्ञानदर्शनचारित्रेभ्योनमः।
जंबूवृक्षधरोद्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः।
अर्हदाद्यष्टकैरष्ट, काष्ठाधिष्ठैरलङ्कृतः॥ ११॥
तन्मध्य संगतो मेरुः, कूटलक्षैरलङ्कृतः।
उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारामण्डलमण्डितः॥१२॥
तस्योपरिसकारान्त, बीजमध्यस्य सर्वगं।
नमामिबिम्बमार्हन्त्यं, ललाटस्थं निरञ्जनं॥ १३॥
अक्षयंनिर्मलंशान्तं, बहुलं जाड्यतोज्झितं।
निरीहं निरहङ्कारं, सारंसारतरं घनं॥ १४॥
अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्विकं राजसं मतं।
तामसं चिर संम्बुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं॥ १५॥

साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परं ।
परापरं परातीतं, परम्पर परापरं ॥ १६ ॥
एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं ।
पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥
सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रान्तिवर्जितं ।
निरञ्जनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥
ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धंमतंगुरुं ।
ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥
अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः, सरेफो विन्दुमण्डितः ।
तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधानादमालितः ॥ २० ॥
अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, ऋषभाद्याजिनोत्तमाः ।
वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्या स्तत्रसंगताः ॥ २१ ॥
नादश्चन्द्रसमाकारो, विन्दुर्नीलसमप्रभः ।
कलारुणसमासान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥
शिरः संलीन ईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ।
वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मण्डलंस्तुमः ॥ २३ ॥
चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ, नादस्थितिसमाश्रितौ ।
बिन्दुमध्यगतौ नेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥
पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ।
शिर ईस्थितिसंलीनौ, पार्श्वमल्लीजिनोत्तमौ ॥ २५ ॥
शेषा स्तीर्थंकरा सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः ।
मायाबीजाक्षरं प्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हतां ॥ २६ ॥
गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः ।
सर्वदा सर्वलोकेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु डाकिनी ॥ २८ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ॥
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु राकिनी ॥ २९ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।

तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु लाकिनी ॥ ३० ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु काकिनी ॥ ३१ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु याकिनी ॥ ३४ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु पन्नगा ॥ ३५ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु हस्तिनः ॥ ३६ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु राक्षसाः ॥ ३७ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु वन्हयः ॥ ३८ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु सिंहकाः ॥ ३९ ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु दुर्जनाः ॥ ४० ॥
देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु भूमिपाः ॥ ४१ ॥
श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः ।
ताभिरभ्युद्यतं ज्योति, रर्हं सर्वनिधीश्वराः ॥ ४२ ॥
पातालवासिनो देवा, देवा भूपीठवासिनः ।
स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥
येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधि लब्धयः ।
ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षन्तु सर्वतः ॥ ४४ ॥

दुर्जना भूतवेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा ।
ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देवदेवप्रभावतः ॥ ४५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्चधृतिर्लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती ।
जयाम्बा विजया नित्या, क्लिन्नाऽजिता मदद्रवा ॥ ४६ ॥
कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी ।
माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥४७ ॥
एताः सर्वा महादेव्यो, वर्तन्ते या जगत्त्रये ।
मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्तिं कीर्तिं धृतिं मतिम् ॥४८॥
दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्यः, श्रीऋषिमण्डलस्तवः ।
भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतोऽनघः ॥ ४९ ॥
रणे राजकुले वन्हौ, जले दुर्गे गजे हरौ ।
श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥ ५० ॥
राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निज्यं पदम् ।
लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥५१॥
भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतम् ।
वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥
स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ।
तस्यैवाष्टमहासिद्धिर्गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥
भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्ध्नि वा भुजे ।
धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीतिविनाशकम् ॥ ५४ ॥
भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः ।
वातपित्तकफोद्रेकैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥
भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठवर्तिनः शाश्वता जिनाः ।
तैः स्तुतैर्वंदितैर्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं स्मृतेः ॥ ५६ ॥
एतद्गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित् ।
मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥
आचाम्लादितपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीम् ।
अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥
शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने ।

तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः ॥ ५९ ॥
अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ।
स्तोत्रमेतन्महातेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥ ६० ॥
दृष्टे सत्यार्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवं ।
पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥ ६१ ॥
विश्ववन्द्यो भवेत् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते ।
गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥
इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ।
पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभ्यते पदमुत्तमं ॥ ६३ ॥
इति श्रीऋषिमंडलस्तोत्रं



अथ श्रीसिद्धसेनदिवाकरकृतः शक्रस्तवः ।

ॐ नमोऽर्हते परमात्मने परमज्योतिषे परमपरमेष्ठिने परमवेधसे परमयोगिने परमेश्वराय तमसः परस्तात् सदोदितादित्यवर्णाय समूलोन्मूलितानादिसकलक्लेशाय । ॐ नमो भूर्भुवः स्वस्त्रयीनाथ मौलिमन्दारमालार्चितक्रमाय सकलपुरुषार्थयोनिनिःपद्यविद्या प्रवर्तनैकवीराय नमः स्वास्ति सुधास्वाहा वषडर्थैकान्तशान्तमूर्तये भवद्भाविभूतभावावभासिने कालपाशनाशिने सत्वरजस्तमोगुणातीताय अनंतगुणाय वाङ्मनसामगोचरचरित्राय पवित्राय कारणकारणाय तारणतारणाय सात्विकदेवताय तात्विकजीविताय निर्ग्रन्थब्रह्महृदयाय योगिंद्रप्राणनाथाय त्रिभुवनभव्यकुलनित्योत्सवाय विज्ञानानंदपरब्रह्मैकात्म्यसमाधये हरिहरहिरण्यगर्भादिदेवतापरिकलितस्वरूपाय सम्यग्ध्येयाय सम्यग्श्रद्धेयाय सम्यग्शरण्याय सुसमाहितसम्यग्स्पृहणीयाय ॥ १ ॥ ॐ नमोऽर्हते भगवते आदिकराय तीर्थंकराय स्वयंसंबुद्धाय पुरुषोत्तमाय पुरुषसिंहाय पुरुषवरपुण्डरीकाय पुरुषवर-

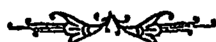
गन्धहस्तिने लोकोत्तमाय लोकनाथाय लोकहिताय लोकप्रद्योतकारिणे लोकप्रदीपाय अभयदाय दृष्टिदाय मुक्तिदाय बोधिदाय धर्मदाय जीवदाय शरणदाय धर्मदेशकाय धर्मनायकाय धर्मसार्थये धम्मवरचउरंतचक्रवर्तिने व्यावृतछद्मने अप्रतिहतसम्यग्ज्ञानदर्शनसद्मने ॥ २ ॥ ॐ नमोर्हते जिनाय जापकाय तीर्णाय तारकाय बुद्धाय बोधकाय मुक्ताय मोचकाय त्रिकालविदे पारङ्गताय कर्माष्टकनिषूदनाय आदिस्वराय शम्भवे स्वयम्भुवे जगत्प्रभवे जिनेश्वराय स्याद्वादवादिने सर्वाय सर्वज्ञाय सर्वदर्शिने सर्वतीर्थोपनिषदे सर्वपाखण्डमोचिने सर्वयज्ञफलात्मने सर्वज्ञकलात्मने सर्वयोगरहस्याय केवलिने देवाधिदेवाय वीतरागाय ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हते परमात्मने परमकारुणिकाय सुगताय तथागताय महाहंसाय हंसराजाय महासत्वाय महाशिवाय महाबोद्धाय महामैत्राय सुगताय सुनिश्चिताय विगतद्वन्द्वाय गुणाब्धये लोकनाथाय जितमारबलाय ॥ ४ ॥ ॐ नमोऽर्हते सनातनाय उत्तमश्लोकाय मुकुन्दाय गोविन्दाय विष्णवे जिष्णवे अनन्ताय अच्युताय श्रीपतये विश्वरूपाय हृषीकेशाय जगन्नाथाय भूर्भुवःस्वःसमुत्ताराय मानञ्जराय कालञ्जराय ध्रुवाय अजेयाय अजाय अचलाय अव्ययाय विभवे अचिन्त्याय असङ्ख्येयाय आदिसंख्याय आदिकेशाय आदिशिवाय महाब्रह्मणे परमशिवाय एकानेकान्तस्वरूपिणे भावाभावविवर्जिताय अस्तिनास्तिद्वयातीताय पुण्यपापविरहिताय सुखदुःखविविक्ताय व्यक्ताव्यक्तस्वरूपाय अनादिमध्यनिधनाय नमोऽस्तु मुक्तिस्वराय ॥ ५ ॥ ॐ नमोर्हते निरातङ्काय निःशङ्काय निर्भयाय निर्द्वन्द्वाय निस्तरङ्गाय निरूर्मये निरामयाय निःकलङ्काय परमदेवताय सदाशिवाय महादेवाय शङ्कराय महेश्वराय महाव्रतिने महायोगिने पञ्चमुखाय मृत्युंजयाय अष्टमूर्त्तये भूतनाथाय जगदानन्दाय जगद्धीमहाय जगद्देवाधिदेवाय जगदीश्वराय जगदादिकन्दाय जगद्भास्वते जगत्कर्मसाक्षिणे जगच्चक्षुषे त्रयीतनवे

अमृतकराय शीतकराय ज्योतिश्चक्रिणे महाज्योतिर्महातमः पारेसुप्रतिष्ठिताय स्वयंकर्त्रे स्वयंहर्त्रे स्वयंपालकाय आत्मेश्वराय नमो विश्वात्मने॥ ६ ॥ॐ नमोऽर्हते सर्वदेवमयाय सर्वध्यानमयाय सर्वज्ञानमयाय सर्वतेजोमयाय सर्वमन्त्रमयाय सर्वरहस्यमयाय सर्वभावाभावजीवाजीवेश्वराय अरहस्यरहस्याय अस्पृहस्पृहणीयाय अचिन्त्यचिन्तनीयाय अकामकामधेनवे असङ्कल्पितकल्पद्रुमाय अचिन्त्यचिन्तामणये चतुर्दशरज्ज्वात्मकजीवलोकचूडामणये चतुरशीतिजिवयोनिलक्षप्राणिनाथाय पुरुषार्थनाथाय परमार्थनाथाय अनाथनाथाय जीवनाथाय देवदानवसिद्धसेनाधिनाथाय ॥ ७ ॥ ॐ नमोर्हते निरञ्जनाय अनन्तकल्याणनिकेतनकीर्तिताय सुगृहीतनामधेयाय धीरोदात्तधीरोद्धतधीरशान्तधीरललितपुरुषोत्तमपुण्यश्लोकशतसहस्रलक्षकोटिवन्दितपादारविन्दाय सर्वगताय ॥ ८ ॥ ॐ नमोऽर्हते सर्वसमर्थाय सर्वप्रदाय सर्वहिताय सर्वाधिनाथाय कस्मैचन क्षेत्राय यात्राय तीर्थाय पावनाय पवित्राय अनुत्तराय उत्तराय योगाचार्याय सम्प्रक्षालनाय प्रवराय अग्राय वाचस्पतये माङ्गल्याय सर्वात्मनाथाय सर्वार्थाय अमृताय सदोदिताय ब्रह्मचारिणे तायिने दक्षिणीयाय निर्विकाराय वज्रऋषभनाराचमूर्तये तत्वदृश्वने पारदर्शिने निरुपमज्ञानबलवीर्यतेजःशक्तैश्वर्यमयाय आदिपुरुषाय आदिपरमेष्ठिने आदिमहेशाय महाज्योतिःसत्वाय महार्चिधनेश्वराय महामोहसंहारणे महासत्वाय महाज्ञानमहेन्द्राय महालयाय महाशान्ताय महायोगीन्द्राय अयोगिने महामहीयसे महाहंसराजाय महासिद्धाय शिवमचलमरूअमनन्तमक्षयमव्वाबाधमपुनरावृत्ति महानन्द महोदयं सर्वदुःखक्षयं कैवल्यममृतं निर्वाणमक्षरं परब्रह्म निःश्रेयसमपुनर्भवं सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तवते चराचरमवते नमोऽस्तु श्रीमहावीराय त्रिजगत्स्वामिने श्रीवर्द्धमानाय विशालशासनाय निर्विकल्पाय सर्वलब्धिसम्पन्नाय कल्प-

मातीताय कलाकलापकलिपताय ॥९॥ ॐ नमोऽर्हते केवलिने परमयोगिने विस्फुरदुरुशुक्लध्यानाग्निनिर्दग्धकर्मबीजाय प्राप्तानन्तचतुष्टयाय सौम्याय शान्ताय मङ्गलवरदाय अष्टादशदोषरहिताय संसृतविश्वसमीहिताय स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः ॥ १० ॥ लोकोत्तमोनिःप्रतिमस्त्वमेव, त्वं शाश्वतं मङ्गलमप्यधीश ! ॥ त्वामेकमर्हन् शरणं प्रपद्ये, सिद्धर्षिसद्धर्ममयास्त्वमेव ॥ १ ॥ त्वंमेवमाता पिता नेता, देवो धर्मो गुरुः परः ॥ प्राणाः स्वर्गोपवर्गश्च, सत्वं तत्वं गतिर्मतिः ॥ २ ॥ जिनो दाता जिनो भोक्ता,जिनः सर्वमिदं जगत् ॥ जिनो जगति सर्वत्र,यो जिनः सोऽहमेव च ॥ ३ ॥ यत्किंचित् कुर्महे देव ! सदा सुकृतदुःकृतं ॥ तन्मे निजपदस्थस्य, दुःखंक्षपय त्वं जिन !॥ ४ ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥ सिद्धिः श्रयति मां येन, त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितं ॥५॥ इति श्री वर्धमानजिननाममन्त्रंस्तोत्रं प्रतिष्ठायां शान्तिकाविधौ पठितो महासुखाय स्यात् ॥ इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरकृतशक्रस्तवः संपूर्णः ॥

॥ श्री ॥

अथ अनुभूतसिद्धसारस्वतस्तवः ।



अर्हम्

कलमरालविहङ्गमवाहना, सितदुकूलविभूषणलेपना ।
प्रणतभूमिरुहामृतसारिणी, प्रवरदेहविभाभरधारिणी ॥१॥
अमृतपूर्णकमण्डलुधारिणी, त्रिदशदानवमानवसेविता ।
भगवती परमेव सरस्वती, मम पुनातु सदा नयनाम्बुजम् ॥२॥
जिनपतिप्रथिताखिलवाङ्मयी, गणधराननमण्डपनर्त्तकी ।

गुरुमुखाम्बुजखेलनहंसिका, विजयते जगति श्रुतदेवता ॥३॥
अमृतदीधितिबिम्बसमानना, त्रिजगतीजननिर्मितमाननाम् ।
नवसरेमृतवीचिसरस्वतीं,प्रमुदितः प्रणमामि सरस्वतीम्॥४॥
विततकेतकपत्रविलोचने, विहितसंसृतिदुःकृतमोचने ।
धवलपक्षविहङ्गमलाञ्छिते, जयसरस्वति पूरितवाञ्छिते॥५॥
भवदनुग्रहलेशतरङ्गिता, स्तदुचितं प्रवदन्ति विपश्चितः ।
नृपसभासुयतः कमलाबला, कुचकलाललनानि वितन्वते॥६॥
गतधना अपि हि त्वदनुग्रहात्, कलितकोमलवाक्यसुधोर्मयः
चकितबालकुरङ्गविलोचना, जनमनांसि हरन्तितरां नराः॥७॥
करसरोरुहखेलनचञ्चला, तव विभाति वरा जपमालिका ।
श्रुतपयोनिधिमध्यविकस्वरो,ज्ज्वलतरङ्गकदाग्रहसाग्रहा ॥८॥
द्विरदकेसरिमारिभुजङ्गमा, सहनतस्करराजरुजांभयम् ।
तव गुणावलिगानतरङ्गिणा, न भविनां भवति श्रुतदेवते ॥९॥

विधिविधान



ॐ ह्रीं क्लीं ब्लीं ततः श्रीं तदनु हसकलह्रिमाथो ऐं नमोऽर्हन्ते
लक्षं साक्षाज्जपेद्यः करसमविधिना सत्तपा ब्रह्मचारी ॥
निर्यान्तीं चंद्रबिम्बात् कलयति मनसा त्वां जगच्चान्द्रिकाभाम् ।
सोऽत्यर्थं वह्निकुण्डे विहितघृतहुतिः स्याद्दशांशेन विद्वान् १०
रे रे लक्षणकाव्यनाटककथाचम्पूसमालोकने ।
क्वायसं वितनोषि बालिश मुधा किं नम्रवक्त्राम्बुजः ॥
भक्त्याऽऽराधय मन्त्रराजमहसा तेनानिशं भारतीं ।
येन त्वं कवितावितानसविताद्वैतप्रबुद्धायसे ॥ ११ ॥
चञ्चच्चन्द्रमुखी प्रसिद्धमहिमा स्वाच्छन्द्यराज्यप्रदा-
नायासेन सुरासुरेश्वरगणैरभ्यर्थिता भक्तिनः ॥
देवी संस्तुतवैभवा मलयजालेपाङ्गरत्नद्युतिः ।

सा मां पातु सरस्वती भगवती त्रैलोक्यसञ्जीविनी ॥ १२ ॥
स्तवमेतदनेकगुणान्वितं, पठति यो भविकः प्रमनाः प्रगे ।
स सहसा मधुरैर्वचनामृतै, र्नृपगणानपि रञ्जयति स्फुटम् ॥ १३ ॥

॥ इत्यनुभूतसिद्धसारस्वतस्तवः ॥
